राजस्थानी साहित्य परिषद, कलकत्ता

हितैषी

१ श्रीयुत सेठ अमरचंद भैरोंदान सेठिया

२ श्रीयुत सेठ चम्पालाल बांठिया

* *
*

संपादक-मंडल

मुरलीधर व्यास   अगरचंद नाहटा

दीनानाथ खत्री   नरोत्तमदास स्वामी

प्रकाशक

भंवरलाल नाहटा

राजस्थानी साहित्य परिषद

४, जगमोहन मल्लिक लेन

कलकत्ता

चारभागों का मूल्य १२)

विद्यार्थियों, अध्यापकों, महिलाओं, तथा सार्वजनिक संस्थाओंके

रियायती अग्रिम मूल्य ६)

अेक भागका मूल्य ३)

मुद्रक

न्यू राजस्थान प्रेस

७३ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

सूचनिका

श्री

नाऽयमात्मा बल-हीनेन लभ्यः

राजस्थानी

राजस्थानी भाषा, साहित्य, इतिहास और कलाकी शोध-सबंधी निबंधमाला

भाग २

चौहाण सम्राट पृथ्वीराज तृतीय का जन्म-संवत

[दशरथ शर्मा]

पृथ्वीराज तृतीय के जन्म समय के विषय में विद्वानों में कुछ मतभेद है। पृथ्वीराज रासो में संवत ११११५ में पृथ्वीराज का जन्म होना लिखा है। यदि अनन्द संवत की कल्पना को मान लिया जाय तो संवत १२०६ में पृथ्वीराज का जन्म मानना पड़ता है। अन्य विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि पृथ्वीराज का जन्म बिक्रम सवत १२१५ में हुआ था। यदि इन उक्तियों को पृथ्वीराज विजय की कसौटी पर कसा जाय तो दोनों ही निराधार सिद्ध होंगी। इस सम्बन्धमें इस काव्य के निम्नलिखित श्लोक विशेष रूप से मननीय हैं—

(१) अथ भ्रातुरपत्याभ्यां सनाथां जानता भुवम्।
जग्मे विग्रहराजेन कृतार्थेन शिवान्तिकम् ॥८।५३॥

(२) अेकाकिना हि मत्पित्रा स्थीयते त्रिदिवे कथम्।
बालस्य पृथिवीराजो मया कथमुपेक्ष्यते ॥८।७२॥

(३) [इतीवाभिषिक्तस्य [रक्षार्थं व्रतचारिणीम्।
स्थापयित्वा निजां देवीं पितृ (?)] भक्त्या दिवं ययौ ॥८।७३॥

(४) सचिवेन तेन सकलासु युक्तिषु
प्रवणेन तत्किमपि कर्म निर्ममे।
मुखपुष्करं शिशुतमस्य यत्प्रभोः
परिचुम्ब्यते स्म नवयौवनश्रिया ॥९।४४॥

(५) चकिताभेव वाडवाग्निमैत्री मकराङ्कस्थितिरं करोति भौम।
गगने न समास्ति कापि शोभेत्यधुना कुम्भमिवाश्रय प्रविष्टः ॥७।२३॥

(६) तनुजारिमिवानुनेतुकामो वसुजानां गुरुरेति मीनराशिम।
अधिरोहति मेषमैष पूषा तुरगाणामिव लेखराम्सिकाम ॥७।२४॥

(७) विहसन्निव मेषराशिनं तं वृषभं याति भयाकुशोऽकरोपि।
यपजिन्मुरिवो मयस्वभावं मिथुनं संमिदभाथि सोमसूनुः ॥७।२५॥

(८) तिमिरा॰ - ॰सम्मुपैति।
पृथिवी॰॰ यं शिलीति बुधधा धजमाम॰ ॥७।२६॥

(९) न मिरेप दीप्तिमग्निस्तपनाये कलिकाकिर्णां विहाय।
मुखमेकपदे कृतोतुमृपुनृ प पश्चाति [वपमरस्य] मैहा ॥७।२७॥

(१०) इति शुद्धिमती क्षणेत्र गम स्वयमायत्त हरिस्तमेव देम्या।
अचिराभूमविता पुरस्तदेषा क्षितिकन्मुक्तिवरामराभ्यगर्वा ॥७।२८॥

(११) इति वाद्विममाविमावसानं वसनाम्मकुरणादिदानवर्षैः।
परितः परितोष्य पार्थिवस्तं गणकामेसरमुत्सव चकार ॥७।२९॥

इनमें से प्रथम श्लोक में कवि ने बतलाया है कि पृथ्वीराज और हरिराज के उत्पन्न होने पर विग्रहराज ने समझा कि पृथ्वी सनाथ हो चुकी है। अतः वह शिव के निकट चला गया। इससे यही निर्विष्ट प्रतीत होता है कि इन दोनों भाइयों के जन्म के बाद वह अधिक दिनों तक जीवित न रहा। विग्रहराज का अन्तिम अभिलेख संवत् १२२० का और पृथ्वीराज द्वितीय का प्रथम अभिलेख संवत १२२४ का है। इसलिये संवत १२२० से संवत १२२४ के बीच में विग्रहराज की मृत्यु हुई होगी और पृथ्वीराज तृतीय का जन्म भी कहीं इसी काल के आस पास हुआ होगा।

द्वितीय और तृतीय श्लोक में पृथ्वीराज तृतीय के पिता सोमेश्वर की मृत्यु का उल्लेख है। कवि का अनुमान है कि सोमेश्वर ने विचार किया कि उसके पिता स्वर्ग में अकाकी किस प्रकार से रह सकते और बालक पृथ्वीराज की भी किस प्रकार रक्षा की जा सकती। यही सोच कर अपनी पतिव्रता पत्नी को उसकी रक्षा के लिये छोड़ कर वह स्वयं स्वर्ग चला गया। इससे स्पष्ट है कि सोमेश्वर की

मृत्यु के समय पृथ्वीराज बालक मात्र था। सोमेश्वर की मृत्यु संवत १२३४ में हुई। यही उसके अन्तिम और पृथ्वीराज के प्रथम अभिलेख का वर्ष है। यदि पृथ्वीराज का जन्म सवत १२०६ या संवत १२१५ में हुआ होता तो उसके लिये "बाल" शब्द प्रयुक्त न किया जाता।

चौथे श्लोक का निर्देश शायद इससे भी अधिक स्पष्ट है। उसके द्वारा कवि ने बतलाया है कि सचिव कदम्बवासने इतने सुचारु रूपसे कार्य किया कि "शिशुतम" पृथ्वीराज के मुखकमलका नवयौवनोचित लक्ष्मीने चुम्बन किया। यहा 'शिशुतम' शब्द ध्यान देने योग्य है। यदि पृथ्वीराज का जन्म संवत १२०६ या १२१५ में हुआ होता तो संवत १२३४ से उत्तरकालीन समय में क्या उसके लिये "शिशुतम" शब्द का प्रयोग किया जाता ?

इसके बाद भी कुछ सन्देह रहे तो वह अन्तिम सात श्लोकों से निवृत किया जा सकता है। इनमें पृथ्वीराजके गर्भलग्न का निर्देश है। उस समय मंगल मकर में, शनि कुम्भ मे, शुक्र मीन में, सूर्य मेष मे, चंद्रमा वृष में, और बुध मिथुन राशि में था। अेक श्लोकके खण्डित होने के कारण अन्य ग्रहों की स्थिति स्पष्ट नहीं है। किन्तु ६ वां श्लोक इस बात का द्योतक है कि उस समय पांच ग्रह उच्चावस्था में वर्तमान थे। साथ ही खण्डित श्लोक की टीका से यह ज्ञात है कि दो ग्रह स्वगृहस्थ थे। अत बृहस्पति संभवत. कर्क राशि में वर्तमान था।

मैंने स्वयं कुछ गणित करने के प्रयत्न के बाद यह लग्न अपने मित्र, उज्जैन के सूबा श्री बी० के० चतुर्वेदी के सम्मुख रखा। उनका एव उज्जैनके प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पडित सूर्यनारायण का मत है कि यह ग्रह स्थिति सवत १२२२ में वर्तमान थी। अतः यह निश्चित है कि पृथ्वीराज का जन्म संवत १२२३ मे हुआ। कवि ने पृथ्वीराज का जन्म लग्न नहीं दिया है। बहुत संभव है कि उस समय ग्रह स्थिति इतनी श्रेष्ठ न रही हो।

वर्षा-संबंधी कहावतें

[सरस्वतीकुमार]

(१) महीने

१ कार्तिक

दीवाँ वीती पंचमी मूळ नखत्तर होय
खप्पर हाथां जग भ्रमै भीख न घालै कोय १

कातिग सुद अेकादसी बादळ विजळी होय
तो असाढ में भड्डळी। वरखा चोखी जोय २

२ मार्गशीर्ष

मिगसर वद आठम घटा बीज समेती जोय
तो सावण वरसै भलो साख सवायी होय ३

३ पौष

पोस अंधारी सत्तमी विन जळ बादळ जोय
सावण सुद पूनम दिवस अवसैं वरखा होय ४

[नो०—जहां अर्थ संदिग्ध है वहां शब्द के नीचे रेखा खींच दी गयी है]

१ दीवाली बीतने पर जो पंचमी आती है उस दिन, अर्थात काती सुदि पंचमीको, यदि मूल नक्षत्र हो तो दुनिया हाथमें खप्पर लिये भटकेगी पर कोई भीख नहीं डालेगा (अर्थात भयंकर अकाल पड़ेगा)।

२ कातिक सुदी अेकादशीको यदि बादल और बिजली हों तो, हे भड्डली, आषाढमें अच्छी वर्षा होगी।

३ मिगसर वदि अष्टमीको यदि बिजलीके सहित घटा देखो तो सावन खूब बरसेगा और फसल सवायी होगी।

४ पौष वदि सप्तमी यदि बिना बादल और पानीके हो तो सावन सुदी पूनोंके दिन अवश्य वर्षा होगी।

पोस अंधारी सत्तमी जो नहिं बरसै मेह
तो आदरा बरसै सही जळ-थळ अेक करेह ५

पोस अंधारी सत्तमी जो घण नह बरस
तो आद्रामें मह्ळी। जळ-थळ अेक करै ६

पोस वदी दसमी दिवस बादळ चमकै बीज
तो बरसै भर भादवै साय अनोखी तीज ७

४ माघ

माह अंधारी सत्तमी मेह बीजळी संग
च्यार मास बरसै सही प्रजा करै मन रंग ८

माह अमावस रातदिन मेघ पवन घण छाय
धरतीमें आणंद हुवै समत चोखो थाय ९

माह न पड़वा ऊजळो बादळ वाय न छाय
तेल घीव अर दूध सब दिन दिन मूंघा थाय १०

---

५ पौष वदी सप्तमीको यदि मेह न बरसे तो आर्द्रा नक्षत्रमें अवश्य होगी जो जल थल सबको ओकाकार कर देगी।

६ पौष वदी सप्तमीको जो बादल न बरसे तो वे महुमी आर्द्रा में जल और स्थलको अेक कर देगा।

७ पौष वदी दसमी के दिन यदि बादलोंमें बिजली चमके तो भादों भर वर्षा होगी और तीजोंका त्योहार (भादोंमें होनेवाला तीज और चौथका त्योहार) अनोखा होगा।

८ माह वदी सप्तमीको यदि बिजलीके साथ बादल हों तो (आगे चलकर) चौमासे भर अवश्य वर्षा होगी और प्रजा नये-नये आनंद करेगी।

९ माह की अमावसको रात और दिनके समय यदि बादल खूब छावें और खूब पवन हो तो धरती पर आनंद होगा संवत (वर्ष) अच्छा होगा।

१० माह सुदी प्रतिपदाको यदि बादल और पवन हों तो तेल, घी और दूध ये सब दिनोंदिन महंगे होंगे।

माह उज्याळी तीजनै बादळ बिजळी देख
गेहू जन्न सचै करौ मूंघा होसी मेख ११

माह उज्याळी चौथनै मेह बादळा जाण
पान और नारेळ अै मूघा अवस बखाण १२

माह पंचमी ऊजळी बाजै उत्तर वाय
तो जाणीजै भादवो निरजळ कोरो जाय १३

माह सुदी जा सत्तमी सूरज निरमळ होय
डक्क कहै, सुण भड्डळी। जळ विण प्रिथमी जोय १४

माह सुदी जा सत्तमी बीज मेघ हिम होय
च्यार महीना बरसमी सोच करा मत कोय १५

माह सत्तमी ऊजळी बादळ मेह करत
तो आसाढां, भड्डळी, मेह घणो वरसंत १६

---

११ माह सुदी तृतीयाको यदि बादल और बिजली देखो तो गेहू और जौ का संग्रह कर रखो, ये निश्चय ही महगे होंगे, (मेख=निश्चय ही ?, मेष राशि में ?)

१२ माह सुदी चौथको यदि बादल और वर्षा हो तो कहना चाहिअे कि पान और नारियल ये अवश्य महगे होंगे।

१३ माघ सुदी पचमीको यदि उत्तर की हवा चले तो जान लेना चाहिअे कि भादों पानी (वर्षा) के बिना, खाली, जायगा।

१४ यदि माघ सुदी सप्तमी हो और सूर्य निर्मल हो (बादल न हों) तो, हे भड्डली, पृथ्वीको बिना पानी देख लेना (अर्थात वर्षा नहीं होगी)।

१५ माघ सुदी सप्तमीको यदि बिजली, बादल और पाळा हो तो चौमासे भर बरसेगा, कोई चिन्ता मत करो।

१६ माघ सुदी सप्तमीको यदि बादल वर्षा करें तो हे भड्डळी, आषाढ़ में खूब मेह बरसेगा।

माघ मास जो पड़ै न सीत
मेहा नहीं जागियै, मीत २३

५ फाल्गुन

फागण वद दुतिया दिवस वादळ होय स-वीज
वरसै सावण—भादवो चगी होवै तीज २४

फागण सुदकी सत्तमी वरसा मे' घण छाय
पांचम-नम आसोज सुद जळ थळ अेक कराय २५

होळी सुक्र-सनीचरी मंगळवारी होय
चाक चहोड़ै मेदनी विरळा जीवै कोय २६

रवि मंगळ सनि होळी आवै।
डक्क कहै मोहि फागण भावै
उळकापात करै भुवि सारी
घर-घर वार रोय नर-नारी २७

---

२३ माघ महीनेमें यदि सर्दी न पड़े तो, हे मित्र, वर्षा मत जानो (चौमासेमें वर्षा नहीं होगी)।

२४ फागुन वदि द्वितीयाके दिन यदि बिजलीके साथ बादल हों तो सावन और भादों (दोनों) बरसेंगे और तीजका त्यौहार अच्छा होगा (खूब मनाया जायगा)।

२५ फागुन सुदी सप्तमीको यदि बादल खूब छावें, या वर्षा हो तो आश्विन सुदि पचमी या नवमी को (इतना पानी बरसेगा कि) जल-थल सबको अेक कर देगा।

२६ होली यदि शुक्र, शनि या मगलवार की हो तो पृथ्वी चक्र पर चढ जायगी (पृथ्वीकी जनता भटकती फिरेगी ?) कोई बिरले ही जीते रहेंगे।

२७ डाक कहता है कि मुझे फागुन अच्छा लगता है, यदि फागुन की होली रवि, मंगल या शनिवार को आवे तो सारी पृथ्वी पर उल्कापात करे और घर-घरमें नर-नारिया रोवें।

६ चैत

चैत अमावस जे घड़ी   बरती पत्रा मांय
देखा सेरी, चतर नर!   कातिग धान बिकाय २८

चैती पूनम होय जो   सोम बुध्ध गुरुवार
घर-घर होय बधावणा   घर घर मंगळचार २९

चैती पूनम चित कर   जोसी दूहां जोय
सनी अदीतां मंगळी   करसण करै न कोय ३०

नव दिन कहिजै नौरता   सुकल चैतके मास
जळ छूटै बिजळी हुवै   जाणो गरभ विनास ३१

मेह पड़यां चैत
तो जेवीड़र ना खेत ३२

७ बैसाख

बैसाखां बद, प्रतपदा   नवमी निरखी जोय
जो मन पीळै उनमणा   बरसै वगळा जोय ३३

---

२८ चैतकी अमावस पचांग में जितनी घड़ी रही है चतुर नर, कातिकमें उतने ... सेर अनाज बिकेगा।

२९ चैतकी पूर्णो यदि सोम बुध या गुरुवारको हो तो घर-घरमें बधावा हों औ... घर-घरमें मगलचार हो

३० हे जोशी चैत की पूर्णो की ओर ध्यान दो अच्छी तरह देखो, यदि वह शनि... रवि या मंगलवारको हो तो कोई खेती न करे।

३१ चैतके मासमें शुक्ल पक्षके नौ दिन जो नौरते (नौरात्र) कहलाते हैं, उन दिनों... यदि पानी बरसे और बिजली हो तो समझ लो कि वर्षा के गर्भ नाश हो ग... (गर्भ अधूरा गल गया—आगे वर्षा नहीं होगी)।

३२ यदि चैतमें पानी पड़ गया तो न तो किसान है न खेत।

३३ बैसाख बदी प्रतिपदा और नवमीको देखो इन दिनोंको यदि उमड़े हुमे दिखाई... बादल दिखायी दें तो सारे लोक में वर्षा होगी।

वद वैसाख अमावसी रेवति होय सुगाळ
मध्यम होवै असिवनी भरणी करै दुकाळ ३४

सुद वैसाखां प्रथम दिन वादळ-वीज करै
दामां विना विसायजे पूरी साख भरै ३५

अखैतीजके तिथ दिनां गुरु रोहण-सजुत्त
भद्दबाहु गुरु कहत है निपजै नाज वहुत्त ३६

आखातीज दूज की रैण
जाय अचानक जाचै सैण
कछुक चीज मागी नट जाय
तो जाणीजै काळ सुभाय
हँसकर देय, नटै नहि कोय
माघा, सही जमानो होय ३७

---

३४ वैसाख वदी अमावसको यदि रेवती नक्षत्र हो तो सुकाल (सुभिक्ष) हो, अश्विनी हो तो मध्यम हो, और भरणी हो तो दुर्भिक्ष करे।

३५ वैसाख सुदी प्रतिपदा के दिन यदि विजली और वादल हों तो विना दामोंके खरीदो पूरी फसल होगी (वर्षा अच्छी होगी और असी फसल होगी कि सारा कर्ज चुक जायगा।

३६ अक्षयतृतीयाकी तिथि के दिन यदि वृहस्पति रोहिणी नक्षत्र से सयुक्त हो तो, भद्रबाहु गुरु कहते हैं कि, बहुत अनाज पैदा होगा।

३७ आखतीज पर्वको द्वितीयाकी रातको अचानक जाकर किसी स्वजन-मित्र से (कोई चीज) मागे। यदि मागने पर वह इनकार कर जाय तो अकालके लक्षण समझो। पर यदि हँसकर दे, इनकार न करे तो, हे माघजी, अवश्य सुकाल हो।

आखातीजां परवा वाजै
तो असलेसा गहरी गाजै
भीजै राजा, राणी भूजै
रोग दोख में परजा भूजै ३८

चन्द्र छोड़ै हिरणी
जोग छोड़ै परणी ३९

आखातीजां पीठ दे बादळ आडै मोड़ी
जो बळती दिन पांच-सात तो साख नीपजै थोड़ी ४०

आखातीजां मास अेक दे बादळ आडै काळी
भर भादरवै गाजसी मेघ-घटा मतवाळी ४१

आखातीजां रात नै जो नहिं बोलै स्याळ
अन्न पाणी बिन मानखो मोटो पड़ै दुकाळ ४२

---

३८ अक्षयतृतीयाको यदि पुरवा हवा चले तो अश्लेषा नक्षत्रमें बादल खूब गरजेंगे (खूब वर्षा होगी)। राजा भीगेंगे रानियां भूनेंगी। और प्रजा रोग-दोषमें भूनेगी (अर्थात् रोग बहुत होंगे)।

३९ अक्षयतृतीयाके दिन यदि चन्द्रमा मृगशिरा नक्षत्र को छोड़ जाय (उससे पहले अस्त हो जाय) तो (ऐसा समझना चाहिये कि) लोग विवाहिता स्त्री तकको छोड़ दें।

४ अक्षयतृतीयाके अेक महीनेके बाद यदि काली-पीली आंधी आवे तो भादों भर मेघों की घटा मतवाली होकर गरजेगी।

४१ अक्षयतृतीयाके बाद यदि आंधी देरसे आवे तो सुभिक्ष होगा पर यदि शीघ्र पांच-सात दिन में ही आ जावे तो फसल थोड़ी पैदा होगी।

४२ अक्षयतृतीयाकी रातको यदि सियार न बोलें तो मनुष्य अन्न और पानी बिना रोयेंगे और मोटा दुष्काल पड़ेगा। यदि सियार पूरब या उत्तर की ओर बोलें तो

पूरब उत्तर बोलतां समयो भलो कहंत
पिच्छमं कहिजै करवरो दिखण काळ महंत ४३

चहु दिस अेक टहूकडो वरख बडो विकराळ
कोइक जावै माळवै कोइक सिंधा पार ४४

वैसाखा पूनम दिवस मेहारंभ करै
धान सुहंगो भादवै भडळी। वैण धरै ४५

वैसाखां जो घण करै पाच वरण आकास
तो जाणेवो भड्डळी, पुहमी नीर निवास ४६

८ ज्येष्ठ

जेठ घराहड जो करै सावण सलिल न होय
ज्यू सावण त्यू भादवो नीर निवांणां जोय ४७

जेठ वदी दसमी दिवस जे सनि-वासर होय
पाणी होय न धरण में विरळा जीवै कोय ४८

अच्छा जमाना कहते हैं, पश्चिममें बोलें तो जमाना साधारण कहा जाता है, और दक्षिणमें बोलें तो बड़ा भारी अकाल। यदि चारों दिशाओंमे सियार बोलें और अेक ही आवाज करें तो वर्षा बड़ा भयकर हो, कोई मालवे जाय और कोई सिंधके पार।

४५ वैसाख सुदी पूर्णिमाके दिन यदि मेह आरभ करे तो, हे भड्डली, बात सुन, भादोंमें धान सस्ता होगा।

४६ वैसाख में यदि आकाशमें पचरगे बादल हों तो, हे भड्डली, पृथ्वी पर पानीका निवास जान लो।

४७ जेठमें यदि बादल खूब गड़गड़ावें तो सावनमें पानी नहीं बरसेगा। जैसे सावनमें वैसे ही भादोंमें भी पानी केवल नीचे स्थानोंमें ही देखनेको मिलेगा।

४८ जेठ बदी दसमीके दिन यदि शनिवार हो तो पृथ्वी पर पानी नहीं बरसेगा, और कोई बिरले ही जीवित रहेंगे।

जेठ मास में गाजियो जे उजियाळे पाख
गरम गळूपा से पाछळा जोसी बोलै साख ४९

जेठ उज्याळे पाख में आद्रादिक दस रिक्ख
सजळ होय निर्जळ कहो निर्जळ सजळ प्रतक्ख ५०

जेठ उज्याळी तीज दिन आद्रा रिख बरसंत
जोसी भाखै, भड्डली। दुरभिख अवस करंत ५१

च्यार ज पाया मूळ का तपै जेठ के मास
च्यार पास में जाणियै अत घण पावस आस ५२

२ आषाढ़

जेठ बीत्यां पैल पड़वा जे अंबर गरजै
आसाढ-सावण काढ कोरो भादवै बरखा करै ५३

जेठ मासमें शुक्लपक्षमें यदि बादल गरजे तो जोषी साखी भरता है कि, पिछले सब गर्भ गल गये (पानी नहीं बरसेगा)।

जेठके शुक्लपक्षमें आर्द्रा आदि दस नक्षत्रोंमें यदि पानी बरसे तो वर्षा नहीं होगी और यदि पानी न बरसे तो प्रत्यक्ष ही वर्षा होगी।

जेठ सुदी तृतीयाके दिन यदि आर्द्रा नक्षत्र हो और पानी बरसे तो जोषी कहता है कि हे भड्डली अवश्य ही दुर्भिक्ष करे।

जेठके महीनेमें मूल नक्षत्र के चारों पाये (जब चन्द्रमा मूल नक्षत्र में हो) यदि खूब तपें (उन दिनों खूब गर्मी पड़े) तो चार पखवाड़ोंके भीतर ही खूब वर्षा की आशा समझो।

जेठ बीतनेके बाद को पहली प्रतिपदा पड़े उस दिन (अर्थात आषाढ़ बदी प्रतिपदाको यदि आकाश गरजे तो आसाढ़ और सावन दोनों को खाली निकाल कर भादों में वर्षा करे।

पैली पड़्वा गाजै
तो दिन बहोत्तर वाजै ५४

धुर असाढ पड्वा दिव्स जे अवर गरजंत
छत्री-छत्री जूझवै निहचै काळ पडंत ५५

धुर असाढ दुतिया दिव्स चमक निरंतर जोय
सोम सुक्करां सुर-गुरां तो भारी जळ होय ५६

धुर असाढ दुतिया दिव्स निरमळ चंद उगंत
सोम सुक्र गुरुवार तो जळ-थळ अेक करंत ५७

धुर असाढकी पचमी बादळ होय न वीज
बेचो गाडी-बळदिया निपजै काइ न चीज ५८

आसाढां वद पंचमी नहिं वादळ नहिं वीज
करसां करसण मत करो धरण न नाखो बीज ५९

---

५४ यदि आसाढ वदी प्रतिपदाके दिन बादल गरजें तो बहत्तर दिनों तक हवा चले (वर्षा न हो)।

५५ आसाढ वदी प्रतिपदाके दिन यदि आकाश गरजे तो क्षत्रिय लोग परस्पर जूझें (लड़कर मरें—युद्ध हो) और निश्चय ही अकाल पड़े।

५६ आसाढ वदी द्वितीयाके दिन यदि सोम, शुक्र, या गुरुवार हो और निरतर बिजलीकी चमक दीखे तो खूब वर्षा होगी।

५७ आसाढ वदी द्वितीया के दिन यदि चद्रमा निर्मल ही उदय हो अर्थात बादल आदि कुछ न हो तो जल और स्थल को अेक कर देगा।

५८ आसाढ वदी पचमीको यदि न बादल हों, न बिजली, तो गाड़ी-बैल सब कुछ बेच दो (खेती न करो क्योंकि) कोई चीज पैदा नहीं होगी।

५९ आसाढ वदी पचमीको यदि न बादल हों न बिजली तो, हे किसानों, खेती मत करो, पृथ्वी में बीज मत डालो।

पुर असाढ़ की दसमी जो ससि निरमळ दीख
पीव, पधारो मालवै मंगत होसो भीख १०

पुर आसाढ़ी अस्टमी उत्तर बाजै समीर
इन्द्र महोच्छब, माधवी ! सावण बरसै नीर ११

जो पूरब तो करवरो जो दिक्खण तो काळ
समो ज सवरो नीपजै बाजै पिच्छम बाळ १२

काळा बादळ करवरो धोळा करै सुगाळ
चदो ऊगै निरमळो पड़ै अचींतो काळ १३

न गिण तीन से साठ दिन ना कर आन विचार
गिण नवमी आसाढ़ बद होय कौण-सै वार १४

---

१० आसाढ़ बदी दसमीके दिन यदि चन्द्रमा निर्मल दिखायी पड़े तो हे पति ! तुम मालवे जाओ और भीख मांगते फिरो (भीख मांगकर पेट पालो)।

११-१२ आसाढ़ बदी अष्टमीको यदि उत्तर की हवा चले तो, हे माधवी ! इन्द्र के बड़ा उत्सव होगा और सावनमें पानी बरसेगा; यदि पूरब की हवा चले तो जमाना साधारण होगा; यदि दक्खिनकी चले तो अकाल पड़ेगा पर यदि पश्चिमकी हवा चले तो जमाना खूब अच्छा होगा।

१३ आसाढ़ बदी अष्टमीको यदि चन्द्रमा काले बादलों में उगे तो जमाना साधारण करे सफेद में उगे तो सुकाल करे पर यदि निर्मल उदय हो—बादल न हों—तो ऐसा अकाल पड़े जो सोचा भी न हो।

१४-१६ वर्ष के तीन सौ साठ दिनोंका विचार न करो, न अन्यका विचार करो। केवल इतना विचार करो कि असाढ़ बदी नवमी किस वारको पड़ती है। यदि रविवारको पड़े तो अकाल हो मंगलको पड़े तो जमाना डगमग (चल-विचल) हो जाय, बुधको पड़े तो जमाना सम हो सोम शुक्र या बृहस्पतिको पड़े तो पृथ्वीको हरी-भरी देखो, पर यदि देवयोगसे कहीं शनि मिल जाय तो निश्चय ही रौरव नरक हो।

रवि अकाळ, मंगळ जग डिगै
बुध समयो सम भाव स लगै
सोम सुक्र सुर-गुर जो होय
पुहमी फूल-फळंती जोय
देव्न जोग जो सनि मिळै निहचै रौरव्न होय ६५

धुर असाढ दसमी दिव्नस रोहण नखतर होय
सस्तो धान विकायसी हाथ न घाळे कोय ६६

सुद असाढ की पंचमी गाज घमाघम जोय
तो यू जाणो, भड्डळी, मध्यम मेहा होय ६७

आसाढा सुद पचमी जोर खिव्नैली वीज
कोठा 'छाडो वेच कण वाव्नण राखो बीज ६८

आसाढारो सूद नम घण वादळ, घण वीज
नाळा-कोठा खोल दो राखो हळ नै बीज ६९

असाढांरी सुद नम ना वादळ, ना वीज
हळ फाडो, ईधण करो बैठा चावो बीज ७०

---

६६ असाढ़ वदी दशमी के दिन यदि रोहिणी नक्षत्र हो तो धान सस्ता त्रिकेगा, कोई हाथ नहीं डाल सकेगा (नहीं रोक सकेगा)।

६७ असाढ़ सुदी पचमी को यदि बादल गड़गड़ाहट के साथ गरजे तो यह समझो कि मेह मध्यम (साधारण) होगा।

६८ असाढ़ सुदी पचमी को यदि बिजली चमके तो अनाज की कोठिया खोल लो, और धान वेचना आरभ करो पर बोने के लिअे बीज रख लो।

६९ असाढ़ सुदी नवमी को यदि न बादल हों और न बिजली तो हलों को फाड़कर ईंधन बनाओ और बीजों (के लिअे रखे हुअे अनाज) को बैठे चबाओ (अकाल पड़ेगा)।

७० असाढ़ सुदी नवमी को यदि खूब बादल हों और खूब बिजली हो तो नालिया और कोठिया सब खोल दो, हल और बीज रख लो (वर्षा होगी)।

सुद असाढ नवमी दिवस बादळ भीनो चंद
तो यूं जाणो, भड्डळी ! भोमी घणो अणंद ७१

हरि आदीतां मंगळां जे पोढे सुर-राय
अन्न ज मूंघो होवसी चोरां चळसी वाय ७२

रवि छीडी, बुध कातरा मंगळ मूसा जोय
जे हर पोढे सनिचरां विरळा जीवै कोय ७३

सोम सुक्र अर सुरगुरां जे पोढे सुर-राय
अन्न महोळो नीपजै पुहमी सुख सरसाय ७४

आसाढी पूनम दिनां बादळ झीणो चंद
तो जोसी कहै, भड्डळी, सगळां नरां अणंद ७५

आसाढी पूनम दिनां गाज बीज बरसंत
विनस्या अच्छण काळका आणंद मानो संत ७६

---

७१ असाढ सुदी नवमी के दिन यदि चन्द्रमा बादलों से भीगा (या घिरा) हो तो, हे भड्डली ! तो समझो कि पृथ्वी में खूब आनन्द होगा।

७२ यदि सुरों के राजा विष्णु शनि रवि व मंगल को शयन करें (असाढ सुदी देवशयनी एकादशी इन वारों को पड़े) तो अनाज महँगा होगा और हवा चोरों से चलेगी।

७३ यदि भगवान रवि को शयन करें तो टिड्डी हो बुधको करें तो कातरा हों मंगल को करें तो चूहे हों और यदि शनिवार को शयन करें तो कोई विरले ही जीते रहेंगे।

७४ यदि भगवान सोम शुक्र और गुरुवार को शयन करें तो अनाज खूब पैदा हो और पृथ्वी पर सुख फैले।

७५ असाढ की पूनों के दिन यदि चन्द्रमा बादलों में छिपा हो तो ज्योतिषी कहता है कि हे भड्डली ! सब मनुष्यों को आनन्द हो।

७६ असाढ की पूनों के दिन बादलों की गर्जना हो बिजली हो और मेह बरसे तो, हे संतो ! अकाल के लक्षण नष्ट हो गये, आनन्द मनाइये।

आसाढी पूनम दिनां निरमळ ऊगै चंद
कोई सिंध कोइ माळवै जायाँ कटसी फंद ७७

उजियाळी आसाढरी पूनम निरखी जोय
वार सनीचर जो मिलै विरळा जीवै कोय ७८

आसाढी पूनम दिवस सोम सुक्र गुरुवार
पूर्वासाढा नखत तो घर-घर मंगळचार ७९

पड़वा पूनम द्वादसी वाजै पवन प्रचंड
तो घण थोडा वरससी मेह गया नव खंड ८०

पूनम नवमी 'साढ सुद निरमळ निसा मयंक
दुरभिख नहचै जाणियै रुळै राव अर रंक ८१

सुद आसाढ में बुधको उदै हुयो जो देख
सुक्र-अस्त सावण लखो महा-काळ अवरेख ८२

---

७७ असाढ़ की पूनों के दिन यदि चन्द्रमा निर्मल उदय हो तो किसी के कष्ट सिंध जाने से और किसी के मालवे जाने से ही मिटेंगे (अकाल पड़ेगा)।

७८ असाढ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा की देखभाल करो, यदि उस दिन शनिवार मिले तो कोई विरले ही जीवेंगे।

७९ असाढ की पूनों के दिन सोम, शुक्र या गुरुवार हो और पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो घर-घर में मंगलोत्सव हों।

८० असाढ सुदी प्रतिपदा, द्वादशी या पूर्णिमा को यदि प्रचंड हवा चले तो बादल नवों खंडों में बिखर गये और साधारण वर्षा करेंगे।

८१ असाढ़ सुदी पूर्णिमा या नवमी के दिन रात में चंद्रमा निर्मल हो (बादल आदि न हों) तो निश्चय ही दुर्भिक्ष समझो, राजा-रङ्क सब नष्ट हो जायँगे।

८२ असाढ सुदी में यदि बुध का उदय होना देखो और सावन में शुक्र का अस्त होना देखो तो महा अकाल समझो।

१० श्रावण

साव्रण पैली चौथ दिन जे मेहा बरसाय
तो भाखें यूं भड्डली। सास सवायी थाय ८३

साव्रण पैली पंचमी जो बादळ के मेह
च्यार मास बरसै सही यत भाखें सहदेव ८४

साव्रण धुर दिन चौथके और पंचमी जोय
गाजै बरसे धमधमे सही जमानो होय ८५

साव्रण चौथ र पंचमी बीज गाज नहिं मेह
निहचै दुरभिख देखिये पाव्रस उड़े खेह ८६

धुर साव्रणकी पंचमी बीज गाज नहिं मेह
क्यूं हळ बावै बावळा। निहचै उड़े खेह ८७

साव्रण पैली पंचमी जो बाजै घण बाव
काळ पड़ै चहुं देसमें मिनख मिनखने खाय ८८

---

८३ सावन बदी चतुर्थी के दिन यदि मेह बरसे तो है भड्डली यों कहते हैं कि फसल सवायी हो।

८४ सावन बदी पंचमी को यदि बादल मडराएं तो चार महीने अवश्य बरसे, सहदेव ऐसा कहता है।

८५ सावन बदी चौथ और पंचमी के दिन यदि बादलों की गर्जना और धमधमाहट और वर्षा हो तो अवश्य ही सुभिक्ष हो।

८६ सावन बदी चौथ और पंचमी को यदि न बिजली हो न गर्जना और न पानी तो निश्चय दुर्भिक्ष देखो और बरसात में धूल उड़े।

८७ सावन बदी पंचमी को यदि न बिजली हो न गर्जना और न पानी तो है बावले! किसलिये हल जोतते हो? अवश्य धूल उड़ेगी।

८८ सावन बदी पंचमी को यदि खूब हवा चले तो चारों ओर अकाल पड़े और मनुष्य मनुष्य को खावे।

सावण पैली पंचमी जो न धड़क्यो व्याल
तूं, पिव ! जायै माळवै हूं जाऊं मौसाळ ८६

सावण पैली पंचमी मेह न मांडै आळ
पीव ! पधारो माळवै हू जाऊं मौसाळ ६०

सावन पैली पचमी ना बादळ, ना बीज
हळ फाडो, ईंधण करो ऊभा चाबो बीज ६१

सावण पैलै पाखमें दसमी रोहण होय
मूंघो नाज 'र अळप जळ विरळा विळसै कोय ६२

सावण धुर अेकादसी मे' गरजै अधरात
तूं पिव ! जायै माळवै हू जाऊं गुजरात ६३

सावण बद अेकादसी रोहण बरसै मेव
न्रप नंदै, विळसै प्रजा इम भाखै सहदेव ६४

---

८६ सावन वदी पचमी को यदि बादल न गड़गड़ाये तो, हे प्रिय, तुम मालवे जाना और मैं पीहर जाऊंगी (अकाल पड़ेगा) ।

६० सावन वदी पचमी को यदि वर्षा का आसार न हो तो, हे प्रिय, तुम मालवे जाओ और मैं पीहर जाऊ ।

६१ सावन वदी पचमी को यदि न बादल हों और न बिजली तो हल को फाड़कर ईंधन बनाओ और खड़े-खड़े बीज (बीज के लिये रखे अनाज) को चबाओ ।

६२ सावन के पहले पक्ष में यदि दशमी को रोहिणी नक्षत्र हो तो अनाज महंगा और पानी कम हो, और कोई बिरले ही आनद मनावें ।

६३ सावन वदी अेकादशी को यदि आधी रात के समय बादल गरजें तो, हे प्रिय, तुम मालवे जाना और मैं गुजरात जाऊ ।

६४ सावन वदी अेकादशी को रोहिणी नक्षत्र हो और पानी बरसे तो, सहदेव यों कहता है कि, राजा आनद करें और प्रजा सुख भोगें ।

साबण बद अेकादसी बाजै उत्तर बाय
घर-घर हुवै बधावणा घर-घर मंगळ गाय ९५

सावण बद अेकादसी गरमां भाण बणांत
लोग सुखी बरखा सुभिख ध्यार मास बरसंत ९६

सावण बद अेकादसी जेती रोहण होय
तेतो समो ज नीपजै चिंता करो म कोय ९७

सावण पैलै पाखमें जे तिथि खूटी जाय
कइयक-कइयक देसमें टाबर बेचै माय ९८

सावण सुकला चौथ दिन जो ऊगंतो भाण
नहिं दीखै तो, भड्डळी ! पुख्य म बरखा जाण ९९

सावण सुद री सतमी स्वाती ऊगै सूर
रिखीसरां ! डूंगर चढो नदी बहै भरपूर १००

---

९५ सावन बदी अेकादशी को यदि उत्तर की हवा चले तो घर-घर बधाइयां हों और घर-घर आनन्द हों।

९६ सावन बदी अेकादशी को यदि सूरज बादलों में छगे तो वर्षा और सुभिक्ष हो, चार महीने मेह बरसे और लोग सुखी हों।

९७ सावन बदी अेकादशी को जितना रोहिणी नक्षत्र हो उतना ही सुभिक्ष होगा, कोई चिन्ता मत करो।

९८ सावन के पहले पक्ष में यदि कोई तिथि कम हो जाय तो किसी किसी देश में मा बच्चे को बेचे (घोर अकाल पड़े)।

९९ सावन सुदि चौथ को यदि उगता हुआ सूर्य दिखायी न पड़े (बादलों में छिपा हो) तो हे भडुली पुष्य नक्षत्र में (सूर्य के आने पर) वर्षा न हो।

सावन सुदी सप्तमी को यदि सूर्य स्वाति नक्षत्र में उगे तो हे ऋषीश्वरों ! पहाड़ पर चढ़ जाओ, नदी भरपूर बहेगी।

११ भाद्रपद

रवि ऊगंता भादवे अम्मावस रवि वार
धनस उगतां पच्छिमा होसी हाहाकार १०१

मुदगर जोग ज भादवै अम्मावस रवि वार
उज्जीणीथी अथमणै होसी हाहाकार १०२

भादरवै सुद पंचमी स्वात-सजोगी होय
दोनूं सुभ जोग ज मिलै मंगळ वरतै लोय १०३

सावण स्वाति न वूठियो कांई चिंतै नाह
भादरवै जुग रेळसी छट्ठा अनुराधाह १०४

जेठ गयो 'साढ ज गयो सावणिया ! तूं जाह
भादरवै जुग रेळसी छठ दिन अनुराधाह १०५

भाद्रव छठ छूट्यो नहीं विजळीरो झणाकार
तूं पिव ! जायै माळवै हू जाऊ मौसाळ १०६

---

१०१ भादो की अमावस को रविवार हो और सूर्योदय के समय पश्चिम मे इन्द्रधनुष का उदय हो तो हाहाकार हो। [अर्थ सदिग्ध है]

१०२ भाद्रपद में मुद्गर योग मे अमावस के दिन रविवार हो तो उज्जैन के पश्चिम की ओर हाहाकार हो (अकाल पड़े)।

१०३ भाद्रपद सुदी पचमी यदि स्वाती नक्षत्र से सयुक्त हो, यदि ये दोनों शुभ योग मिल जायँ तो लोग मगल मनावेंगे।

१०४ सावन में यदि स्वाति नक्षत्र न बरसा तो, हे नाथ! क्या चिन्ता करते हो! भाद्रपद में छठ के दिन अनुराधा नक्षत्र आकर जगत को बहा देगा (खूब वर्षा होगी)।

१०५ जेठ गया, असाढ़ भी गया, हे सावन, तू भी चला जा। (कोई पर्वाह नहीं), भाद्रपद में छठ के दिन अनुराधा जगत को बहा देगा।

१०६ भाद्रपद की छठ को यदि बिजली की चमक नहीं छूटी (बिजली नहीं चमकी) तो, हे प्रिय! तुम मालवे जाना, और मैं पीहर जाऊँगी।

१२ आश्विन

पुर आसाज अमावसां मैं आवै सनिवार
समयो होसी करवरो पिंडत कहै विचार १०७

१३ पुनः कार्तिक

काति्ग बंवर नाम बळ गेळी देख म भूळ
रूपाळा गुण-बायरा रोहीड़े रा फूल १०८

भूल्या फिरै गंवार काती माळै मेहड़ा १०९

१४ मिश्र महीने

आखा तीज न रोहणी पोह अमावस मूळ
राखी सरवण ना मिळै चहुं दिस उडै धूळ ११०

आखयो रोहण-बायरी पोही मूळ न होय
राखी सरवण होय नहिं मही डुलतो जोय १११

---

१०७ आसोज की अमावस को यदि शनिवार आवे तो पंडित विचार कर कहता है कि जमाना साधारण होगा।

१०८ कार्तिक में बादलों का आडम्बर हो तो भी पानी नहीं बरसेगा। हे बालकी उन्हें देखकर भूल मत। ये तो सुन्दर रूपवाले किन्तु गुणों से रहित रोहीड़े के फूल हैं।

१०९ वे गँवार भूले हुये फिरते हैं जो कार्तिक में मेह सोचते हैं।

११० अक्षयतृतीया को रोहिणी नक्षत्र हो, पौष की अमावस को मूल नक्षत्र हो तथा रक्षाबंधन (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा) के दिन श्रवण नक्षत्र का मेल न हो तो चारों ओर धूल उड़े (वर्षा न हो)।

१११ अक्षयतृतीया बिना रोहिणी के हो पौष की अमावस्या को मूल न हो और रक्षाबंधन के दिन श्रवण न हो तो पृथ्वी को डगमगाती देखना (अकाल पड़े)।

आखा रोहण-बायरी जेठी मूळ न होय
विजया दसमी स्रवण नहिं काळ निहंचै जोय ११२

अखै तीज रोहण ना होई
पोह अमावस मूळ न जोई
राखी सरवण-हीण विचारै
कातिग-पूनम क्रतिका टारै
माह मही ....
कहै, भड्ळी। साख विनासी ११३

माह वुळायो निरमळो जे भूमळियो चैत
आखातीज न गाजियो खेह ऊडसी खेत ११४

माघ मसक्का, जेठ सी सावण ठंडी वाव
भीम कहै, सुण भड्ळी। नहिं बरसणरो दाव ११५

काती सुद बारससूं देख
मिगसर सुद दसमी अवरेख

---

११२ अक्षयतृतीया बिना रोहिणी के हो, जेठ की अमावस को मूल नक्षत्र न हो और विजयादशमी को श्रवण नक्षत्र न हो तो अवश्य ही अकाल देखना।

११३ अक्षयतृतीया को रोहिणी न हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, रक्षाबंधन श्रवण के बिना हो, कातिक की पूर्णिमा को कृतिका न हो, और माघ ......(स) तो, हे भड्ली! कहो कि फसल नष्ट हो गयी।

११४ माघ में गर्मी, जेठ में शीत और सावन में ठंडी हवा चले तो, भीम कहता कि हे भड्ली! सुन, यह बरसने का आसार नहीं।

११५ माघ यदि निर्मल (बिना बादल) आवे, चैत में साधारण बूंदा बांदी हो अक्षय-तृतीया को बादल न गरजे तो खेतों में धूल उड़ेगी (वर्षा नहीं होगी)।

मृगवासैका मोखसिंघजी
मैरू सिंघजी पगी करी मनवार
घणा दिनांसू आया पावणा, गोठ जीमता जाय
दूधां धोय'र चावळ रांध्या पिरसी थाय'र थाळ
चोरी भर-भर खांड मंगायी पिरस बळाया थाळ

२)

रामगढ़का सेठांने जद खबर पड़ी है आय
सेठां लिख परवानो भेज्यो दिल्लीरै दरबार
लूटी म्हारी लदी कतारां लूट्यो नौ लख माल
म्हारी धरामें डिगग्यो डूंगजी कैट-कटकै खाय
अबकै तो बै लूटी कतारां, अब लूटैगो हेली
आसामी ठस पड़गी, होगी रुपियाकी भेळी
सेठां लिख परवानो भेज्यो, बड़े सा'बने देणा
डूंगसिंघ म्हारै लारै पड़ग्यो पकड़ कैद कर लेणा

---

(२)

रामगढ़के सेठोंको जब आकर खबर पड़ी तो सेठोंने यह पत्र लिखकर दिल्लीके दरबार में (अंग्रेजोंके पास) भेजा—हमारी लदी हुई कतारोंको लूट लिया और नौ लाख माल लूट लिया यह डूंगजी हमारी धरतीसे परच गया है इसे लूट-खसोटकर खाता है इस बार तो उसने कतारें लदी हैं अबकी बार हवेलीको भी लूट लेगा, आसामियां सब ठस पड़ गयी हैं रुपयेकी भेळी रह गयी है। इस प्रकार पत्र लिखकर सेठोंने भेजा और कहा—ले जाकर बड़े साहबको देना और कहना कि डूंगसिंह हमारे पीछे पड़ गया है, इसे पकड़कर कैद कर लेना।

अंग्रेजोंको खबर पड़ी तब चार फौजें चढ़कर चलीं। रात-रात चलकर वे सीकरमें पहुंची और सीकरके ठाकुरसे कहा—हे सीकरके प्रतापसिंह! डूंगसिंहको हमें पकड़वा दे। ठाकुरने कहा—यह हमारा भाई-भतीजा (कुटुम्बी) लगता है पकड़वाया नहीं जा सकता यह कचहरीमें बैठा गोठका माल खा रहा है।

अंगरेजांनै खबर पडी जद चढगी फौजां च्यार
रात-रातकी करी मजल, वै पूंची सीकर मांय
सीकररा परतापसिंघ। म्हांनै डूंग न्हार पकडाय
म्हांरो लागै भाई-भतीजो, पकडायो ना जाय
झडवासैमैं बैठो डूंगजी माल गोठको खाय

सीकरहू वै चाली फौजा, झडवासैमैं आयी
आसै-पासै खड्या सिपाही, घेरो दियो लगायी
झडवासैका भैंरूसिंघ। तूं झट दे बायर आव
कै पकडा दै डूंग न्हार, नहिं घरा कैदकै मांय
रोळो-बेधो मत करो, कोइ, ना गळबैका काम
जीजो लागै डूंगजी स मैं हाथां दूं पकडाय

मोरझडीकी दारू कढावै, आंगण भटी तुडावै
दारू पाय'र करै बावळो, मेडी मांय चढावै
च्यार फिरंगी ओटै बैठ्या, च्यार चढ गया मेडी
डूंगसिंघनै सूतो पकड्यो पगां ठोक दी बेडी
हाथां घाली हथकडी, रे। गळमैं तोख जंजीर
आख खुली जद डूंग न्हार बो हुयो घणो दिलगीर

तब वे फौजें सीकरसे चलीं और झड़वासेमें आयी। आस-पास सिपाही खड़े हो गये, चारों ओर घेरा लगा दिया और कहा—हे झड़वासेके भैरोसिंघ! झटपट बाहर आ, या तो डूगसिंघको हमें पकड़वा दे नहीं तो तुझे कैदमें डालते हैं।

भैरोसिंघ बोला—हल्ला-दगा मत करो, झगड़े-झंझटका कोई काम नहीं, डूगजी मेरा जीजा लगता है, अपने हाथोंसे उसे पकड़वा दूंगा। आगनमें भट्टी लगवाकर मोर-झड़ीकी शराब निकलवायी। शराब पिलाकर बावला कर दिया और महलमें चढ़ा दिया। चार अंग्रेज छिपकर बैठ गये, चार महल पर चढ गये। इस प्रकार पकड़कर पैरोंमें बेड़ी ठोंक दी और हाथोंमें हथकड़ी डाल दी, गलेमें तौक और जंजीर डाल दिये। जब आंख खुली तो वह डूगसिंघ बड़ा बेचैन हुआ। वह बड़बड़ करता अंगुलियां चबाने

पोल्यो (डाकू डूँगसिंघ तू सुण रे छोट्या जाट।
मिनखां निठगी मोठ-बाजरी, घोड़ां निठग्या घास
मरदांमें तू मरद आगळो दरबारां तू जाट
रामगढ़की हेर ल्या दे, जद जाणूँ ताप जाट

छोट्या जाट करणिया मीणा ज्यांरा जाजा मेळ
डूँग ज्हार री भरी कचेड्यां कीनी बात सकळ
छोट्या जाट करणिया मीणा अकलां मांय वजीर
मेख पलट प चाल्या रामगढ़, जाणूं छूट्या तीर
छोट्यो कीनी ढोलकी काज, करण्यो कीनूं बांस
घर-घर मांडै ख्याल-तमासा, घर-घर भाळै माल
रामगढ़रे सेठांरी थे मोटी कतारी जाम
सोनारी पूतळियां, मरदां। मांय मूंगिया भार
पुरसामलजी, अनंतमलजी, वां सेठां रो नाम
रामगढ़ सूं चली कताल्यां अजमेरां नै जाय

नहीं रही। घोड़ोंके लिये घास बाकी नहीं रहा। तू मर्दोंमें श्रेष्ठ मर्द है। बादशाहोंमें तू जाट (राजा) है। तू रामगढ़की आइली कर दे तो है जाट। तब मैं तुझे समझूंगा।

जाट छोटिये और मीणे करणियेने जिनका प्यारा मेल था डूंगसिंहकी भरी कचहरीमें इस बातको स्वीकार किया। जाट छोटिया और मीणा करणिया बुद्धिमें वजीर थे। वे वेष बदलकर रामगढ़को चले मानो तीर छूटे हों। छोटियेने ढोलक ली और करणियेने बांस लिया। घर-घरमें खेल-तमाशा करने लगे और घर-घरमें माल देखने लगे (धन का सुराग लेने लगे)।

रामगढ़के सेठोंकी लदी हुई कतारें जा रही थीं जिनके भीतर सोनेकी पुतलियां और मूंगोंके ढेर थे। पुरसामलजी और अनंतमलजी ये दोन सेठोंके नाम थे। रामगढ़से चली हुई कतारें अजमेरको जा रही थीं। जाट छोटिये और मीणे करणियेने खबर दी कि हे डाकी! बाका है तो मारवाड़के पहाड़ोंमें कूद के आजाओ पार करने पर फिर हाथ (आपके) नहीं रहेंगे।

लख्यो जाट करणिये मीणै डेरो दियो लगाय
लूटै छै तो लूंट, डूंगजी। अडै-बळैरै माय
आडो-बळो डाकिया पाछे बसका रैसी नांय

सात सवारां नीसख्या, वै हुया कतारां लार
चलती बोरी काट दी, वा मूंग्या दिया खिंडाय
चुग-चुग हारया बाळदी, चुग-चुग छक्या गवाळ
चुग-चुग दुनिया धापगी बा जै बोलती जाय
सात ऊंट दरबाका भरिया, पोकरजीनै जाय
पोकरजीकै घाट पर वां जाजम दिवी बिछाय
गरीब-गुरबां बामणानैं हेलो दियो मराय
रुपियो-रुपियो दियो बामणा, मो'रा चारण-भाट
असी मो'र दी नानगसाही, साखो दियो जुडाय

धरम-पुन्न यों बाट डूंगजी झडवासैनै जाय
झडवासै मैं सासरो साळा सू मिळवा जाय

वे सात सवारोंको लेकर निकले और कतारोंके पीछे हो गये। उनने चलती हुई बोरियोंको काट डाला, मूंगोंको बिखरा दिया, जिनको चुन-चुन कर बैलोंवाले थक गये, ग्वाले थक गये। दुनिया चुन-चुन कर अघा गयी। वह जय बोलती हुई चली। डूंगजी और उसके साथियोंने सात ऊँट उस धनके भरे और पुष्कर तीर्थको गये। वहा गरीबों और ब्राह्मणोंको घोषणा करवा दी। रुपया-रुपया ब्राह्मणों को दिया और चारण-भाटोंको मोहरे दी। नानकशाही अस्सी मुहरे देकर प्रशसा के गीत गवाये।

इस प्रकार धर्म और पुण्यमें धनको बाटकर डूगजी झडवासे गावको गया। झडवासेमें ससुराल थी। सालोंसे मिलने गया। झडवासेके नवलसिंघ और भैरोंसिंघ ने खूब अतिथि-सत्कार किया। कहा—पाहुने। बहुत दिनोंसे आये हो, गोठ जीमते जाओ। दूधसे धोकर चावल राधे, घीसे धोकर दाल राधी, बोरिया भर-भर शक्कर मगायी और घीके नाले बहा दिये।

महलासेका नौलसिंघजी
मैरू सिंघजी करी करी मनवार
घणा दिनांसूं आया पावणा, गोठ जीमता जाय
दूधां धोयं'र चावळ रांध्या मिरचां वाम'र दाळ
बोरी भर-भर खांड मंगायी मिरच चढाया झाळ

२)

रामगढ़का सेठांने जद खबर पड़ी है आय
सठो लिख परवानो भेज्यो दिल्लीरै दरबार
लूटी म्हांरी सबी कतारां लूट्यो नौ लख माल
म्हांरी धरामें लिख्यो डूंगजी ऊँट-छ टके लाय
अबके तो मैं छूटो कतारां, अब लूटैगो देली
आसामी ठस पड़गी होगी रुपियांकी थेली
सेठां लिख परवानो भेज्यो, बड़े साबने देणा
डूंगसिंघ म्हांरै लारै पड़ग्यो पकड़ कैद कर लेणा

---

(२)

रामगढ़के सेठोंको जब आकर खबर पड़ी तो सेठोंने यह पत्र लिखकर दिल्लीके दरबार में (अंग्रेजोंके पास) भेजा—हमारी भरी हुई कतारोंको लूट लिया नौ लाखका माल हर लिया यह डूंगजी हमारी धरतीसे परच गया है इसे ऊंट-ऊंटकर लाया है इस बार तो उसने कतारें लूटी हैं अबकी बार हवेलीको भी लूट लेगा आसामियां सब ठस पड़ गयी हैं रुपयेकी थैली रह गयी है। इस प्रकार पत्र लिखकर सेठोंने भेजा और कहा—ले जाकर बड़े साहबको देना और कहना कि डूंगसिंह हमारे पीछे पड़ गया है इसे पकड़कर कैद कर लेना।

अंग्रेजोंको खबर पड़ी तब चार फौजें चढ़कर चलीं। रात-रात चलकर वे सीकरमें पहुँची और सीकरके ठाकुरसे कहा—हे सीकरके प्रतापसिंह! डूंगसिंहको हमें पकड़ना है। ठाकुरने कहा—वह हमारा भाई भतीजा (कुटुंबी) लगता है पकड़ाया नहीं जा सकता वह झगरामेंमें बैठा गोठका माल खा रहा है।

अंगरेजांने खबर पडी जद चढगी फौजां च्यार
रात-रातकी करी मजल, वै पूंची सीकर मांय
सीकररा परतापसिंघ। म्हानै डूंग न्हार पकडाय
म्हांरो लागै भाई-भतीजो, पकडायो ना जाय
झडवासैमैं बैठो डूंगजी माल गोठको खाय

सीकरहू वै चाली फौजां, झडवासैमैं आयी
आसै-पासै खड्या सिपाही, घेरो दियो लगायी
झडवासैका भैंरूसिंघ। तूं झट दे बायर आव
कै पकडा दै डूंग न्हार, नहिं घरां कैदकै मांय
रोळो-वैधो मत करो, कोइ, ना गळवैका काम
जीजो लागै डूंगजी स मैं हाथां दूं पकडाय

मोरझडीकी दारू कढावै, आंगण भटी तुडावै
दारू पाय'र करै बावळो, मेडी मांय चढावै
च्यार फिरंगी ओटै बैठ्या, च्यार चढ गया मेडी
डूंगसिंघनै सूतो पकड्यो पगा ठोक दी वेडी
हाथां घाली हथकडी, रे। गळमैं तोख जंजीर
आख खुली जद डूंग न्हार बो हुयो घणो दिलगीर

तब वे फौजें सीकरसे चलीं और झड़वासेमें आयी। आस-पास सिपाही खड़े हो गये, चारों ओर घेरा लगा दिया और कहा—हे झड़वासेके भैरोसिंघ! झटपट बाहर आ, या तो डूगसिंघको हमें पकड़वा दे नहीं तो तुझे कैदमें डालते हैं।

भैरोसिंघ बोला—हल्ला-दगा मत करो, झगड़े-झझटका कोई काम नहीं, डूंगजी मेरा जीजा लगता है, अपने हाथोंसे उसे पकड़वा दूंगा। आगनमें भट्टी लगवाकर मोर-झड़ीकी शराब निकलवायी। शराब पिलाकर बावला कर दिया और महलमें चढ़ा दिया। चार अंग्रेज छिपकर बैठ गये, चार महल पर चढ गये। इस प्रकार पकड़कर पैरोंमें बेड़ी ठोंक दी और हाथोंमें हथकड़ी डाल दी, गलेमें तौक और जंजीर डाल दिये। जब आख खुली तो वह डूंगसिंघ बड़ा बेचैन हुआ। वह बड़बड़ करता अंगुलिया चबाने

कंपनी सा' निरखणनै आयो, रांघड वडो हुंस्यार
भळभळ तो माथो करै, नैणा जळै मुसाळ
इसडो रांघड अेक है, रे ! जे होवै दो-च्यार
मार-मार फिरंग्यांनै कर दै कळकत्तैकै पार
दो बोतल दारूकी पीवै, पका पेटिया च्यार
भल-भल यो जायो ठकराणी न्हारां हंदो न्हार
लाल किलैकै मायनै डूंग न्हार रख लेणा
हुकम नहीं छै काळै पाणी, नजर-कैद कर देणा

(४)

सीकर हूतो चढ्यो ज्वारसिंघ, गढ बठोठमैं आयो
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, दोनू सागै लायो
सैं होळीनैं ढळी जाजमा, होय रही मतवाळ
बोतल तो जगजग करै, कोइ, प्याला करै पुकार
'तू पी तूं पी' हो रही, कोइ, करै घणी मनवार

जगामग कर रहा है, नेत्रोंमे मशालें जल रही हैं, अैसा राजपूत यह अेक ही है, जो दो-चार हों तो अंग्रेजोंको मार-मारकर कलकत्तेके पार कर दे, यह शराबकी दो बोतलें पीता है, पक्के चार पेटिये (चार आदमियोंका भोजन) खाता है, ठकुरानीने इसे खूब जनम दिया ! यह सिंहोंका सिंह है, इस डूंगसिंघको लाल किलेमें रख लेना, कालेपानीका हुक्म नहीं है, नजरकैद कर देना ।

(४)

जुहारसिंघ सीकरसे चढ़ा और बठोठके किलेमें आया । जाट लोटिया और मीणा करणिया दोनोंको अपने साथ लाया । ठीक होलीके दिन जाजिमें बिछीं और मदिरापान होने लगा । बोतलें जगाजग कर रही थीं, प्याले सजीव होकर पुकारते थे । 'तू पी, तू पी' इस प्रकार कहकर खूब मनुहारें कर रहे थे ।

जब इसकी भनकार कानम पड़ी तो रानी (डूंगजीकी पत्नी) महलसे बाहर निकली । उसने खड़े-ही-खड़े ताना दिया—तुम्हारे शराब पीनेको धिक्कार है ! किसलिअे

साथ नटग्या भाई-भतीजा, सब नटग्या उमराव
बावड़ता बीड़ानें झेल्यो अेक लोटिये जाट

पकी सेर दें गेरू गाळी, करियो भगवों भेस
कर मुजरो बो चल्यो आगरे, राम राखसी टेक
आगरे-नै चल्यो लोटियो, ज्यूं लंका हड़मान
कै ल्यावैलो खबर डूंगकी, कै त्यागैलो प्राण

(५)

आगरे-के बधवा आगें धूणी घाली सात
अेबड़-छबड बळै बळीतो, बीच लोटियो जाट
मार पलाखी मींट लगावै, करै गजबका फैल
लोग दिखाऊ अन-जळ त्याग्यो, अेक भखै बस पून
आये-गयैसू मुख ना बोलै, अैसी धारी मून
छव महिनाकी लायी समाधी, खूब तप्यो दिन-रात
छठ महीनै लागतां अंग- रेजा बूझी बात

देखकर कई लोगोंने तिजारा चढ़ा लिया। कई लोगोंके बुखार चढ़ गया। सारे भाई-भतीजे मुकर गये, सब सरदार इनकार कर गये। किसीके न लेने पर बीड़ा लौट कर जाने लगा। उस लौटते हुअे बीड़ेको अकेले लोटिये जाटने उठा लिया।

(५)

उसने पक्का सेर भर गेरू गलाया और उससे वस्त्र रंगकर भगवाँ वेश बनाया। फिर जुहारसिंघको मुजरा करके वह आगरेकी ओर चल दिया। बोला—राम मेरी टेक रखेंगे। आगरेके कैदियोंके सामने उसने सात धूनिया जलायीं। इधर-उधर इन्धन जलने लगा। उनके बीचमें लोटिया जाट बैठ गया। पालथी मारकर आंखें बन्द कर लीं। गजबके फैल (आडम्बर) करने लगा। लोगोंको दिखानेके लिअे अन्न-जल भी छोड़ दिया, बस अेक पवनका भक्षण करता। अेसा मौन धारण किया कि किसी आने जानेवालेसे मुंहसे नहीं बोलता। छै महीनोंकी समाधि लगायी। दिन-रात खूब ही तपा। छठे महीने के लगने पर अंग्रेजोंने बात पूछी—हे बाबाजी! किस देशसे आये हो? किस देशको

च्यार सिपाही आगै होग्या, च्यार सिपाही लार
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, करै किलैकी सैल
फिर-घिर देखी चारदिवारी, नांय लगायी देर
फाटक-मोरी निजरा काढ्या, लियो किलैको भेद
जद बंदवां-की गयो बुरजमें, मनमें भयो खुस्याल
अेवड़-छेवड सित्तर बधवा, बीच डूंग सिरदार
सुरत पिछाणी जाटकी जद नैणा खळक्यो नीर
छाती भरी, हीवड़ो उमळूयो, छुट्यो डूंगको धीर

रग रे थारी जात, लोटिया। भलो जाटणी जायो।
आ मरवाकी घडी बाजगी, भलो भेखसूं आयो
कंवरां माथै हाथ फेरज्यो, राणीनै हिवळास
भाई-भतीजांनै मुजरा कहज्यो, माजीनै घणा सिलाम
जुवारसिंघनै यूं समझायो, घरकी करै संभाळ
जीवांगा तो फेर मिलांगा, ना दरगाकै मांय

फिर चार सिपाही आगे हो गये और चार सिपाही पीछे। इस प्रकार लोटिया जाट और करणिया मीणा किलेकी सैर करने लगे। चहारदिवारीको फिर-घिरकर देख लिया, देर नहीं लगायी। फाटकों और खिड़कियोंको नजरमेंसे निकाल लिया। इस प्रकार किले का सारा भेद ले लिया। जब कैदियोंकी बुर्जमें पहुँचे तो मनमें बड़ा प्रसन्न हुआ। इधर-उधर सत्तर कैदी थे। बीचमें सरदार डूगसिंघ था। डूगसिंघने जब जाट (लोटिये) की सूरत पहचानी तो नेत्रोंसे आसू बह चले, छाती भर आयी, हृदय उमड आया। इस प्रकार डूगसिंघका धैर्य जाता रहा। वह बोला--अरे लोटिया! तुझे शाबाश। जाटनीने तुझे खूब जन्म दिया, यह मरनेकी घड़ी बज चुकी थी, तू खूब वेश बनाकर आया, कुवरोंके माथे पर हाथ फेरना, रानीको धैर्य बधाना, भाई-भतीजोंको मुजरा कहना, माताजीको बहुत-बहुत प्रणाम कहना, जुहारसिंहको यों समझाना कि घरकी देखभाल रखे, जीते रहे तो फिर मिलेंगे, नहीं तो वैकुण्ठमें मिलन होगा, जुहारसिंघको तुम चुपचाप यह खबर सुना देना कि सात दिनोंका हुक्म सुना दिया है, कालेपानी ले जायगे।

जुगारसिंघने जाने सी थे   होग्यो ताकर सुजाण
सात दिनांकी ओछी दीनी,   काळे पाणी छे खाण
कायर जातीका डूँगजी ! तू   कायरता मत छाड़
सात दिनांके भीतर थाने   घर छे ल्याऊं छुड़ाय
बंध कातणको कह्यो लोटिये   डूंग म्हाराई ठीक
धीर घोवमा बंधा डूंगने   की जावणकी सीख

छाड किले हूं नीसरतो थो
देख्यो माळे मोरचा कोड़   करण्यो तळे सफील
आधी रात पहरका तड़का   जोगवां धूणी ठायी
मगर्वा के जमनामें फेंक्या   तूँबा दिया तिरायी
असी रिप्यांमें लियो टोडड़ो   हाल्या रातूँ-रात
गढ बठोठके आया गोरवें   ऊगतड़े परभात

लोटियेने उत्तर दिया—हे कायर जातीके डूंगसिंह ! कायरता मत कर सात दिनोंके भीतर भीतर तुझे छुड़ाकर घर ले जाऊंगा । फिर लोटियेने डूंगसिंहसे बन्धन काटनेकी बात ठीक की और उसको धैर्य बंधाकर जानेके लिये विदा ली ।

जब किलेसे निकलते हुये उनने   लोटिया मोरचे देख रहा था कर्णिया पहारदीवारीको ताक रहा था । आधी रात बीतने पर जब प्रातःकाल होनेको पहर भर रह गया था जोगियोंने धूनी उठा दी । मगरों पखोंको लेकर यमुनामें फेंक दिया और तूंबोंको पानीमें तैरा दिया । अस्सी रुपयोंमें ओक ऊंट खरीद किया और रातोंरात चल पड़े । प्रभात होते ही बठोठ गढके मैदानमें आ पहुंचे ।

(गोरवौं= गांवोंके बैठनेका मैदान गांव की सीमा जहां रात को गायें बैठती हैं) ।

(६)

लोट्यं तो मुजरा करया सब — करण्यं राज-जुहार
साम उठकर मुजरा मेल्यो — ज्वारसिंघ सिरदार
तू गयो, लोट्या ! आगरे, म फेर, — कहो सहरकी वात

के कहूं, म्हारा रावजी ! , म्हाड, — म्हासूं कह्यो न जाय
डूंग म्हारने देख'र आया — लाल किलेके मांय
ई जीणनूं मरणो चोखो, — बुरो कैदका काम
हाथांमें तो पड़ी हथकड़ी, — बेड़ी पावां मांय
गळमें तोख-जंजीर पड़ी है, — बंद पींजरें मांय
सात दिनांकी बोली लिख दी, — काळ पाणी ले ज्याय
मिलणो ह तो मिलो, रावजी ! — फेर मिलणका नांय

इतणी वातां व्ही कचेड़्यां, — गयी रावळा मांय
राणी रोवण लागी म घा — रंग-महलके मांय
कंवर रोवण लाग्या सबे — भरी कचेडी मांय

---

(६)

लोटियेने मुजरा किया और करणियेने राजसी जुहार। सरदार जवारसिंघने उठकर और सामने आकर मुजरेको स्वीकार किया और कहा—लोटिया ! तू आगरे गया था, उस शहरकी बात कह। लोटियेने उत्तर दिया—हे मेरे रावजी ! क्या कहूँ ? मुझसे कहा नहीं जाता, हम डूंगसिंघको लाल-किलेमें देखकर आये हैं, कैदका काम बड़ा बुरा है, इस जीनेसे मरना अच्छा, हाथोंमें हथकड़ियां पड़ी हैं, पैरोंमें बेड़ी पड़ी हैं, गलेमें तौक और जंजीर पड़ी हैं, स्वयं पिंजड़ेमें बन्द हैं, सात दिनोंमें कालेपानी ले जानेका हुक्म लिख कर सुना दिया है, हे रावजी ! मिलना हो तो मिल लो, फिर मिलनेके नहीं।

इतनी बातें कचहरीमें हुई, वे उड़कर रनिवासमें पहुँची। रंगमहलमें रानी रोने लगी। राजकुमार भरी कचहरीमें रोने लगे। उनको समझाया—रोवो मत, रुदन मत

मत रोवो मत रुदन करो, काइ मत ना हुवो उदास
रात-रात परवाना मेल्यां माई भतीजां पास

सेखावत बीदावत चढ़िया चढ़िया तंवर पंवार
मेड़तिया मेड़तिया चढ़िया, चढ़िया नरूका साथ
प्यार करत गुसांयांका चढ़िया दादूपंथी साथ

कूड़ी-कूड़ी जान बणा ल्यो, कूड़ो बानरो बीन
घुग-घुग करलो कूंचो मांडो, घुग घुग घुड़लां बींद
आपां तो जानेती बणस्यां, बींद बणै गोपाळ
दोय जणा बागड़िया बणके छिपूं यो अरसाळ
हाथां पगांके बांधो डोरड़ा, सिर सोनाको मोड़
कानां घालो मामा-मुरकी गळमें घालो गोप
लाल चोळणै मामा मोचा, लाल कमारी बोड़ो
लाल पागड़ी, रातो बागो रातै महियै घोड़ो

अरी उदास मत होओ रात-ही-रातमें सब भाई-भतीजों (कुटुम्बियों) के पास परवाने लिखकर भेजते हैं (और हम गधीको दुलहनके लिये तय्यारी करते हैं)।

परवाने पाकर शेखावत और बीदावत चढ़े तंवर और पंवार चढ़े मेड़तिये-मेड़तिये चढ़े साथमें नरूके चढ़े गुसाइयोंके प्यार करते भी चढ़े और साथमें दादूपंथी साधु भी। फिर उसने उपाय की—झूठमूठ बरात बना लो झूठा वरका दूल्हा बना लो घुनघुनकर ऊटों पर बीन बनो घुनघुनकर घोड़ों पर बीन बनी हम लोग तो बराती बनेंगे गोपालसिंह दूल्हा बने दो आदमी ढोली बनकर छिपूं राग आरम्भ कर दो दूल्हेके हाथों-पैरोंमें कंगन-डोरड़े बांधो सिर पर सोनेका मौर रखो कानोंमें मामा-मुरकियां पहनाओ गलेमें गोप डाल दो लाल चमड़ेकी मामा-जूतियां पहना दो लाल किनारीकी धोती पहना दो लाल जामा और लाल पगड़ी पहनाकर लाल मस्त ऊंट पर चढ़ा दो।

हाथांका हथियार ले लिया, खाबाको सामान
जान वणाय'र चल्या आगरै, हर राखैलो मान
रात-रात वै चलै जनेती, दिन ऊग्यां ठम जाय
आगरैकै तीन कोस पर डेरा दिया लगाय

(७)

जमनाजीकै बांवैं-डाव्रै रेव्रड चरतो जाय
निजर पडी करण्यै मीणैकी, जद यूं बोल्यो आय
हुकम करो तो, सिरदारां! मैं मींडो ल्याऊ उठाय

हुकम चलै छै अंगरेजांको जोरी-जपती नांय
यो अंगरेजी राज है स थे जो ल्याव्रोला 'ठाय
बंध्या-बंध्या घोडा मर ज्यागा, बध्या-बंध्या उमराव्र
गूजरकैनै राजी कर थे ल्याव्रो दोय'र च्यार

फिर उनने हाथोंमें हथियार ले लिये, खानेका सामान ले लिया और बरात बनाकर आगरेको चल दिये। भगवान प्रतिष्ठा रखेंगे। वे बराती रात-रातमें चलते और दिन ऊगते ही ठहर जाते। आगरेके तीन कोस दूर रहने पर उनने डेरे लगा दिये।

(७)

यमुनाकी बायीं ओर मेढ़ोंका झुंड चरता जा रहा था। उस पर करणिये मीणेकी नजर पड़ी। तब वह आकर यों कहने लगा—हे सरदारों! हुक्म करो तो अेक मेढ़ा उठा लाऊ। सरदारोंने कहा—यहा अंग्रेजोंका हुक्म चलता है, जोर-जबर्दस्ती नहीं हो सकती, यह अंग्रेजी राज्य है, यदि तुम उठाकर ले आओगे तो सरदार (कैदमें) बधे-बधे मर जायगे और घोड़े यहा बधे-बधे, हा, अहीरके बेटेको राजी करके अेक नहीं दो-चार ले आओ।

स्योसिंघजी गूजरका बेटा ! कह मींढैको मोल
कितणा रिपिया थां मींढैका, बता मुखसूं बोल
कै मींढैको मामलो स कोइ कै मींढैकी जात !
थे परदेसी पावण्या, स कोइ, फिरो न दूजी वार
म्हारो मोटा भाग छै स थे मींढो मांग्यो आय
मींढो थे ले ज्यावो, ठाकरां ! मिजमानीमें सौंप
थे छो गूजर पाळवी रे ! म्हे वाजा उमराव
सतमतमें मींढो आयां लाजै म्हारो नाव
गूजर मांग्या पांच रिपइया, बी पकड़ाया सात
गूजरकैने राजी करबै मींढो लाया हाथ

१ झटको कर तोड़ नाड़ल मुरदो कियो बणाय
च्यार लाकड़ी तोड़कै, स कोइ अरथी लयी बणाय
चाकर चरणदासनै, स कोइ, मदद दिया कराय
गाजा-बाजा बंद कराया कोइ लियो रामको नांव

---

१ हे गूजरके बेटे शिवसिंह ! मेढ़ेका मोल कर मेढ़े के कितने रुपये हैं असली मुझसे बोल। गूजरने उत्तर दिया—इस मेढ़ेकी क्या बिसात ? मेढ़ेकी क्या जाति ? तुम लोग परदेशी पाहुने हो दुबारा नहीं आओगे हमारा बड़ा भाग्य है कि तुमने आकर मेढा मांगा हे ठाकुरो ! मेढा आप मेहमानीमें ले जाइये। फौजियोंने उत्तर दिया—तुम गूजर और प्रजा हो हम सरदार कहलाते हैं मुफ्तमें मेढा लानेसे हमारा नाम कलंकित होगा। तब गूजरने पांच रुपये मांगे। उसने सात पकड़ाये। यों गूजरके बेटेको राजी करके एक मेढा पकड़कर ले आये।

मेढ़ेको झटका देकर और गरदन तोड़कर मुर्दा बना लिया। फिर चार लकड़ियां तोड़कर अरथी बना ली। तब नौकरों-चाकरोंसे मदद करवा दिया (साथ जुटवा दिये) गाजों-बाजोंको बन्द कर दिया और राम (गोर) का नाम लिया (मातम करने लगे)। सरदार सब मिल चार आदमियोंके कंधे पर चढ़ा। इस प्रकार आगे आगे मुर्दा चला,

ल्यार जणाई काध चढिया मेंडासिंघ सिरदार
आगे आगे मुड्दो चाल्यो, लारा जान-बरात
मग्रमें आगे चाल्यो नाई धार घालतो जाय
कंपनी साहबके बागमें था अरथी र्यो उतार

अन्नण-चन्नण चिता चिणायी, नारेळांमें दाग
आरचार फिर जाट लोटियै लांपो दियो लगाय
धूंवको जद लूंट उपड्यो, काप्यो कंपनी साय
घाड घोड़े चढकै आयो, गुरजण कुत्ती लार
दूरी करी, रे जानेत्या! थे मुड्दो दिया जळाय
मुड्दो-मुड्दो मत करो स यो सगळाको सिरदार
अबके मुड्दो क दियो स तो बाजसी तरवार
ऊंचै कुळको राजवी, ओ बावन गढांको राव
सागी बींनको मामो मरग्यो मेंडासिंघ सरदार
जोरजी बीदावत बोल्यो, हुयी ओर-सूं-ओर
लाखांको पट्टायत मरग्यो, नहीं रामसूं जोर

बराती पीछे चले। सबके आगे वाल्मिया नाई पुकार देता हुआ चला। कपनीके बागमें पहुँचकर उनने अरथी उतार कर रख दी।

फिर चदनकी चिता बनायी और नारियलोंके साथ दाह-सस्कार कर दिया। लोटिये जाटने चारों ओर फेरी लगाकर आग लगा दी। जब धुएँकी राशि उठी, कपनी-साहब काँप उठा। वह निपुत्ले घोड़े पर चढ कर आया, पीछे गुरजिन कुतिया थी। उसने आकर कहा— हे बरातियों! तुमने बुरा किया जो मुर्देको यहा जला दिया।

राजपूत तैशमें आकर बोल उठे—मुर्दा-मुर्दा मत करो, यह सबका सरदार है, अबकी बार इसे मुर्दा कह दिया तो तलवार बज उठेगी। यह ऊचे घरानेका राजवशी है, बावन गढ़ोंका स्वामी है, दूल्हेका सगा मामा सरदार मेड़ासिंघ मर गया है। बीदावत जोरजी कहने लगा—और-का-और हो गया, लाखोंकी जागीरका स्वामी मर गया, रामसे कोई बश नहीं।

बायी बुरजमें बोल्यो डूगजी, जाणै धड़क्यो न्हार
म्हारी बेडी काट्या, लोटिया। ना निसरैगो नांव
म्हारी वंधमे सित्तर वंधव्रा, बांको पेली काट
कंकी रोव्रं वैन-भाणजी, कैंको रोव्रै माय
वधमें बैठ्यो कहं डूगजी, सुण, रे लोट्या जाट।
पैलां तो वधव्रांकी काटा, पाछै म्हारी काट
कै जाणेगा सित्तर वधव्रा, कै जाणैगा लोग
डूंग न्हार यो यूं भागो, ज्यू नीकळ भागो चोर
वुरज तोडकर बायर काढो वंधव्रा अेकै साथ
दो दिनमें मर ज्याव्रा, लोटिया। दुनी करैगी वात

ज फिरंगीनें वेरो पड ज्या, पाछो वो फिर ज्याय
तोप मुंहांणी म्हांनै चाडै, रहो कैदकै मांय
इतनी सुणकै डूंगजी स वो बोल्यो कडव्रा वैण
ईं मूडैको धणी लोटिया। म्हांनै आयो लेण ?
मरणैसूं जे डरै, लोटिया। तोपाको भै खाय
तेगो तेरो करे म्यानमे पूठो घरनै जाय

ध्यान किया और दो घडीके भीतर चहारदीवारी पर सीढी लगा दी। फिर चुने-चुने वीर लाल किलेमें कूद पड़े, पीछे-पीछे करणिया चल रहा था, आगे लोटिया जा रहा था।

इस प्रकार वे डूगसिंघ वाले बुर्जके पास पहुँच गये और आवाज दी—हे डूगजी! बोलता है तो बोल, वेड़ी काट दें। तब बायीं बुर्जमेंसे डूगजी बोला—मानो सिंह दहाड़ा—अरे लोटिया! मेरी वेड़ी काटनेसे नाम नहीं रखा जायगा, मेरे साथ कैदमें सत्तर कैदी हैं, उनकी वेड़ी पहले काट, किसीकी बहन-भानजी रो रही हैं, किसीकी मा रो रही हैं, किसीके छोटे बच्चे रो रहे हैं, किसीकी स्त्री रो रही है। कैदमें बैठा डूगजी कहता है—अरे लोटिया जाट! सुन, पहले तो इन कैदियों की वेड़ी काट, पीछे मेरी काटना, नहीं तो सत्तर कैदी क्या जानेंगे? लोग भी क्या जानेंगे? कहेंगे—सिंह जैसा डूगजी अैसे निकल भागा ज्यों चोर निकल भागता हो, बुर्जको तोड़कर सब कैदियोंको अेक

स्यार जणाऊं कांध चढियो मींडासिंघ सिरदार
आगै-आगै मुड्दा चाले, लारा जान-बरात
मवर्स आगै चाल्यो नाई बार घालतो जाय
कपनी साबके बागमें बा अरथी दयी उतार

अल्नण-चल्नण चिता चिणायी, नारेळांमें दाग
आरबार फिर जाट लोटिये लांपो दियो लगाय
धूंडको जद ढूंट उपड्यो, काप्यो कपनी साय
बाडे घाडे चढकर आयो, गुरजण कुत्ती लार
बुरी करी रे जानेत्यां ! थे मुड्दो दिया जळाय
मुड्दो-मुड्दो मत करो स यो सगळाको सिरदार
अबर्क मुड्दो के दियो स तो बाजेगी तरवार
ऊंचे कुळको राजवी, थोड बावन गढाको राव
सागी बीनको मामो मरग्यो मींडासिंघ सरदार
जोरजी वीदावत बोल्यो, हुयी और-सू-और
लाखाको पट्टायत मरग्यो, नहीं रामसू जोर

बराती पीछे चले। सबके आगे नाल्यिा नाई पुकर देता हुआ चला। कपनीके बागमें पहुँचकर उनने अरथी उतार कर रख दी।

फिर चदनकी चिता बनायी और नारियलोंके साथ दाह-संस्कार कर दिया। लोटिये जाटने चारों ओर फेरी लगाकर आग लगा दी। जब धुएंकी राशि उठी, कपनी-साहब कांप उठा। वह निपुच्छे घोड़े पर चढ कर आया, पीछे गुरजिन कुतिया थी। उसने आकर कहा— हे बरातियों ! तुमने बुरा किया जो मुर्देको यहा जला दिया।

राजपूत तैशमें आकर बोल उठे—मुर्दा-मुर्दा मत करो, यह सबका सरदार है, अबकी बार इसे मुर्दा कह दिया तो तलवार बज उठेगी। यह ऊचे घरानेका राजवशी है, बावन गढ़ोंका स्वामी है, दूल्हेका सगा मामा सरदार मेड़ासिंघ मर गया है। वीदावत जोरजी कहने लगा—और-का-और हो गया, लाखोंकी जागीरका स्वामी मर गया, रामसे कोई वश नहीं !

खाय कापरी फिरंगी बोल्यो नहीं मरणकी बूटी
तीन महीको तेयो कर यो बारा महीरी बाटी
तेरा महीको तेरो करके मेलो पाछो काठा
तीन दिनांको करां तीसरो, बारा दिनको बाटी
तेरा दिनको तेरो करके मेलां पोथां काठी

फिरंगी तो पाछो फिरयो, स कोड़, करी न ज्यादा बात
नाय भरोसो के करै स काइ, या रांघड़की जात

(८)

बाज्या ढोल बासळा झुरड़्या, पड्या ताजियां घाव
फिरंगी पकड़्यो ताजियां स मरदांका मांग्या दाव

कोठ्या बाद करमिय मीणै मातादीन ब्याधी
देय चढीबै मोमनै बा मीसरया रे लगायी
झंडा-झंडां धूळ पड़या वै छाव किलेरै मांय
बेरा-बेरा बटी करमियो, बागे कोटयो जाय
बोछै छै तो बोळ, बूंगकी ! देखी थारी काह

तब फिरंगी खबरी लाकर बोला—मरनेकी कोई दवा नहीं; तीन महीनेका तीजा कर दो बारह महीनेकी बाटी कर दो और तेरह महीनेका तेरा करके पोथों पर धीन रखो (वहांसे चले जाओ)। सरदारोंने कहा—तीन दिनोंका तीजा करेंगे बारह दिनकी बाटी करेंगे और तेरह दिनकी तरही करके पोथों पर धीन रखेंगे। फिरंगी यह सुनकर लौट गया उससे अधिक बात नहीं की, यह रांघड़ (राजपूत) की जात है भरोसा नहीं क्या कर बैठे ?

(८)

उधर ताजियोंकी सवारी निकली। ढोल बजे तासे खड़के। फिरंगी पकड़कर ताजियों के साथ गया इधर मर्दोंका दाव लगा। कोटिये बाद और करमिये मीणेने देवीका

वायी बुरजमें बोल्यो डूंगजी, जाणै धड़क्यो न्हार
म्हारी वेडी काट्या, लोटिया। ना निसरैगो नाव
म्हारी वंधमे सित्तर वंधवा, वाकी पैली काट
कैंकी रोवै वैन-भाणजी, कैंको रोवै माय
वधमें वैठ्यो कहै डूंगजी, सुण, रे लोट्या जाट।
पैलां तो वधवाकी काटा, पाछै म्हारी काट
के जाणैगा सित्तर वंधवा, के जाणैगा लोग
डूग न्हार यो यूं भागो, ज्यूं नीकळ भागो चोर
वुरज तोडकर वायर काढो वंधवा अकै साथ
वा दिनमें मर ज्यावा, लोटिया! दुनी करैगी वात

ज फिरंगीनै वेरो पड ज्या, पाछो वो फिर ज्याय
तोप मुंहांणी म्हांनै चाडै, रहो कैदकै मांय
इतनी सुणकै डूंगजी स बो बोल्यो कडवा वैण
ईं मूडैको धणी लोटिया। म्हांनै आयो लेण ?
मरणैसूं जे डरै, लोटिया। तोपाको भै खाय
तेगो तेरो करे म्यानमें पूठो घरनै जाय

ध्यान किया और दो घडीके भीतर चहारदीवारी पर सीढी लगा दी। फिर चुने-चुने वीर लाल किलेमें कूद पड़े, पीछे-पीछे करणिया चल रहा था, आगे लोटिया जा रहा था।

इस प्रकार वे डूगसिंघ वाले बुर्जके पास पहुँच गये और आवाज दी—हे डूगजी! बोलता है तो बोल, वेड़ी काट दें। तब वायीं बुर्जमेंसे डूगजी बोला—मानो सिंह दहाड़ा—अरे लोटिया! मेरी वेडी काटनेसे नाम नहीं रखा जायगा, मेरे साथ कैदमें सत्तर कैदी हैं, उनकी वेड़ी पहले काट, किसीकी वहन-भानजी रो रही हैं, किसीकी मा रो रही हैं, किसीके छोटे वच्चे रो रहे हैं, किसीकी स्त्री रो रही है। कैदमें वैठा डूगजी कहता है—अरे लोटिया जाट! सुन, पहले तो इन कैदियों की वेड़ी काट, पीछे मेरी काटना, नहीं तो सत्तर कैदी क्या जानेंगे ? लोग भी क्या जानेंगे ? कहेंगे—सिंह जैसा डूगजी अैसे निकल भागा ज्यों चोर निकल भागता हो, बुर्जको तोड़कर सब कैदियोंको अेक

इतणी बात सुणी जद लोट्यै — तन मन लागी लाय
छिणी-हथोड़ा लेय लोटियो — पड़ग्यो कड़कड़ी मांय
छिणियां सो छिणमिण पड़ै — धपक हथोड़ा माथ
अेक घड़ीमें काट्या लोटियै — बंधवा पूरा साठ
छिटर बंधवा काढिया जद — गया डूंगजीके पास
अब कांई कहो ? राजजी ! थांरी — पूरण होगी आस ?
आंख्यां सांइयो पींजरो र ! — करण्यै काटी बेड़ी
हाथ पकड़ बायर करया, काइ — वो बंधवांको हेली
घोड़ी मगांगी हरी मौज थी — आबो थो पकड़ाय
डूंगजी मैं फिरंगी मारू — मंडू बदळो काढ

साथ बाहर निकाल दे लोटिया ! हम तो भले दिनमें मर जायगे पर दुनिया बात करेगी।

लोटियेने उत्तर दिया—यदि फिरंगीको पता लग गया तो वह वापिस लौट आयगा हम तोपके मुंह पर चढ़ा देगा और तुम जेल-के जेलमें रहोगे। इतनी बात सुनते ही डूंगजी बड़ी कड़वी बात बोल उठा—अरे लोटिया ! इस मुल्क धनी होकर (यह मुंह लेकर) तू मुझे छुड़ाने आया है ! लोटिया ! यदि तू मरनेसे डरता है, तोपोंका भय लगता है तो तेरी तलवार म्यानमें कर ले और उल्टा घरको चला जा !

जब लोटियेने यह बात सुनी तो उसके तनमें और मनमें आग-सी लग गयी। वह छैणी और हथौड़ा लेकर कड़कड़ी जाकर पड़ा (हाथ कटकटाकर बेड़ी काटनेके काममें लग गया)। छैनियां छिनमिन शब्द करती चलने लगीं, धायम हथौड़े मसालक चमकने लगे। अेक घड़ीमें लोटियेने पूरे साठ कैदियोंको निकाल बाहर किया। जब सत्तर कैदियोंको बाहर निकाल चुका तो डूंगजीके पास गया और बोला—हे राजजी ! अब क्या कहते हो ? तुम्हारी इच्छा पूरी हो गयी या नहीं ? फिर लोटियेने पिंजरा तोड़ा और करणियेने बेड़ी काटी और दोनोंने उन मित्रको हाथ पकड़कर जुल्के बाहर कर दिया।

सुनकर ही डूंगजी बोला—मेरी घोड़ी लाकर दे दो तलवार पकड़ा दो मैं ढूंढ ढूंढ कर फिरंगीको मारूंगा और बदला निकाल लूंगा।

बंधवै आगे बंधवो चालया, सगळा सागै ऊठ
चोइस बंधवा साथे उळट्या, नीसरणी गयी टूट
नीसरणी तो दगो दियो, अब दरवाजैनै चालो
भली करी, रे बंधवा ! थे तो कामकर दियो कालो
कोई ले लो छुरी-कटारी, कोई-बरछी भालो
अेकै सागै पडो उळटकै, खवो खवैसूं जोडो
रामा-दळ ज्यूं लंका तोडी, यूं दरवाजो तोडो

दरवाजेकै मूंडै आगै अडी खाट-सूं-खाट
दरवाजैकी मोरी आगै खूब चलै तरवार
तरवारयाका उडै टूकडा, लडै लोटियो जाट
सेखावत बीदावत भूमै, लडै नरूका साथ
मेडतिया-मेडतिया झगडै, झगडै तंवर-पंवार
लडै गुसाई दादू-पंथी, भली चलावै वार
वाल्यो नाई भाटा मारै चाकर चरवादार
भलां-भलांका टूक उडावै, लडै डूंगजी न्हार
लोट्यो जाट करणियो मीणो, वध-वध वावै तरवार

फिर कैदीके आगे कैदी हो गया और सब अेक साथ उठ कर चले। चौबीस कैदी अेक साथ टूट पडे जिससे सीढी टूट गयी। तब बोले—सीढीने तो धोखा दिया, अब दरवाजेकी ओर चलो। कैदियों! तुमने खूब किया, काम बिगाड दिया, अब कोई छुरी-कटार और कोई बरछी-भाला ले लो, अेक साथ टूटो, कंधेसे कंधा भिडा दो, रामकी सेनाने जिस प्रकार लंकाको तोडा था उसी प्रकार दरवाजा तोडो।

दरवाजेके सामने खाट-से-खाट अड गयी। दरवाजेकी खिडकीके सामने खूब तलवार चलने लगी। तलवारोंके टुकडे उडने लगे। लोटिया जाट लडने लगा। शेखावत और बीदावत, और साथमें नरूके लड रहे थे। मेडतिये-मेडतिये, तवर और पवार झगड रहे थे। गुसाई और दादूपंथी भी लड रहे थे। खूब चोटें कर रहे थे। बालिया नाई और नौकर-चाकर पत्थर फेंक रहे थे। सिंह जैसा डूंगजी लड रहा था जो अच्छे-अच्छों के

चोइस तो पूरबिया काट्या सोळा चोकीदार
सित्तर तो काबळिया काट्या, 'ठारा मुगळ पठाण
ताइ आगरो बाबर निकस्या, बोल्या लै-लैकार
राम-दुहाई फिरी किलेमें, रोकणियो कोइ नांय

(६)

आगरैनै पूठ देय बै चाल्या राठूँ-राव
पंमचीका तो पांव सूजग्या चाल्यो कोनी जाय
आगरैके साक किलेमें पाव करी वां मोटी
असी कोसके चढ्यां डूंगरो करी मुं'डाणे रोटी
फौवा यो बाटी करी स पोहानै दीनी डाळ
म्हांका पड़िया पांतिया स को आया सुसीका साळ
काट्यो बाट करणियो मीणो बपड़ांनै समझाय
म्हारो फिरंगी लारो करसी आप-आपने जाय

युद्ध करके उड़ा देता था। लोरिया बाट और करणिया मीणा बढ़ बढ़कर तलवार चला रहे थे। उनने चौबीस पूरबिये सिपाही सोलह चौकीदार सत्तर काबुली और अठारह मुगल तथा पठान मार डाले। इस प्रकार आगरेके किलेको तोड़कर बाहर निकल गये और जय-जयकार करने लगा। किलेके भीतर रामकी दुहाई फिर गयी रोकनेवाला कोई नहीं रहा।

(६)

आगरेकी ओर पीठ करके वे राठौरराव चले। कैदियोंके पैर सूज गये। उनसे चला नहीं जाता था। आगरेके आकिलेमें उनने बड़ी बात की। अस्सी कोस पर पहुँचे हुए चढ़कर डूंगरोने मुंडाणे जाकर पहुँचकर रोटी की। फौजके लोगोंमें बाटी बनायी और पाहोंको डाल दी। गहरी पातें पड़ीं। खुशीके सास आये। फिर लोटिये बाट और करणिये मीणेने कैदियोंको समझाया—फिरंगी हमारा पीछा करेंगे इसलिये अब अपना अपना मार्ग देखो।

(१०)

सीकर-माकर नीसस्या, वां गारो रामगढ फेट
च्यार तो चपडासी पकड्या, सोळा पकड्या सेठ
हाथ जोड सेठाण्या बोली, राखो म्हां पर हेत
थे छो बेटा उदैसिंघका, म्हे छा ज्याका सेठ
घोडानै तो घास घतावां, थानै चूरो-भात
गादी-गिदवा देवां बैसणा, घणी करा मनवार

सेठाण्यांकी अरज सुणी जद सोळी पड़गी रीस
सेठानै तो मुकत कर दिया गुन्हा कस्या बगसीस
कई दिनाका बिछड्या म्हे तो जावां बठोठकै मांय
राणी ऊभी काग उडावै, परजा जोवै बाट

बठोठ पूग्या डूंगजी धै दळ-वादळ ले साथ
राणी महला ऊतरी स था भर मोत्याको थाळ
आघा पधारो, सायबा ! थानै मोत्यां लेवूं वधाय

---

(१०)

वे सीकरमेंसे होकर निकले और रामगढ़के अेक फेंट भारी। वहा चार सरकारी चपरासी और सोलह सेठ पकड़े। तब सेठानिया हाथ जोड़कर कहने लगीं—हम पर प्रेम रखो, तुम उदयसिंघके बेटे हो जिनके हम सेठ हैं, तुम्हारे घोड़ोंको घास डलवायेंगे, तुमको चूरा-भात जिमायेंगे, गादी-तकिये बैठनेको देंगे और खूब मनुहारें करेंगे।

सेठानियोंकी अर्ज सुनी तो रोष ठंडा गया। सेठोंको छोड़ दिया और अपराध क्षमा कर दिये। कहा—हम बहुत दिनोंके बिछुड़े हैं, बठोठके गढ़में जाते हैं, रानी खड़ी कौवे उड़ाती है (प्रतीक्षा करती है) और प्रजा बाट जोह रही है (महमानी खानेको नहीं ठहर सकते)।

डूंगजी बादलों सी सेना साथ लिये बठोठ पहुँचे। रानी बधानेके लिअे मोतियों-से थाल भरकर गढसे उतरी और बोली—हे स्वामी ! आगे बढ़ो, मैं मोतियोंसे बधा दूं।

म्हांने मती बधाओ, राणी। बधाओ कोटघो बाट
म्हे आपे नहिं आया, म्हांने ल्यायो कोटियो बाट

(११)

डूँग न्हार जोधाणे बैठो, ज्वारो बीकानेर
काके-भतीजां मनमें रैगी लूँटणकी अजमेर

डूंगजीने कहा—हे रानी! हमें मत बधाओ, कोटिये बाटको बधाओ। हम अपने आप नहीं आये, हमें कोटिया बाट लाया है।

(११)

फिर डूंगसिंह जोधपुरमें आ बैठा और जवारसिंह बीकानेरमें। चाचा और भतीजा दोनोंके मनमें अजमेर लूटनेकी इच्छा रह गयी।

राजस्थानी शब्दांरी जोड़णी *

१ तत्सम शब्द

१ संस्कृत तत्सम शब्दांरी जोड़णी मूल मुजब करणी—

उदाहरण—पति गुरु कृपा दृष्टि शेष रोष यश अक्षर ॐकार ज्ञान।

२ संस्कृतरा तत्सम शब्द प्रथमा अेकवचनरा रूपमें लेणा, आगे विसर्ग हुवै तो उणनै छोड देणो—

उदा०—पिता माता दाता आत्मा राजा धनी स्वामी लक्ष्मी श्री मन यश।

३ संस्कृतरा व्यंजनांत शब्द स्वरान्त करनै लेणा—

उदा०—विद्वान धनवान जगत परिषद सम्राट अर्थात पश्चात किंचित।

विशेष—इसा शब्द समासमें पूर्वपद होयनै आवै तो मूल संस्कृत मुजब लिखणा—

उदा०—पश्चात्पद, किंचित्कर, जगत्पति, विद्वद्वर।

४ संस्कृत तत्सम शब्दामें दो स्वरांरै बीचमें जको ड ल और व आवै उणनै ड़ ळ और ब लिखणो—

उदा०—पीड़ा व्रीड़ा क्रीड़ा क्रोड, जळ बळ काळ माळा बाळक निष्फळ निर्मळ पाताळ, पव्रन भव्रन प्रव्रर कवि देवी देव्रेन्द्र तरुव्रर सरोव्रर।

२ तद्भव शब्द

५ भाषामें तद्भव और तत्सम दोनूं रूप चालता हुवै तो दोनूं स्वीकार करणा—

उदा०—भाग्य—भाग, रात्रि—रात, वार्ता—वारता, यश—जस।

६ तद्भव शब्दामें ऋ ङ ञ श ष क्ष ज्ञ इसा आखरांरो प्रयोग नहीं करणो—

अपवाद—राजस्थानीरी कई बोलियामें श आखररो प्रयोग देखीजै है, उण बोलियारा अवतरण आवै जठै श आखररो प्रयोग करणो—

उदा०—जाईशा।

---

* 'संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण'रो अेक परिशिष्ट।

११ तद्भव शब्दरा अन्तमें अनुप्राणित ह ध्वनि आवै और उणरो पूर्व स्वर दीर्घ हुवै तो ह ध्वनिनै नहीं लिखणी, उणरो लोप कर देणो, अथवा उणरी जाग्या सज्ञा हुवै तो य और क्रिया हुवै तो व कर देणो—

उदा०—ठा रा सा सीं मॅ खे मे' खो छो पो मो लो।
चा चाय मां मांय रा राय सा साय ।
ढा ढाव़णो वा वाव़णो दू दूव़णो लू लूव़णो
मे मेव़णो ढो ढोवणो पो पोव़णो मो मोव़णो
सो सोव़णो।

विशेष—नाह कोह इण शब्दामें ह श्रुति नहीं, पूरी ह ध्वनि है, इण वास्तै इणानै नाको नहीं लिखणा।

१२ तद्भव शब्दामें ह श्रुतिसूं पूर्व अकार हुवै तो दोनानै मिलायनै अॅ कर देणा—

उदा०—गहणो	**गैणो**	**गहरो**	**गैरो**	**चहरो**	**चैरो**
जहर	**जैर**	**कहर**	**कैर**	**सहर**	**सैर**
लहर	**लैर**	**महर**	**मैर**	**नहर**	**नैर**
बहन	**बैन**	**वहम**	**वैम**	**रहम**	**रैम**
सहणो	**सैणो**	**कहणो**	**कैणो**	**वहणो**	**वैणो**
महणो	**मैणो**	**रहणो**	**रैणो**	**लहणो**	**लैणो**
महल	**मैल मौल**	**पहर**	**पैर, पौर**		

१३ तद्भव शब्दाम अलपप्राण और महाप्राणरो सयोग हुवै जद महाप्राणनै दोलड़ो लिखणो—

उदा०—अख्खर पख्ख जख्ख सख्ख भख्ख लख्ख, बध्ध पध्धड़, जुम्फ बुम्फ तुम्फ सुम्फ मुम्फ, पथ्थर मथ्थ कथ्थ सथ्थ, बफ्फ, सभ्भ लभ्भ अभ्भ दभ्भ।

अपवाद—च-छ रो, ट-ठ रो, अथवा ड-ढ रो सयोग हुवै जद दोलड़ा नहीं लिखणा—

उदा०—अच्छर मच्छर सच्छ गच्छ भच्छ रच्छ, चिट्ठी दिट्ठ मिट्ठ, कड्ढ वड्ढ दड्ढ।

१६ दो स्वरां बीचमें जको व हुवै उणनै व लिखणो—

उदा०—सांव़रो, भंव़रो, गंव़ार, गांव़, नांव, धूंव़ो, चाव़, राव़, नाव़, सेव़णो, मोव़न, कूव़ो, गाव़णो, आव़णो, जाव़णो, दूव़णो, सीव़णो, पीव़णो, देव़णो, लेव़णो ।*

२० शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ल्ल (संस्कृतमें ल्य, ल्व, ल्ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ल लिखणो तथा प्राकृतमें ल (संस्कृतमें ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ळ लिखणो—

उदा०—कल्य	कल्ल	काल	काल	काळ
गल्ल	गल्ल	गाल	गालि	गाळ
मल्ल	मल्ल	माल	माला	माळ
शल्य	सल्ल	साल	शाला	साळ
	पल्ल	पाल	पाल	पाळ
	झल्ल	झाल	ज्वाला	झाळ
भद्रक.	भल्ल	भलो	भाल	भाळ
भल्लकः	भल्लउ	भालो	सकलक	सगळो
मूल्य	मोल्ल	मोल	शृगाल	स्याळ
पल्ली	पल्ली	पाली	मालिक	माळी
बिल्व	बिल्ल	बील	जालिकक	जाळियो
चल्	चल्ल	चालणो	क्लेश	कळेस
आर्द्रक	अल्लउ	आलो	कलश	कळस
कल्याण	कल्लाण	कल्याण	कालुष्य	काळख
		किल्लयाण	पलाश	पळास

विशेष—विशाल विलास लालमा इत्यादि शब्द तत्सम है, तद्भव नहीं ।

---

* ब, व और व़ रा नियम संक्षेपमें—

(१) संस्कृतमें ब हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
संस्कृतमें द्व, र्व व्य हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
संस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें ब नहीं लिखणो ।

(२) शब्दरा आरंभमें आवै जद व लिखणो ।
शब्दरा मध्य अथवा अंतमें आवै जद व़ लिखणो ।

११ तद्भव शब्दरा अन्तमें अनुप्राणित ह ध्वनि आवै और उणरो पूर्व स्वर दीर्घ हुवै तो ह ध्वनिनै नहीं लिखणी, उणरो लोप कर देणो, अथवा उणरी जाग्या संज्ञा हुवै तो य और क्रिया हुवै तो व कर देणो—

उदा०—ठा रा सा सीं मँ खे मे' खो छो पो मो लो।

घा चाय मां मांय रा राय सा साय ।

ढा ढावणो वा वावणो दू दूवणो लू लूवणो

मे मेवणो ढो ढोवणो पो पोवणो मो मोवणो

सो सोवणो।

विशेष—नाह कोह इण शब्दामे ह श्रुति नहीं, पूरी ह ध्वनि है, इण वास्तै इणानै नाको नहीं लिखणा।

१२ तद्भव शब्दामें ह श्रुतिसू पूर्व अकार हुवै तो दोनानै मिलायनै अै कर देणा—

उदा०—गहणो	गैणो	गहरो	गैरो	चहरो	चैरो
जहर	जैर	कहर	कैर	सहर	सैर
लहर	लैर	महर	मैर	नहर	नैर
वहन	वैन	वहम	वैम	रहम	रैम
सहणो	सैणो	कहणो	कैणो	वहणो	वैणो
महणो	मैणो	रहणो	रैणो	लहणो	लैणो
महल	मैल मौल	पहर	पैर, पौर		

१३ तद्भव शब्दामे अलपप्राण और महाप्राणरो संयोग हुवै जद महाप्राणनै दोलड़ो लिखणो—

उदा०—अख्खर पख्ख जख्ख सख्ख भख्ख लख्ख, बध्ध पध्धड़, जुम्म्फ बुम्म्फ तुम्म्फ सुम्म्फ मुम्म्फ, पथ्थर मथ्थ कथ्थ सथ्थ, बफ्फ, सभ्भ लभ्भ अभ्भ दभ्भ।

अपवाद—च-छ रो, ट-ठ रो, अथवा ड-ढ रो संयोग हुवै जद दोलड़ा नहीं लिखणा—

उदा०—अच्छर मच्छर सच्छ गच्छ भच्छ रच्छ, चिट्ठी दिट्ठ मिट्ठ, कड्ढ वड्ढ दड्ढ।

१६ दो स्वरांरै बीचमें जको व हुवै उणनै व़ लिखणो—

उदा०—सांव़रो, भंव़रो, गंव़ार, गाव़, नांव़, धूँव़ो, चाव़, राव़, नाव़, सोव़णो, मोव़न, कूव़ो, गाव़णो, आव़णो, जाव़णो, दूव़णो, सीव़णो, पीव़णो, देव़णो, लेव़णो ।*

२० शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ल्ल (संस्कृतमें ल्य, ल्व, ल्ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ल लिखणो तथा प्राकृतमें ल (संस्कृतमें ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ळ लिखणो—

उदा०—				
कल्य	कल्ल	काल	काल	काळ
गल्ल	गल्ल	गाल	गालि	गाळ
मल्ल	मल्ल	माल	माला	माळ
शल्य	सल्ल	साल	शाला	साळ
	पल्ल	पाल	पाल	पाळ
	झल्ल	झाल	ज्वाला	झाळ
भद्रक	भल्ल	भलो	भाल	भाळ
भल्लकः	भल्लउ	भालो	सकलक	सगळो
मूल्य	मोल्ल	मोल	शृगाल	स्याळ
पल्ली	पल्ली	पाली	मालिक	माळी
बिल्व	बिल्ल	बील	जालिकक	जाळियो
चल्	चल्ल	चालणो	क्लेश	कळेस
आर्द्रक	अल्लउ	आलो	कलश	कळस
कल्याण	कल्लाण	कल्याण	कालुष्य	काळख
		किल्ल्याण	पलाश	पळास

विशेष—विशाल विलास लालमा इत्यादि शब्द तत्सम है, तद्भव नहीं ।

---

* ब, व और व़ रा नियम संक्षेपमें—

(१) संस्कृतमें ब हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
संस्कृतमें द्व, र्व व्य हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
संस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें ब नहीं लिखणो ।

(२) शब्दरा आरंभमें आवै जद व लिखणो ।
शब्दरा मध्य अथवा अंतमें आवै जद व़ लिखणो ।

अंडउ	ईंडो	साटिका	साडिआ	साड़ी
कुंडिआ	कूँडो	वाटिका	वाडिआ	वाडी
सुंड	सूँड	मुकुट	मउड	मोड़
मुड	मूँडणो	कपाट	कवाड	किंवाड

२३ तद्भव शब्दामें ड़ अथवा ळ रै आगै ण आवै उणनै सुविधानुसार न अथवा ण लिखणो—

उदा०—घडनो जडनो पडनो बळनो गळनो तळनो जोडनो सीड़नो जोड़नी माळनी माळन।

३ व्याकरणरा रूप

२४ प्रत्यय मूल शब्दारै साथै मिलायनै लिखणा, न्यारा नहीं लिखणा—

उदा०—उदारता टाबरपणो गाडीआळो वागवान।

२५ परसर्ग अथवा विभक्ति-प्रत्यय मूळ शब्दारै साथै मिलायनै लिखणा—

उदा०—रामनै पोथीमें बरसू मिनखरो।

२६ सयुक्त क्रियारा दोनू अशानै न्यारा-न्यारा लिखणा—

उदा०—ले जावणो, जाया करणो, कर देणो, आयो चावै, देख लेसी, कर नाखैला, जीमता जासी, लियाँ फिरतो हो, आवै है, करतो हो, पढतो हुवैला, देखतो हुवै, उठियो हो, जावाँ हा।

२७ समासरा शब्दानै मिलायनै लिखणा अथवा बीचमें योजकचिह्न (–) लिखणो—

उदा०—सीताराम, गुणदोष, राजपुत्र, चंद्रशेखर, आवजाव, सीता-राम, गुण-दोष, हिम-गिरि, आवणो-जावणो, आवै-जावै, अठै-उठै, दरसण-परसण।

२८ अव्यय शब्द दोय मात्रा देयनै लिखणा—

उदा०—आगै लारै पछै साथै सागै वास्तै नीचै सटै खनै चौड़ै जुमलै पाखै नेड़ै वगै।

४ लिपि

३३ अ झ ण मराठीरा लिखणा, हिंदीरा नहीं लिखणा -

३४ अ झ ल हिंदीरा लिखणा, मराठीरा नहीं लिखणा—

३५ ह श्रुति दरसावणी हुवै तो लोपक चिह्न (’) वापरणो —
उदा०—ना’र, सा’ब, का’णी।

३६ तद्भव शब्दांमें अै औ रो संस्कृत जिसो उच्चारण हुवै जद अइ-अउ लिखणा—
उदा०—गइया, कनइयो, भइयो—इयांनै गैया कनैयो भैयो नहीं लिखणा।

३७ अै-औ रो देशी उच्चारण हुवै जद अै-औ लिखणा—
उदा०—घैन, रैंवला, और।

३८ अै-रो देशी उच्चारण हुवै जद उणनै अ-सू नहीं दरसावणो—
उदा०—कैवै है इणनै कव़ह नहीं लिखणो।

३९ र्‌+य न पूर्व आखर पर जोर पड़ै जद र्य लिखणो, और जोर नहीं पड़ै जद रय लिखणो —
उदा०—चर्य वर्य कार्य भार्या
चरयो वरयो वकारयो भारयो।

४० अनुस्वारनै बडी मींडीसू और अनुनासिकनै छोटी मींडीसू दरसावणो—
उदा०—हंस (पक्षी) दांत (दमन करयोडो)
हँसणो दाँत

४१ तद्भव शब्दामें अनुस्वाररी जागया पचम अक्षर नहीं लिखणो—
उदा०—डंडो, चंचळ, चंगो, फंदो, संको, तंग, पंखो इणांनै डण्डो, चञ्चळ, चङ्गो, फन्दो, सङ्को, तङ्ग, पङ्खो नहीं लिखणा।

५ विदेशी शब्द

४२ अरबी, फारसी अंग्रेजी वगेरे विदेशी भाषामांथी शब्द तद्भव रूपमें स्वीकार करवा

उदा०—कागळ, मालूम जमी मालम, दसकत मसीत मजूर, सीसी, सामळ, अगस्त, सितंबर, बंक, करंट, रपट, रपोट दरजण, काप्टेप, कुनैन टिगस छाट गिलास।

४३ विदेशी भाषामांथा शब्द वापरतो उन भाषामांथा विशिष्ट उच्चारण दरशावन वास्ते चिह्न नहीं वापरवा—

उदा०—अगस्त	लिखवो	ऑगस्ट	नहीं लिखवो
कालेज	लिखवो	कॉलिज् नहीं	,,
मजूर	लिखवो	मज़ूर ,,	,,
दफतर		दफ़्तर ,,	,,
मुगल	,,	मुग़ल ,,	,,
खबर	,,	ख़बर ,,	
फरक	,,	फ़र्क़ ,,	,,
मालम	,,	मअ़लूम ,,	,,
हुकम	,,	हुक्म हुक़्म	

अपभ्रंश भाषाके संधि-काव्य और उनकी परम्परा

[अगरचंद नाहटा]

(१) प्रारंभिक कथन

अपभ्रंश भाषा उत्तर-भारतकी बहुत-सी प्रमुख भाषाओंकी जननी है अत. उन भाषाओंके समुचित अध्ययनके लिये अपभ्रंशके सांगोपांग अध्ययनकी अत्यन्त आवश्यकता है। हर्षकी बात है कि कुछ वर्षोंसे विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है और अपभ्रंश-साहित्यके अन्वेषण, अध्ययन अेवं प्रकाशन-का कार्य दिनोंदिन आगे बढ़ता जा रहा है। प्रोफेसर हीरालालजी जैनका अपभ्रंश भाषाका बहुत अच्छा अध्ययन है। इसी प्रकार पं० परमानन्दजीके अन्वेषणसे अनेक नवीन तथा अज्ञात अपभ्रंश ग्रन्थोंका पता लगा है। बहुत दिनों-से मेरी इच्छा थी कि अपभ्रंश साहित्य पर पूर्ण प्रकाश डालनेवाला इतिहास-ग्रंथ तय्यार किया जाय। दो-तीन वर्ष हुअे मैंने उक्त दोनों विद्वानोंको पत्र लिखकर अपभ्रंश साहित्यका इतिहास लिखनेका अनुरोध भी किया था। उत्तरमें प्रोफेसर साहबने सूचित किया कि उनने इस विषयमे अेक विस्तृत निबंध लिखकर नागरी-प्रचारिणी-पत्रिकामें प्रकाशनार्थ भेजा है। पं० परमानन्दजीने लिखा कि वे अेक अैसा ग्रन्थ लिखनेकी तय्यारी कर रहे हैं। अत. मैंने विचार किया कि इन दोनों अधिकारी विद्वानोंकी कृतियाँ प्रकाशित होने पर ही मेरा कुछ लिखना उचित होगा और मैंने अपना इस संबंधका शोध-कार्य स्थगित कर दिया। इसी बीचमें शान्ति-निकेतनमें पं० हजारीप्रसाद द्विवेदीसे भेंट होने पर उनने अपभ्रश साहित्य पर लिखनेके लिअे स्नेहानुरोध किया परन्तु अपभ्रंश साहित्य दिगंबर जैन विद्वानोका रचा हुआ ही अधिक है और मेरी ओर दिगंबर साहित्यकी कमी है अत. इस कार्यको हाथमें लेना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

अभी कुछ दिन पूर्व नागरी-प्रचारिणी-पत्रिकामें प्रकाशित प्रोफेसर हीरालालजी का निबन्ध दृष्टिगत हुआ और विश्वभारती आदि पत्रिकाओंमें श्रीयुत रामसिंह

तोमरके लेख भी पढ़नेमें आये। इनसे पुराने विचारको नवीन प्रेरणा मिली और इस विषयमें शोधका कार्य आरम्भ किया जिसके फल-स्वरूप पांच-सात निबंध लिखे गये जिनको पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करनेका श्रीगणेश इस निबंध द्वारा किया जा रहा है।

पं० परमानन्दजी इस विषयमें क्या नवीन जानकारी देते हैं यह जानना अभी शेष है अतः अभी मैं उन्हीं बातों पर प्रकाश डालूंगा जिनके सम्बन्धमें इन दोनों दिगंबर विद्वानोंकी जानकारी बहुत सीमित होगी, अर्थात् श्वेताम्बर विद्वानोंके रचे हुये साहित्य पर। यदि समय और संयोगोंने साथ दिया तो विशेष विचार भविष्यमें किया जायगा।

अपभ्रंश-साहित्यकी चर्चा करते समय श्वेताम्बर विद्वानोंकी अपभ्रंश साहित्यकी महान सेवाको भुलाया नहीं जा सकता। जिस प्रकार दिगंबर ग्रन्थ कारोंने अपभ्रंशके बड़े-बड़े महाकाव्य लिखे हैं उसी प्रकार श्वेताम्बर विद्वानोंने विविध नामों और प्रकारों वाले लघु काव्य लिखनेमें कौशलका परिचय दिया है। परवर्ती श्वेतांबर साहित्यकारोंको अपभ्रंशके इस लघु-काव्य-साहित्यसे बड़ी भारी प्रेरणा मिली जिससे वनन इन विविध परंपराओंको अक्षुण्ण ही नहीं रखा किन्तु वे उन्हें विकसित करने और नये-नये अनेक रूप देनेमें समर्थ हुये। संधिकाव्यकी परंपरा भी ऐसी ही परंपरा है और उसीके विषयमें प्रकाश डालनेका प्रयत्न इस निबंधमें किया जा रहा है।

प्रस्तुत लेखके लिखनेकी प्रेरणा मुनि श्री जिनविजयजीके एक पत्रसे मिली जिसमें उनने लिखा था—

मेरी एक विद्यार्थिनी, जो Ph. D का अभ्यास कर रही है, वह कुछ अपभ्रंश आदिकी संधियों जैसे आनन्द संधि, भावना संधि, केशी-गोयम-संधि इत्यादि प्रकारके जो संधि प्रकरण हैं, उनका एक संग्रह कर रही है और संधिके स्वरूप आदिके विषयमें शोध कर रही है। अभी उसने जिक्र किया और आपको पत्र लिखने बैठा। इससे स्फुरित हुआ कि आपके पास ऐसी बहुत-सी कृतियां होंगी। अगर हों तो मुझे दें ताकि उसका अच्छा उपयोग होगा। चंदनदास-संधि मुनाइ-संधि आदि ऐसे अनेक प्रकरण हैं। पाटण भण्डारमें कुछ मलिय हैं। उनको भी यथावकाश प्राप्त करनेका प्रयत्न करूंगा। पर इससे पहले आपके पाससे जल्दी मुकमताके साथ मिल सकेंगी ऐसी आशासे आपको लिख रहा हूं।

मुनिजीका अनुमान सही निकला। अपने संग्रहकी सूचीको ध्यानसे देखने पर उसमें बहुत बडी संख्यामें संधि-काव्य प्राप्त हुओ। अपभ्रंशके संधि-काव्योंके साथ-साथ अठारह-बीस परवर्त्ती संधिकाव्य भाषाके भी उपलब्ध हुओ। इनके अतिरिक्त बीकानेरके बृहद् ज्ञानभंडार आदि अन्यान्य संग्रहोंमें भी संधिकाव्योंकी अनेक प्रतियाँ विद्यमान हैं जिनमेंसे कई अेक नवीन भी हैं।

(२) संधि नामका अर्थ

अपभ्रंशमें संधि शब्द संस्कृतके सर्ग या अध्यायके अर्थमें आता है। आचार्य हेमचन्द्र लिखते हैं—

पद्यं प्राय संस्कृत-प्राकृताऽपभ्रंश-ग्राम्य-भाषा-निबद्ध-भिन्नान्त्यवृत्त-सर्गाऽऽश्वास-संध्यवस्कंधक-बंधं सत्संधि शब्दार्थ-वैचित्र्योपेतं महाकाव्यम्।

इससे जान पडता है कि संस्कृतके महाकाव्य सर्गोंमें, प्राकृतके महाकाव्य आश्वासोंमें, अपभ्रंशके महाकाव्य संधियोंमें, और ग्राम्यभाषाके महाकाव्य अवस्कंधोंमें विभक्त होते थे। परवर्त्ती कवियोंने अेक संधिवाले खंडकाव्योंको संधिकाव्य नाम दिया।

महाकाव्यका प्रत्येक संधि अनेक कडवकोंमें विभक्त होता था। इन संधिकाव्यों-मेंसे कई कडवकोंमें विभक्त हैं, कई नहीं हैं।

(३) अपभ्रंशके संधि-काव्य

हमारी शोधसे अभी तक नीचे लिखे अपभ्रंशके संधिकाव्योंका पता चला है—

(१) अनाथि-संधि

कर्त्ता—जिनप्रभ सूरि

समय—संवत १२९७ के लगभग।

कथावस्तुके लिअे उत्तराध्ययन सूत्र देखना चाहिअे।

आदि—जस्स ज्जवि माहप्पा परमप्पा पाणिणो लहु हुंति
त तित्थ सुपसत्थं जयइ जअे वीर-जिण-पहुणो

बिसअेहिं विनडिउ कसाय-जगडिउ हा अणाहु तिहुयण भमइ
जो अप्प जाणइ सम-सुहु माणइ अप्पारामि सु अभिरमइ

रायगिहि नयरि सेणीय राउ गुणमंदिर निवेसिय वीयराउ
सो भन्न दिवसि कयाणि पउ मुणि विक्खवि पणमइ ममिय-मणु
अंत— चाड पउ-सरणु गमणो दाणाइ सु धम्म पउ पाईव
सीलंग-रहारुढो जिणपह पहिओ सया सुहिओ
अणामिया-संधि ॥ कलश ॥२॥

(२) जीवानुशास्ति संधि

कर्ता—जिनप्रभ

आदि—जस्स महाणकदवि तव सिरि-समरुकिया जिमा हुंति
सो जिणं पि अणागयो संयो महारगो जयइ ॥१॥
मोहारिहि अगहिय विसयहिं विमडिय
तिक्ख-दुक्ख-लडिय सडियइं चिर।
संसार विरत्तइं पसमिय चित्तइं
सत्तइं देमि गुणहिं मिर ॥२॥

अंत—इय विविह-पयारिहिं विहि-अणुसारिहिं
मारिहिं जिणपहु मणुसरहु
सुत्तेण य पवरिहिं आणासु धरिहिं
भवियण भव-सायरु तरहु ॥१८॥
जीवानुशास्ति-संधिः समाप्तः

(३) मयणरेहा-संधि

विस्तार—कडवक ६

कर्ता—जिनप्रभ

समय—संवत १२९७, आश्विन शुक्ला ६

आदि—मिलणम-नाण मिहाणो पसम-पहाणो विवेय-सनिहाणो
दुग्गाइ-दार पिहाणो जिण-धम्मो जयइ सुह-कामो ॥१॥
सुमरिवि जिण-सासणु सुह सिवि सासणु
सिरि-नमि महरिसि मणि धरिवि
पभणिसु संखेविहिं मयणरेह-महा-सइ-चरिउ ॥२॥

अंत—असा महा-सईओ संधी सघीव सजम-निवस्स
जं नमि-निवरिसणा सह ससफरा खीर सजोगो ॥२॥
वारह-सत्ताणवओ वरिसे आसोअ-सुद्ध-छट्ठिओ
सिरि-संघ-पत्थणाओ अेयं लिहियं सुआभिहियं ॥३॥

मयणरेहा-संधि समाप्तः ॥

४ वज्रस्वामि-संधि

कर्त्ता—वरदत्त (?)

आदि—अह जण निसुणिज्जउ कन्नु धरिज्जउ
वयरसामि-मुणियर-चरिउ

अंत—मुणिवर वरदत्ति जाणहर भत्ति वयरसामि—गणहर—चरिउ।
साहिज्जहु भावि मुच्चहु पावि जि तिहयणु निय-गुण-भरिउ ॥६६॥
चरिउ सुसारउं भविय पियारउं वइरसामि-गणहर—चरिउ।
जो पढइ कियायरु गुण-रयणारु सो लहु पावइ परम पउ।

वइरसामि-संधिः समाप्त. ॥

(५) अंतरंग-सन्धि

कर्त्ता—रत्नप्रभ

आदि—
पणमवि दुह-खंडण दुरिय-विहंडण जगमंडण जिण सिद्धिठिय
मुणि-कन्न-रसायणु गुण-गण-भायणु अंतरंग मुणि संधि जिय ॥१॥
इह अत्थि गामु भव-वास णामु बहु-जीव-ठामु विसयाभिरामु
दीसंति जत्थ अणदिट्ठ छेह बहु-रोग-सोग-दुहु जोग-गेह ॥२॥

अंत—अहि अंतह कारणु विस-उत्तारणु जं गुलिमंतह पढणु जिम
कय-सिव-सुह-संधिहि अेह सुसंधिहि चिंतणु जाणु भविय। तिम ॥१८॥

इति अंतरंग-संधि समाप्त । इति नवमोधिकार ॥

(६) नर्मदासुंदरी-सन्धि

कर्त्ता—जिनप्रभ-शिष्य

समय—संवत १३२८

आदि—
अज्ज वि जस्स पहावो वियलिय-पावो य ऊलिय-पयावो
तं वद्धमाण—तित्थ नदउ भव—जलहि—वोहित्थ ॥१॥

पणमवि पणइ वइ वीर जिणवइ चरण कमलु सिवकमिह कुलु
सिरि-नमयासु हरि-गुण-जल-सुरसरि किंपि गुणिवि जिउ कंम फलु ॥२॥
सिरि-वद्धमाण पुर अस्थि नयर तहि संपइ नरवइ धम्म-पवर
तहि वसइ सु-सावगु उसहसेणु अणुदिणु जसु मणि जिणनाह वयणु ॥३॥
तम्मज्ज-वीरमइ-कुक्खि-जाय दो पवर पुत्त वह इक पूज ।
सहदेव वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुण-गण पहाण ॥४॥

अंत—तेरस-सय अडवोसे-वरिसे सिरि जिणपहुप्पसाएण
एसा संधी विहिया लिंहिद वयणानुसारेणं ॥७१॥
श्रीनर्मदासुंदरी-महासती-संधि समाप्ता ॥

---

(७) अवंति-सुकमाल-सन्धि

---

(८) स्थूलिभद्र-सन्धि

विस्तार—कडवक २, गाथा १३+८
आदि—मह विहार पायारइ सोहिय
पर मंदिर पवर पुर अमरनाहु पिक्खवि मोहिय
इय भारिहु पाडलिय पुरु जंबूदीव विक्खाउ
करइ रज्जु जिय-सत्तु तहिं नंदु महाबलु राउ ॥१॥
अंत—काबि पिय-तणु तविय सोमइ दुवि अरंन बण निवसमे
पिय कोवि फिर सवालु भक्खइ साथि तुम आर्सकमे
जा वेस धरि चउ-मासि निवसइ सरस भोयण सियव
तसु थूलभद्द रव (?) पायमे नमउं जिणि मयण दुई जियव

विशेष—ऊपर उल्लिखित समस्त रचनाऐं पाटणके जैन-भंडारोंमें हैं। इनका विवरण बड़ोदाके गायकवाड़-ओरियंटल-सीरिजमें प्रकाशित पाटण-भंडारोंके सूचीपत्रमें दिया गया है। ऊपर जो उद्धरण दिये गये हैं वे भी वहींसे लिये गये हैं। इस सूचीपत्रमें पृष्ठ १८ पर अनाथि संधि और भीवानुशास्ति संधि नामक दो और संधियोंके उल्लेख हैं परन्तु उनके साथ उद्धरण नहीं होनेसे यह नहीं बताया जा सकता कि वे नं० १ और २ से भिन्न हैं या अभिन्न।

(९) भावना-संधि

विस्तार—कडवक ६, गाथा ६२

कर्त्ता—जयदेव, शिवदेव-सूरि-शिष्य

आदि-पणमवि गुण-सायर भुवण-दिवायर जिण चउवीस वि इक्कमणि

अप्पं पडिबोहइ मोह निरोहइ कोइ भव्व भावय वसिणु ॥१॥

रे जीव निसुणउ चंचल सहाव मिलहेविणु सयल विबायभावु

नवमेय परिग्गह विहव जालु संसारि इत्थ सहु इंदियालु ॥२॥

अंत—निम्मलगुण भूरिहिं सिवदेवसूरिहिं पढम सीसु जयदेव मुणि

किय भावण-संधी भावु सुबंधी णिसुणहु अन्नवि धरउ मणि ॥६२॥

इति श्रीभावना-संधी समाप्ता

प्राप्तिस्थान—हमारे संग्रहमें सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

विशेष—यह संधि जैनयुग, वर्ष ४, के पृष्ठ ३१४ पर प्रकाशित भी हो चुकी है। उसी पत्रिकाके पृष्ठ ४६९ पर इसके संबंधमें श्रीयुत मधुसूदन मोदीका अेक लेख भी प्रकाशित हुआ है।

(१०) शील-संधि

विस्तार—गाथा ३४

कर्त्ता—जयशिखर-सूरि-शिष्य

आदि—सिरि-नेमि-जिणंदह पणय-सुरिंदह पय-पंकय समरेवि मणि

वम्मह-उरि-कीलह कय-सुह सीलह सीलह संथव करिस हउं ॥१॥

अंत—इय सीलह संधी अइय सुबंधी जयसेहर-सूरि-सीस कय

भवियह निसुणेविणु हियइ धरेविणु सील-धम्मि उज्जम करहो ॥२॥

इति सील-संधि समाप्तः ॥

प्राप्ति-स्थान—हमारे संग्रहमें उक्त सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

(११) तप-संधि

कर्त्ता—सोमसुंदर-सूरि-शिष्य-राजराज-सूरि-शिष्य

अंत-सिरि-सोमसुंदर-गुरु-पुरंदर-पाय-पंकय-हसओ।

सिरि-विसाल-राया-सूरि-राया-चंदगच्छवंसओ

रायगिहि नयरि सेणीउ राउ गुरुभत्ति निवेसिय वीयराउ
सो अन्न दिवसि उज्जाणि पत्त मुणि पिक्खवि पणमइ नमिय-गत्त

अंत— चाउ चउ-सरणु गमणो दाणाइ सु धम्म पत्त पाढेव
सीलंग-रहारूढो जिणपह पहिओ सया सुहिओ
अणाथिया-संधि ॥ कडव ॥२॥

(२) जीवानुशास्ति संधि

कर्त्ता—जिनप्रभ

आदि—जस्स पहावज्जवि तव सिरि-समलंकिया जिया हुंति
सो णिव्वुं पि अणग्घो संघो भट्टारगो जयइ ॥१॥
मोहारिहिं बगडिय विसयहिं विनडिय
विक्खय-सुक्ख-कडिय संठियइं चिर ।
संसार विरत्तइं पसमिय चित्तइं
सत्तइं देमि सुसहि मिर ॥२॥

अंत—इय विविह-पयारिहिं विहि-अणुसारिहिं
भाविहिं जिणपहु मणुसरहु
सुत्तेण य पवरिहिं आणासु चरिहिं
भविषण भव सायरु तरहु ॥११८॥
जीवानुशास्ति-संधिः समाप्तः

(३) मयणरेहा-संधि

विस्तार—कडवक ५

कर्त्ता—जिनप्रभ

समय—संवत १२९७, आश्विन शुक्ल ६

आदि—निरुवम-नाण निहाणो पसम-पहाणो विवेग-समिहाणो
दुग्गइ-दार पिहाणो जिण-धम्मो जयइ सुह-कामो ॥१॥
सुमरिवि जिण-सासणु सुह सिद्धि-सासणु
सिरि-नमि-महरिसि मणि धरिव
पभणिसु संखेविहिं मयणरेह-महा-सइ चरिव ॥२॥

अंत—अेसा महा-सईअे संधी सधीव सजम-निवस्स
जं नमि-निवरिसणा सह ससक्करा खीर सजोगो ॥२॥
वारह-सत्ताणउअे वरिसे आसोअ-सुद्ध-छट्ठिअे
सिरि-संघ-पत्थणाअे अेयं लिहियं सुआभिहियं ॥३॥

मयणरेहा-संधि समाप्त. ॥

४ वज्रस्वामि-सधि

कर्त्ता—वरदत्त (?)

आदि—अह जण निसुणिज्जउ कन्नु धरिज्जउ
वयरसामि-मुणियर-चरिउ

अत—मुणिवर वरदत्ति जाणहर भत्ति वयरसामि—गणहर—चरिउ।
साहिज्जहु भावि मुच्चहु पावि जि तिहयणु नियय-गुण-भरिउ ॥६६॥
चरिउ सुसारउं भविय पियारउं वइरसामि-गणहर—चरिउ।
जो पढइ कियायरु गुण-रयणारु सो लहु पावइ परम पउ।

वइरसामि-सधिः समाप्त ॥

(५) अंतरंग-सन्धि

कर्त्ता—रत्नप्रभ

आदि—
पणमवि दुह-खंडण दुरिय-विहंडण जगमंडण जिण सिद्धिठिय
मुणि-कन्न-रसायणु गुण-गण-भायणु अंतरंग मुणि संधि जिय ॥१॥
इह अत्थि गामु भव-वास णामु बहु-जीव-ठामु विसयाभिरामु
दीसंति जत्थ अणदिट्ठ छेह वहु-रोग-सोग-दुहु जोग-गेह ॥२॥

अंत—अहि अंतह कारणु विस-उत्तारणु जं गुलिमंतह पढणु जिम
कय-सिव-सुह-संधिहि अेह सुसंधिहि चिंतणु जाणु भविय। तिम ॥१८॥

इति अंतरंग-संधि समाप्त। इति नवमोधिकार ॥

(६) नर्मदासुंदरी-सन्धि

कर्त्ता—जिनप्रभ-शिष्य

समय—संवत १३२८

आदि—
अज्ज वि जस्स पहावो वियलिय-पावो य ऊखलिय-पयावो
तं वद्धमाण—तित्थं नदउ भव—जलहि—वोहित्थ ॥१॥

पणमवि पणइ यह वीर जिणवइ चरण कमलु सिवलच्छि हु
सिरि-समयपहु हरि-गुण कल-पुरसरि किंपि भणिवि किउ कम-फलु ॥१॥
सिरि-वद्धमाणु पुर अत्थि नयरु तहिं संपइ नरवइ धम्म-पवरु
तहिं वसइ सु-सावगु वसइसेणु अणुदिणु वसु मणि जिणनाह वयणु ॥३॥
तम्मज्ज-वीरमइ-कुच्छि-जाव वो पवर पुत्त यह इह भूव ।
सहदेव वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुण-गण पहाण ॥४॥

अंत—तेरस-सय चउवीसे-वरिसे सिरि जिणपहुप्पसाएण
एसा संधी विहिया जिणिंद-वयणाणुसारेणं ॥७१॥
श्रीनर्मदासुंदरी-महासती-संधि समाप्ता ॥

---

(७) अनाथि-मुकमाल-सन्धि

---

(८) स्थूलिभद्र-सन्धि

विस्तार—कडव २, गाथा ११+८
आदि—मह विहार पायारइ सोहिउ
वर मंदिर पवर पुर अमरनाहु पिक्खवि मोहिउ
इय एरिसु पाडलिय पुरु जंबूदीव विक्खाउ
करइ रज्जु तिय-सत्तु तहिं नंदु महाबलु राउ ॥१॥

अंत—कोवि पिय-तणु तविय सोसइ कुवि आरंभ बल निवसणे
पिय कोवि किर सवालु भक्खइ सोवि तुय आसंकणे
जा वेस धरि चउ-मासि निवसइ सरस भोयण सिवड
तसु थूलभद्द स्य (?) पावणे नमउं जिणि मयण हु विजउ

विशेष—ऊपर उल्लिखित समस्त रचनाएं पाटणके जैन-भंडारोंमें हैं। इनका विवरण बड़ौदाके गायकवाड़-ओरियंटल-सीरिजमें प्रकाशित पाटण-भंडारोंकी सूची पत्रमें दिया गया है। ऊपर जो उद्धरण दिये गये हैं वे भी वहींसे लिये गये हैं। इस सूचीपत्रमें पृष्ठ ६८ पर अनाथि संधि और जीवानुशास्ति संधि नामक दो और संधियोंके उल्लेख हैं, परन्तु उनके साथ उद्धरण नहीं होनेसे यह नहीं बताया जा सकता कि वे नं० १ और २ से भिन्न हैं या अभिन्न।

(९) भावना-संधि

विस्तार—कडवक ६, गाथा ६२

कर्त्ता—जयदेव, शिवदेव-सूरि-शिष्य

आदि-पणमवि गुण-सायर भुवण-दिवायर जिण चउवीस वि इक्कमणि

अप्पं पडिबोहइ मोह निरोहइ कोइ भव्व भावय वसिणु ॥१॥

रे जीव निसुणउ चंचल सहाव मिलहेविणु सयल विवायभावु

नवमेय परिग्गह विहव जालु संसारि इत्थ सहु इंदियालु ॥२॥

अंत—निम्मलगुण भूरिहिं सिवदेवसूरिहिं पढम सीसु जयदेव मुणि

किय भावण-संधी भावु सुबंधी णिसुणहु अन्नवि धरउ मणि ॥६२॥

इति श्रीभावना-संधी समाप्ता

प्राप्तिस्थान—हमारे संग्रहमें सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

विशेष—यह संधि जैनयुग, वर्ष ४, के पृष्ठ ३१४ पर प्रकाशित भी हो चुकी है। उसी पत्रिकाके पृष्ठ ४६९ पर इसके सबंधमें श्रीयुत मधुसूदन मोदीका अेक लेख भी प्रकाशित हुआ है।

(१०) शील-संधि

विस्तार—गाथा ३४

कर्त्ता—जयशिखर-सूरि-शिष्य

आदि—सिरि-नेमि-जिणंदह पणय-सुरिंदह पय-पंकय समरेवि मणि

वम्मह-हरि-कीलह कय-सुह सीलह सीलह संथव करिस हउं ॥१॥

अंत—इय सीलह संधी अइय सुबंधी जयसेहर-सूरि-सीस कय

भवियह निसुणेविणु हियइ धरेविणु सील-धम्मि उज्जम करहो ॥२॥

इति सील-संधि समाप्तः॥

प्राप्ति-स्थान—हमारे संग्रहमें उक्त सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

(११) तप-संधि

कर्त्ता—सोमसुंदर-सूरि-शिष्य-राजराज-सूरि-शिष्य

अत-सिरि-सोमसुंदर-गुरु-पुरंदर-पाय-पंकय-हसओ।

सिरि-विसाल-राया-सूरि-राया-चंदगच्छवंसओ

पय ममीय सीसइ' तासु सीसइ भेस संधी विमिभिमला
सिव सुक्ख कारण दुह निवारण तव सवमेसिइ वम्मिला

लेखनकाल—सं० १५०५
प्राप्ति-स्थान—पाटणका भंडार

(१२) उपदेश-संधि

बिस्तार—गाथा १४
कर्ता—हेमसार
अंत—स्वमेस संधि निरमल बंधि हेमसार इम रिसि करमे
जो पढइ पढावइ सुह मणि भावइ बसुई सिद्धि वृद्धि कइमे

(१३) नवरंग-संधि

बिस्तार—कडवक ५
बिषय—चार शरणोंका वर्णन

बिशेष विवरण—पिछली तीन कृतियोंका उल्लेख जैन गूर्जर कविओ भाग १,
में पृष्ठ ५९ और ८३ पर हुआ है। नंबर ११ और १२ की
भाषा अपेक्षाकृत अर्वाचीन है।

(४) अपभ्रंशोत्तर राजस्थानी आदि भाषाओंके संधिकाव्य

अपभ्रंशकी संधिकाव्योंकी पर पराको भाषा-कवियोंने चालू रखी। हमारी शोधमें कोई ४० ऐसी रचनाओंका पता लगा है जिनकी नामावली आगे दी जाती है। ये चौदहवींसे लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तककी हैं।

चौदहवीं शताब्दी

१ आनंद-संधि	गाथा ७५	जिनप्रभसूरि	..	हमारे संग्रहमें
२ श्री गौतम संधि	गाथा ७०		..	„

सोलहवीं शताब्दी

३ मृगापुत्र संधि	..	कल्याणतिलक	१५५० लग०	हमारे संग्रहमें
४ मंदन मणिहार संधि		चारुचंद्र	१५८७	„

५	उदाइ राजर्षि संधि	...	संयममूर्ति	१५६० लग०	जैन गुर्जर कविओ
६	गजसुकमाल संधि	गाथा ७०	"	१५६०	"
७	"	...	मूलप्रभ	१५५३	"
८	धना-संधि	गाथा ६५	कल्याणतिलक	१५६० लग०	हमारे संग्रहमें

सत्रहवीं शताब्दी

९	सुखदुख विपाक संधि	.	धर्ममेरु	१६०४	जयपुर भंडार
१०	सुबाहु-संधि		पुण्यसागर	१६०४	हमारे संग्रहमें
११	चित्रसंभूति संधि	गाथा १०६	गुणप्रभसूरि	१६(०)८	आश्विन वदि ६ गुरु जेसलमेरमें रचित
१२	अर्जुन-माली संधि	..	नयरंग	१६२१	जेसलमेर भंडार
१३	जिनपालित-जिनरक्षित संधि	. .	कुशललाभ	१६२१	बृहद् ज्ञानभंडार
१४	हरिकेशी संधि	...	कनकसोम	१६४०	"
१५	सुमति संधि	गाथा १०६	गुणराज	१६३०	हमारे संग्रहमें
१६	गजसुकमाल संधि	गाथा ३४	मूलावाचक	१६२४	जैन गुर्जर कविओ
१७	चउसरण प्रकीर्णक संधि	गाथा ६१	चारित्रसिंह	१६३१	जेसलमेर भंडार
१८	भावना संधि	...	जयसोम	१६४६	हमारे संग्रहमें
१९	अनाथी संधि	...	विमल विनय	१६४७	"
२०	कयवन्ना संधि	...	गुणविनय	१६५१	बृहद् ज्ञानभंडार
२१	नंदिषेण संधि	...	दानविनय	१६६५	हमारे संग्रहमें
२२	मृगपुत्र संधि	...	सुमतिकल्लोल	१६६३	बृहद् ज्ञानभंडार
२३	आनंद संधि	...	श्रीसार	१६८४	जेसलमेर भंडार
२४	केशी गोयम संधि	...	नयरंग	१७वीं शताब्दी	हमारे संग्रहमें
२५	नमि संधि	गाथा ६९	विनय (समुद्र)	"	बृहद् ज्ञानभंडार
२६	महाशतक संधि	..	धर्मप्रबोध	"	हमारे संग्रहमें

अठारहवीं शताब्दी

२७	कंडरीक पुंडरीक संधि	...	राजसार	१७०३	जेसलमेर भंडार

२८ अर्यती स धि	..	अभयसोम	१७२१	मात्र हमारे स ग्रहमें
२९ भद्रनद स धि	..	राजलाभ	१७२३	श्रीपूज्यजीका संग्रह
३० प्रदेशी स धि	..	कनकविलास	१७२५	हमारे स ग्रहमें
३१ हरिकेशी स धि		सुमतिरंग	१७२७	
३२ चित्रसंभूतिस धि	गाथा ३९	नयप्रमोद	१७२६	वृहद् ज्ञानभंडार
३३ चित्रस भूति स धि	गाथा १०६	गुणप्रभसूरि	१७२६	जैसलमेर भंडार
३४ इषुकार स धि	---	खेमो	१७४५	हमारे संग्रहमें
३५ अनाथी स धि		"	"	"
३६ थावच्चास धि		मोहेच	१७४६	वृहद् ज्ञानभंडार
३७ भरत स धि		वे पद्मचंद्र १८ वी शताब्दी		जेसलमेर भंडार
३८ मृगापुत्रस धि		जिनहर्ष	"	
		उन्नीसवीं शताब्दी		
३९ प्रदेशी स धि		खेमह	१८१७	हमारे स ग्रहमें
		अज्ञात काल		
४० चन्दनबाला स धि				(जिनविजयजीके
४१ जिमपालित जिनरक्षित स धि		मुनिघोष		पत्रमें उल्लेख) वृहद् ज्ञानभंडार
४२ सुबाहु स धि		मेघराज		जीवदी भंडार

प्राचीन राजस्थानी साहित्य

१—चारणी गीत

राजस्थानी साहित्यमे गीत-साहित्यका अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तविक डिंगल साहित्य इस गीत-साहित्यको ही कहना चाहिये। डिंगलका पूर्ण ज्ञान इन गीतोंके अध्ययनके बिना असंभव है।

गीत-साहित्य राजस्थानी भाषाकी अपनी विशेषता है। हिन्दी पंजाबी सिंधी गुजराती आदि पड़ोसी भाषाओंमें इसका नितान्त अभाव है।

गीत-साहित्य प्रधानतया वीर-रसात्मक और ऐतिहासिक विषयोंसे सम्बन्ध रखनेवाला है, यद्यपि वैसे सभी विषयों पर अच्छे-से-अच्छे गीत लिखे गये हैं। अधिकांश गीत चारणोंकी कृतियां हैं पर अन्यान्य लोगोंके लिखे हुये गीत भी बहुत मिलते हैं।

गीतोंकी संख्या हजारों है। राजस्थानमें कदाचित ही कोई ऐसा वीर हुआ होगा जिसकी वीरताका एकाध गीत न बना हो। हजारों वीरोंकी स्मृतिको इन गीतोंने जीवित रखा है जिनको इतिहासने भी भुला दिया है।

गीत-साहित्यमें सबसे महत्वपूर्ण वीर-गीत हैं। ये वीर-रसकी उमड़ती हुई धारायें हैं। महाराणा प्रताप दुर्गादास अमरसिंह राठौड़ आदिके गीत रसात्मक साहित्यकी अमूल्य निधि हैं।

ध्यान रहना चाहिये कि ये गीत यद्यपि गीत कहे जाते हैं गाये नहीं जाते थे। ये गानेकी चीजें नहीं हैं। बाहरी लोग गीत नाम देखकर इन्हें गानेकी चीज समझ लेते हैं और इनके रचयिताओंको साधारण गायक कह देते हैं। चारण लोग गायक कहे जानेको अपना अपमान समझते हैं। गीत राजस्थानी छंद-शास्त्रकी एक पारिभाषिक संज्ञा है।

ये गीत एक विशेष ढंगसे पढ़े जाते थे रिसाइट recite किये जाते थे। पढ़नेकी यह शैली बड़ी भव्य और प्रभावशाली होती थी। उस शैलीमें पढ़े जाते हुये गीतोंसे वीर लोग हंसते-हंसते प्राण न्यौछावर कर देते थे। वैसी भव्य शैलीमें पढ़नेवाले चारण आज भी कहीं-कहीं मिल जाते हैं। वे विरल हैं पर उनका नितान्त अभाव नहीं।

इन गीतोंकी एक विशेषता विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। वह यह कि एक गीतके सभी दोहलोंमें प्रायः वही भाव बारबार कहा जाता है अर्थात प्रथम दोहलेमें जिस भावका

कथन होगा उसी भावका कथन बाकीके दोहलोंमें भी भग्यन्तरसे किया जायगा। कवि साधारण हुआ तो आगेके दोहलोंमें शब्दान्तर paraphrase सा करता जायगा और यदि प्रतिभाशाली हुआ तो भावको अैसे अनोखे ढगसे, वक्रताके साथ, दुहरायगा कि पुनरावृत्ति प्रतीत नहीं होगी।

गीतको आप अेक कविता समझ लीजिये। जैसे अेक कवितामें अनेक पद्य होते हैं वैसे ही अेक गीतमें कई दोहले होते हैं। अधिकाश गीतोंमें चार दोहले पाये जाते हैं पर कम या वेशी भी हो सकते हैं। हा, तीनसे कम दोहके किसी गीतमें नहीं होते।

दोहलेमें प्राय चार चरण होते हैं। अेक गीतके सब दोहले समान होते हैं पर कुछ गीतोंमें प्रथम दोहलेके प्रथम चरणमें दो या तीन मात्राअें या वर्ण अधिक होते हैं जो मानो गीतका आरभ सूचित करते हैं।

आगे कुछ वीर-गीत दिये जाते हैं। पहले गीतमें वीरकी प्रशसा है। आगेके पाच गीत राजस्थानके तीन प्रख्यात वीर राठौड़ अमरसिंह, राठौड़ बलू और चौहाण केसरीसिंहसे सम्बन्ध रखते हैं।

राठौड़ अमरसिंह जोधपुरके महाराजा गजसिंहका पुत्र और महाराजा जसवतसिंहका बड़ा भाई था। वह अपनी प्रचड निर्भीकता और उद्दड साहसके लिअे भारत भरमें प्रसिद्ध है। उसने बादशाह शाहजहाके भरे दरबारमें मीरमुशी सलाबतखानको कटारसे मार डाला, और अनेक योधाओंके साथ अकेला लड़ता हुआ मारा गया। उसकी प्रशसामें राजस्थानी और हिन्दीके अनेक कवियोंने काव्य-रचना की है। उसके सबधमें यह दोहा बहुत प्रसिद्ध है—

उण मुखसू गग्गो कह्यो इण कर लयी कटार
वार कहण पायो नहीं होगी जमधर पार

बलू अमरसिंहका सरदार था। अपने उद्दड स्वभावके कारण अमरसिंहने बलूको निकाल दिया। वह बादशाहके पास पहुँचा और बादशाहसे नयी जागीर प्राप्त की। जब अमरसिंह मारा गया तो अमरसिंहकी रानियोंने सती होनेके लिअे अमरसिंहका शव मागा। बलूने शव लानेका बीड़ा उठाया और शाही सेनासे जा भिड़ा।

किसनदास (कविताका नाम केहरीसिंह) साचौरा चौहान अचलसिंहका पुत्र था। साचौरा चौहान अपनी वीरताके लिअे बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। उनके सबधमें कवियोंने जो गीत लिखे हैं वे राजस्थानीके सर्वश्रेष्ठ गीतोंमेंसे हैं।

(१)

वीर वर्णन

दोई बंसनूं दुई कुळ उजळी कामणी
भड़ो फौजां भिळै, खाग वागै।
भागतां जिकांनूं जिके भड़ मोसरै,
बापरा बंसनूं गाळ लागै ॥ १ ॥

सूरमा जिके रजपूत आखाड़ सजै
लोह मिळ्ळै मनां सुजस लोभा।
कनक-आभूखणां सोहणे कामणी
सूर आभूखणां घाव सोभा ॥ २ ॥

स्वाम-रा कामनूं धसै दळ सामुहा
झालियां पकड़ण जैत करणै।
साबता रह्यां निज सुजस कानां सुणै
प्राण छूटां पछै सची परणै ॥ ३ ॥

---

१ पीहर और ससुराल इन दोनों कुलोंमें उज्ज्वल (यशस्विनी) कामिनी पतिसे कहती है—वीर वे हैं जो अपने बलसे शत्रु-सेनाओंको विध्वस्त करते हैं और तलवार बजाते हैं। जो भीरु ऐसे समयमें भाग निकलते हैं उनको धिक्कार है। भागनेसे पिताके वंशको (पूर्वजोंको) कलंक लगता है। (मानवीन्—मानव, भा अनुवा)।

२ शूर क्षत्रिय वे हैं जो मनमें सुयशकी अभिलाषासे युद्ध सजकर लोहा बजाते हैं। स्त्री सुवर्णके गहनोंसे शोभा देती है; शूरोंकी शोभा घावोंके गहनोंसे है।

३ जो शूर स्वामीके कार्यके निमित्त शत्रुओंको पकड़ने और विजय प्राप्त करनेके लिये शत्रु-सेनाके सम्मुख आगे बढ़ते हैं। जीवित रहने पर अपने कानोंसे अपना सुयश सुनते हैं और मर जाते हैं तो पीछे शचीसे विवाह करते हैं (उनके मरने पर उनकी स्त्रियां सती होती हैं जो स्वर्गलोकमें उनसे आ मिलती हैं)।

(२)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिंघौतरो

गढपतिअे घणा किया गढ-रोहा
परगह . कै झूकिया पह।
जिग कीधौ अमरेस जडाळी
किणहि न कीधौ इम कळह ॥ १ ॥

कोटां ओट घणा जुध कीया
फौजां घणा किया फर-फेर।
राउ राठौड जिहीं सू-रौद्रा
नरपति विढियौ न-को अनेर ॥ २ ॥

कोटां प्राण प्राण कै कटकां
सूं पहरिया दिली-पतिसाह।
अेक कटारी कियौ न अेकण
गजसिंघौत जिसौ गज-गाह ॥ ३ ॥

दाणव बि-त्रिण पगां तळ दीधा
वणियै मरण दिखाळियौ वाढ।
वाहो अेकण गंग-वंसोधर
जम-डाढां मांही जम-डाढ ॥ ४ ॥

---

१ अनेक गढ़पतियोंने गढ़ोंका युद्ध किया, अनेक राजा सेना लेकर लड़े, पर अमरसिंहने जिस प्रकार कटारसे युद्ध किया वैसा किसीने नहीं किया।

२ दुर्गोंकी ओटमें अनेकोंने युद्ध किये। फौजें लेकर अनेकोंने लड़ाइया (?) कीं। पर राठौड़ वीर राव अमरसिंह जिस प्रकार लड़ा वैसे और कोई राजा यवनोंसे नहीं लड़ा।

३ दुर्गोंके बल पर या सेनाओंके बलपर बहुत-से राजा दिल्लीके बादशाहसे लड़े पर अेक कटारीके बलपर, और अेकेले, किसीने गजसिंहके पुत्रकी भांति घमासान युद्ध नहीं किया।

४ दो-तीन यवनोंको पैरोंके नीचे दबा लिया। मरण आ पहुँचने पर मारकाटको दिखलाया। गंगाके वंशधरने यमकी डाढोंके बीचमें अकेले कटारी चलायी।

(१)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिंघोतरो

वडे ठौड़ राठौड़ अखियात राखी वडी
जोर वर जोध सम-धाह अमरा।
सलाबत दिली-पत देखतां साहियौ
थयो तिण वाररा रूप अमरा ! ॥ १ ॥

गजमरा केहरी सिंघ जूझार-गुर
मांण तजि जगत्र बहु हुकम मानै।
पाड़िया तैं ज पतिसाहरी पाखती
खान सुरतांण दीवाण-खानै ॥ २ ॥

हाकवौ दिली-दरियाव डीलोळवौ
हूकड़े साह अमराव हारे।
आगरै सहर हलमाळ पाड़ी अमर
मारवा राव दरबार मांहे ॥ ३ ॥

---

१ हे यमकी यम-दंष्ट्रा के समान भयंकर और जोरावर योद्धा राठौड़ वीर! तुमने बड़े स्थानमें बड़ी कीर्तिकी रक्षा की। सलाबतखांको दिल्लीपतिके देखते देखते मार डाला। हे अमरसिंह! तुम्हारा उस समयका रूप धन्य है!

२ हे गजसिंहके केसरी सिंहके समान वीर पुत्र! हे योद्धाओंके गुरु! सारा जगत मान छोड़कर तेरा हुकम मानता है। तूने ही बादशाहके दीवानखानेमें (दरबारमें) बादशाहके निकट ही उमरावोंको गिराया।

३ हांक लगाते हुए और दिल्ली-रूपी समुद्रको हिलाते हुए अमरसिंहने बादशाहके पास उमरावोंको गिराया। मारवाड़के रावने आगरे शहरमें दरबारके अन्दर हड़ताल कर दी (सारे लोग दरबार छोड़कर भाग गये)।

पगे पहरै जठै हाथसूं परहरै
लोह समि न-को असमान लागै।
तो जिसौ जूझियौ न-को हिंदू-तुरक
अमर! अकबर-तणा तखत आगै॥ ४॥

(४)

गीत राठोड़ वलू गोपालदासौत चांपावतरो

बिजड ऊठियौ धूणि गिरि-मेर सो बहादर
पछै म्हे कदे अवसाण पावां?
अमरनै सुरग दिस मेलनै अेकलौ
आगरै लड़ेवा कदे आवां?॥ १॥

अम्हे तो अमर राजा तणा ऊमरा
जुड़ेवा पारकी थटी जागा।
बोलियौ बळू पतसाहरै बराबर—
मारवै रावरौ वैर मागां॥ २॥

---

४ जहां पैरोंमें पहनते थे वहां हाथोंमें पहनने लगे (पैरोंमें पहननेके जूते हाथोंमें लेकर दरबारके लोग भागे), हथियार लेकर कोई आसमान तक नहीं उठता (वीर-दर्पसे सिर ऊंचा करके सामने नहीं आता)। हे अमरसिंह! अकबरके सिंहासनके सामने कोई हिंदू या मुसलमान तुम्हारी तरह नहीं लड़ा।

१ वह मेरुपर्वत-सा वीर खड्गको घुमाता हुआ उठा। बोला—पीछे हम अैसा अवसर कब पावेंगे? अमरसिंहको अकेला स्वर्ग भेजकर फिर आगरेमें लड़ने कब आवेंगे?

२ हम तो राजा अमरके उमराव हैं, युद्ध करनेके लिये परायी भूमिमें (?) जागते हैं। बलू बादशाहके बराबर (रूबरू) बोला—हम तुमसे मारवाड़के राव अमरसिंहका वैर मागते हैं।

केसरिया मांह गरकाब बागा करे
सेहरौ बांध हळकार साथै।
अमररौ भतीजौ तोळ खग आवड़ै
बळू अर आगरौ हुवा बाथै ॥ ३ ॥

पटानै माझि भिड़ साहसूं चढ़ापड़
काम महकोट साचौ कमायौ।
बाद कर साहसूं वैर नृप चोढियौ
अमर रै मुहर करि सरग आयौ ॥ ४ ॥

(५)

गीत राठौड़ बलू गोपाळदासौतरो

कहर काळ भंकाळ बळिराह गज केसरी
जोध जोधां सरिस जेम जूटो।
झोकड़ां हूंत नाहर किनां विछूटो
तरगियां कासिपी किनां तूटो ॥ १ ॥

---

३ केसरिया रंगमें बागेको (जामेको) गरकाब करके और ललकारके साथ सेहरा बांधकर अमरसिंहका भतीजा बलू तलवार उठाकर योद्धा—और योद्धे ही बलू और आगरा दोनों भिड़ गये (आगरा—बादशाहके सरदार)।

४ पठानी अमीरको देखकर और बादशाहसे चढ़कर भिड़कर राठौड़ वीरने अच्छा काम किया। बादशाहसे बराबरी करके राजा अमरसिंहके वैरको सिरपर ओढ़ा। फिर अमर को आगे करके (अमरके पीछे-पीछे) स्वर्ग आ पहुँचा।

१ प्रलय-काल तथा सिंहके समान भयंकर, बलवानोंका राजा हाथियोंके लिये सिंह रूप और बल योद्धाओंके साथ इस तरह भिड़ गया मानो जंजीरोंसे सिंह छूटा हो अथवा मानो तारों पर गरुड़ झपटा हो।

दूसरो मयंक दुहवँ दळां देखतां
जोट घट छड़ाळै प्रसण जड़ियो।
हसत दीठां समा सीह घायां हुओ
पनग-सिर किनां धव-पंख पड़ियो॥ २॥

पाळ-रा नमो हथ-बाह बाहां प्रलव
तळिछि सुदर लियो दळां अणताघ (?)।
उरह पड़ियो किनां गरुड अहि ऊपरै
विरह छूटो किनां गजां सिर वाघ॥ ३॥

(६)

गीत चोहाण किसनदास अचळावतरो

कळि चालि लंकाळ कहै इम केहरि
विढिवा कजि ऊछजि कन्नाण।
चलियै दळै विमुहि क्यू चालू
चलियो विमुहि न-को चहुआण॥ १॥

---

२ दूसरे मयंक, भालाधारी, वीर चलूने दोनों दलोंके देखते शत्रुओंपर भयकर आघात किया (१), मानो हाथियोंको देखते ही सिंह भिड़ गया हो अथवा मानो सांपोंके सिर पर गरुड़ पड़ा हो।

३ लम्बी भुजाओंवाले गोपालके पुत्र चलूके हाथ चलानेको नमस्कार है। अपार सेनाओंपर वह इस तरह टूटकर पड़ा (१) मानो उछलकर गरुड सांपों पर पड़ा हो अथवा मानो क्रोधमें भरकर सिंह हाथियों पर झपटा हो।

१ भयकर युद्धमें सिंहके समान वीर केहरी लड़नेके लिये तलवार उठाकर इस प्रकार कहता है—सेनाके पीछे मुड़ जाने पर भी मैं पीछे क्यों मुड़ूं, कोई चौहान कभी युद्धमें पीछे नहीं मुड़ा।

गोरंग पड़े नहीं अचळाजत
    म्हाड़े प्रसण दिये अग-म्हीक ।
मुड़िया दळ देखे मह मुड़ियौ
    मुड़िये दळ मुड़ियौ महारीक ॥ २ ॥

कळहि सीह ज्यूं सीह-कळोधर
    निडर निहसियौ बाघे नेत ।
खड़िया दळ देखे मह खड़ियौ
    खड़िये दळ खड़ियौ रिण-खेत ॥ ३ ॥

भागा साथ न भागौ अणभंग
    आप बिड़े भांजिया अरि ।
केहरि सरग पहूतौ कणकज
    करनहरो अखियात करि ॥ ४ ॥

---

२ अचलदासका बेटा युद्धमें नहीं मुड़ा । वह खड्गके आघात कर शत्रुओंको मारता है । सेनाओंको मुड़ी हुई देखकर भी वह नहीं मुड़ा । वह क्रोधी, सेनाके मुड़ने पर, स्वयं शत्रुओंसे जा भिड़ा ।

३ सीहाका बराबर नेत बांधकर युद्धमें सिंहकी तरह निडर होकर लड़ा । वह सेनाओंके भाग जाने पर नहीं भागा । वह सेनाओंके भागने पर रण-क्षेत्रमें खड़ा ।

४ वह अपराजेय वीर भागे हुओंके साथ नहीं भागा । उसने स्वयं लड़कर शत्रुओंको भगाया । कर्मसिंहका बराबर केसरी अद्भुत कीर्ति-कथा करके स्वर्गमें पहुँचा ।

वात दूदै जोधावतरी

[दूदै जोधावत मेघौ नरसिंघदासौत सींघल मारियौ ।]

राव जोधौ पौढियौ हुतौ । वातपोस वाता करता हुता । राजवियां-स्था वाता करता हुता । ताहरां अेक कह्यौ—भाटियां-रौ वैर न रहै । ताहरां अेक बोलियौ—राठोड़ां-रै वैर अेक रह्यौ । कह्यौ—किसौ ? कह्यौ—आसकरण सतावत-रौ वैर रह्यौ, नरबदजी सुपियारदे ल्याया हुता तिको वैर रह्यौ ।

ताहरां राव जोधै वात सुणी । ताहरां उवां-नू पूछियौ—थे कासूँ कह्यौ ? कह्यौ—जी । क्यूही नहीं । ताहरां बोलियौ—ना, ना, कह्यौ । ताहरां कह्यौ—जी । आसकरण-रै छोरू न हुवौ, नै नरबद-रै पिण छोरू नहीं, तै वैर यूही रह्यौ । राव जोधै वात सुणि-नै मन-में राखी ।

प्रभाते दरबार बैठा छै । तितरै कुंवर दूदै आइनै मुजरौ कियौ । सू दूदै-सूँ रावजी कु-मया करता । ताहरां रावजी कह्यौ—दूदा, मेघौ सींघल मारियौ जोयीजै । ताहरां दूदै सलाम की । ताहरां रावजी बोलिया—दूदा ! आसकरण सतावत-

---

कहानी जोधाके बेटे दूदे की

जोधाके बेटे दूदेने नरसिंहदासके बेटे मेघेको मारा इसकी कहानी

[अेक दिन] राव जोधा सोया हुआ था । कहानी कहनेवाले बातें कर रहे थे—रईसोंकी बातें करते थे । उस समय अेकने कहा—भाटियोंका बैर नहीं रहता । अेक बोला—राठोड़ोंका बैर नहीं रहता । तब अेक बोला—राठोड़ोंका अेक बैर बाकी रह गया । कहा—कौनसा ? कहा—सताके बेटे आसकर्णका बैर बाकी रहा, नरबदजी सुपियारदेको लाये थे वह बैर बाकी रहा ।

तब राव जोधेने बात सुनी । [उसने] उनसे पूछा—तुम लोगोंने क्या कहा ? उन लोगोंने कहा—जी ! कुछ भी नहीं । तब जोधाने कहा—नहीं, नहीं, कुछ कहा था । तब कहा—जी ! आसकर्णके बेटा नहीं हुआ और नरबदके भी बेटा नहीं, जिससे बैर योंही रह गया । राव जोधेने बातको सुनकर मनमें रखा ।

मूं नरसिंघदास खींवसी मारियो हुवौ, नरबदजी सुपियारदे-नूं ल्याया हुवा जिणै बदलै आसकरण-नै मारियो हुवौ; नरसिंघ-रौ बेटो मेघो, जिणै-नूं जाय मारि। ताहरां दूदो सलाम करि-नै चालियो। ताहरां रावजी कह्यो—दूदा! थूं जा मत हूं सरजाम करि देस्यूं थें आगे मेघो खींवसी छै, तें मेघो काने नहीं सुणियो छै। ताहरां दूदो कहै—का तो दूदो मेघै, का मेघो दूदै।

ताहरां दूदो डेरै आयनै आप रो साथ लेइनै चढियो। आइनै जैतारण-हूं कोस तीन वरे उतरियो। आदमी मेल्ह दियो। आइनै मेघे-नैं कह्यो—दूदो जोधावत आयो आसकरण मांगै। आदमी आइ मेघे-नूं कह्यो। मेघै कह्यो—मोडा क्यूं आया? ताहरां कह्यो—समझ पडी पछै दूदै पाणी आगै आय पियो छै।

ताहरां मेघो माळियै चढियो। कह्यो—रे! घोड़ियां इयै तरफ मती छोडो, दूदो जोधावत आयो छै, घोड़ियां ले जासी।

सबेरे रावजी दरबारमें बैठे हैं। इतनेमें कुंवर दूदेने आकर मुजरा (प्रणाम) किया। दूदेके प्रति रावजी अकृपाका बर्ताव करते थे। तब रावजीने कहा—दूदा! मेघे खींवसीको मारना चाहिये। तब दूदेने सलाम किया। रावजी बोले—दूदा! सताके बैरे आसकर्णको नरसिंहदास खींवसीने मारा था नरबदजी सुपियारदेको लाये थे उसके बदलेमें आसकर्णको मारा था; नरसिंहदासका बेटा मेघा है उसको तू जाकर मार।

तब दूदा प्रणाम करके चला। तब रावजीने कहा—यों मत जा, मैं सरंजाम कर दूंगा यों आगे मेघा खींवसी है; तूने मेघाको कानोंसे नहीं सुना है। तब दूदा कहता है—या तो दूदा मेघेको मारेगा या मेघा दूदेको मारेगा [दोनोंमेंसे एक बात अवश्य होगी]।

तब दूदा अपने डेरे आया और अपने साथको लेकर चला। चलकर जैतारणसे तीन कोस इधर उतरा। अपना आदमी भेज दिया। उससे कहा—जाकर मेघेको कह कि जोधाका बेटा दूदा आया है आसकर्णको मांगता है।

आदमीने जाकर मेघेसे [समाचार] कहा। मेघाने कहा—देरसे क्यों आये? तब कहा—समझ पड़नेके बाद तो दूदेने पानी आगे आकर ही पिया है।

तब मेघा उसके मकान पर चढ़ा। उसने कहा—अरे! घोड़ियां इधर मत छोड़ो जोधाका बेटा दूदा आया है वह घोड़ियोंको ले जायगा।

ताहरां दूदौ बोलियो—रे । ओ कुण बोलै ? कह्यौ—जी । मेघौ बोलै छै । कह्यौ—रे । इतरो भुई सुणीजै छै ? कह्यो—जी । मेघौ सींधल काने सुणियौ छे किनां नहीं ? म्हे घोड़यां-सू काम नहीं, माल-सूं काम नहीं, म्हारै थारै माथै-सू काम छै, परत-री वेढ करिस्यां ।

ताहरां बीजै दिन मेघौ साथ करिने आयौ । इयै तरफ-सू दूदौ आयौ । ताहरां मेघौ कहै—दूदाजी ! थां अवसर लाधौ, रजपूत तौ म्हारा सरब म्हारै बेटै-रै साथै जान गया, हू छू । ताहरां दूदो कहै—मेघा ! आपां परत-री वेढ करिस्यां, रजपूता-नू क्यू मारां ? का दूदौ मेघै, का मेघो दूदै । आपां-हीज साफळो हुसी ।

ताहरा साथ दोह्या-रौ अळगौ ऊभौ रह्यौ । अेकै दिसा मेघौ आयौ, अेकै दिसा-सू दूदौ आयौ ।

ताहरां दूदौ कहै—मेघा ! करि घाव । मेघौ कहै—दूदौजी ! करौ घाव । ताहरा दूदौ कहै—मेघाजी । थे घाव करौ ।

तब दूदा बोला—अरे ! यह कौन बोलता है । लोगोंने कहा—जी ! मेघा बोलता है । दूदेने कहा—अरे ! इतनी दूर तक सुन पड़ता है ? कहा—जी ! मेघे सिंधलको कानोंसे सुना है या नहीं ?

दूदेने कहा—मेघा ! मुझे घोड़ियोंसे काम नहीं, धन-सपत्तिसे काम नहीं, मुझे तो तेरे सिरसे काम है, परत (?) की लड़ाई करेंगे ।

तब दूसरे दिन मेघा साथको सजाकर आया । इस ओरसे दूदा आया । तब मेघा कहता है—दूदाजी ! आपने अवसर पाया, मेरे सारे राजपूत तो मेरे बेटेके साथ बरातमें गये हुअे है, मै [अकेला] हूँ । तब दूदा कहता है—मेघा ! अपन द्वन्द्व-युद्ध (?) करेंगे, राजपूतोंको क्यों मारें ? या तो दूदा मेघेको या मेघा दूदेको, अपन दोनोंके बीचमें ही युद्ध होगा !

तब दोनोंका साथ दूर खड़ा रहा । अेक दिशासे मेघा आया और अेक दिशासे दूदा आया । तब दूदा कहता है—मेघा ! वार कर । मेघा कहता है—दूदाजी ! आप वार कीजिये । तब दूदा कहता है—मेघाजी ! आप वार कीजिये । तब मेघाने वार किया ।

ताहरां मेघै वाड़ कियो । सो दूदै ढाळ-सूं टाळि दियो । दूदै पाबूजी-नूं समरि नै मेघै-नूं घाव कियो । सु माथो धड़-सूं अळगो जाइ पड़ियो । मेघो काम आयो ।

ताहरां मेघै-रो माथो वाढि नै दूदो ले हालियो । ताहरां आपरां राजपूतां कह्यो—मेघै-रो माथो धड़ ऊपरां मेल्हो, वडो रजपूत छै । ताहरां दूदै माथो मेल्हियो । दूद कह्यो—कोई गाम-रो उजाड़ मती करो मेघै-सूं काम हुतो ।

मेघै-नूं मारि दूदो आपूठो फिरियो । आवनै राव जोधै-सूं तसलीम कीधी । राव राजी हुवो ।

जोधैजी दूदै-नूं घोड़ो सिरपाव दियो । बहुत राजी हुआ ।

उसे दूदेने ढालसे टाल दिया । फिर दूदेने पाबूजीको स्मरण करके मेघे पर वार किया । तो सिर धड़से दूर जा गिरा । मेघा काम आया ।

तब मेघेका सिर काटकर दूदा ले चला । अपने राजपूतोंने कहा—मेघेका सिर धड़के ऊपर रखो मेघा बड़ा राजपूत है । तब दूदेने सिरको धड़ पर रखा । फिर दूदेने कहा—मेघेके किसी गाँवका बिगाड़ मत करो हमारा तो केवल मेघेसे काम था ।

मेघेको मारकर दूदा वापिस मुड़ा । आकर राव जोधेकी तसलीम की । राव प्रसन्न हुआ । जोधेजीने दूदेको घोड़ा और सिरोपाव दिया । बहुत प्रसन्न हुए ।

---

(२)

पण लिखूं कियां, जद देखै है आडावळ[९] ऊंचो हियो लियां
चितोड़ खड्यो है मगरां-में[१०] विकराळ भूत-सी लियां छियां[११]
हूं झुकूं कियां? है आण मनैं कुळ-रा केसरिया बाना-री
हूं बुझूं कियां, हूं शेष लपट आजादी-रा परवानां-री[१२]

पण फेर अमर-री सुण बुसक्यां[१३] राणा-रो हिवड़ो भर आयो
हूं मानूं हूं, हे म्लेच्छ! तनैं सम्राट,—सनेसो[१४] कैवायो

(३)

राणा-रो कागद बांच हुयो अकबर-रो सपनो सौ[१५] सांचो
पग नैण कर्यो विश्वास नहीं, जद बाच-बांच-नें फिर बाच्यो
कै आज हिमाळो पिघळ बह्यो, कै आज हुयो सूरज शीतळ
कै आज शेष-रो सिर डोल्यो, यूं सोच हुयो सम्राट विकळ

बस दूत इसारो पा भाज्या पीथल-नै तुरत बुलावण-नै
किरणां-रो[१६] पीथल[१७] आ पूग्यो ओ साचो भरम मिटावण-नें

बीं वीर बांकुड़ै पीथल-ने रजपूती गौरव भारी हो
बो क्षात्र-धर्म-रो नेमी हो, राणा-रो प्रेम-पुजारी हो
बैर्यां-रै मन-रो कांटो हो, बीकाणो[१८] पूत खरारो[१९] हो
राठोड़ रणां-में रातो हो, बस सागी[२०] तेज दुवारो हो

आ बात पातस्या जाणै हो, घावां पर लूण लगावण-नै
पीथल-नै तुरत बुलायो हो राणा-री हार बंचावण-नै

---

९ आडावळा (अरावली) पहाड़ १० पीठ पर ११ छाया १२ पतिंगा १३ सिसकियां १४ सन्देश १५ सत्य १६ किरणोंवाला किरणमयीका पति १७ पृथ्वीराज १८ बीकानेरका १९ खरा २० ठीक वही।

पछै मेघै घाव कियौ। सो दूदै ढाल-सूं टाळि दियौ। दूदै पाबूजी-नूं समरि नै मेघै-नूं घाव कियौ। सु माथौ धड़-सूं अळगौ जाइ पड़ियौ। मेघौ काम आयौ।

पछै मेघै-रौ माथौ वाढि-नै दूदौ ले हालियौ। पछै आपरा राजपूतां कह्यौ—मेघै-रौ माथौ धड़ ऊपरा मेल्हौ, बडौ रजपूत छै। पछै दूदै माथौ मेल्हियौ। दूदै कह्यौ—कोई गाम-रौ बगाड़ मती करौ, मेघै-सूं काम हुतौ।

मेघै-नूं मारि दूदौ अपूठौ फिरियौ। आयनै राव जोधै-नूं तसलीम कीधी। राव राजी हुवौ।

जोधैजी दूदै-नूं घोड़ौ सिरपाव दियौ। बहुत राजी हुआ।

उसे दूदेने ढालसे टाल दिया। फिर दूदेने पाबूजीको स्मरण करके मेघ पर वार किया। सो सिर धड़से दूर जा गिरा। मेघा काम आया।

तब मेघेका सिर काटकर दूदा ले चला। अपने राजपूतोंने कहा—मेघेका सिर धड़के ऊपर रखो मेघा बड़ा राजपूत है। तब दूदेने सिरको धड़ पर रखा। फिर दूदेने कहा—मेघके किसी गाँवका बिगाड़ मत करो हमारा तो केवल मेघेसे काम था।

मेघको मारकर दूदा वापिस हुआ। आकर राव जोधेकी तसलीम की। राव प्रसन्न हुआ। जोधेजीने दूदेको घोड़ा और सिरोपाव दिया। बहुत प्रसन्न हुआ।

नवीन राजस्थानी साहित्य

पातल और पीथल

(प्रताप और पृथ्वीराज)

[कन्हैयालाल सेठिया]

[श्री कन्हैयालाल सेठिया आधुनिक राजस्थानीरा समर्थ कवि है। राजस्थानी इतिहासरी इण प्रसिद्ध घटनानै लेयन आप आ अमर कविता लिखी है। भाषारो प्रवाह और ओज इण कवितारा विशेष गुण है।]

(१)

अरे ! घास-री रोटी ही जद बन-बिलावड़ो ले भाग्यो
नान्हो-सो अमरयो[1] चीख पड्यो राणा-रो सोयो दुख जाग्यो

हूं लड्यो घणो, मैं सह्यो घणो, मेवाड़ी मान बचावण-नै
मैं पाछ[2] नहीं राखी रणमें बैर्यां-रो खून बहावण-में
जद याद करूं हळदी-घाटी, नैणां-में रगत उतर आवै
सुख-दुख-रो साथी चेतकड़ो[3] सूती-सी हूक जगा ज्यावै
पण आज बिलखतो देखूं हूं जद राज-कंवरनै रोटी-न
तो क्षात्र-धर्म-नै भूलूं हूं भूलूं हिंदवाणी चोटीनै

मैंलां-में छप्पन भोग जका मनवार बिना करता कोनी
सोना-री थाळ्यां नीलम-रा बाजोट[5] बिना धरता कोनी
ऐ हाय ! जका करता पगल्या[6] फूलां-री कंवळी सेजां पर
बै आज रुळै भूखा तिसिया[7] हिंदवाणे-सूरज[8]-रा टाबर
आ सोच हुई दो टूक तड़क राणा-री भीम-बजर छाती
आंख्यांमें आंसू भर बोल्या - हूं लिखस्यूं अकबर-नै पाती

---

१ अमरसिंह महाराणा प्रतापके पुत्रका नाम था २ कमी रखी पीछे रहा ३ चेतक प्रतापके घोड़ेका नाम था ४ महकीम ५ पट्टे ६ धीरे-धीरे पैर रखते ७ प्यासे ८ हिंदुआसूर्य मेवाड़के राणाओंकी उपाधि है।

(२)

पण लिखूं किया, जद देखै है आडावळ[९] ऊंचो हियो लिया
चित्तोड खड्यो है मगरां-में[१०] विकराळ भूत-सी लियां छियां[११]
हूं झुकूं कियां? है आण मनै कुळ-रा केसरिया बाना-री
हूं बुझूं किया, हूं शेष लपट आजादी-रा परवानां-री[१२]

पण फेर अमर-री सुण बुसक्यां[१३] राणा-रो हिवड़ो भर आयो
हूं मानूं हूं, हे म्लेच्छ! तनै सम्राट,—सनेसो[१४] कैवायो

(३)

राणा-रो कागद वांच हुयो अकबर-रो सपनो सौ[१५] सांचो
पण नैण कर्‌यो विश्वास नहीं, जद वाच-वाच-नै फिर वांच्यो
कै आज हिमाळो पिघळ बह्यो, कै आज हुयो सूरज शीतळ
कै आज शेष-रो सिर डोल्यो, यूं सोच हुयो सम्राट विकळ

बस दूत इसारो पा भाज्या पीथल-नै तुरत बुलावण-नै
किरणां-रो[१६] पीथल[१७] आ पूग्यो ओ साचो भरम मिटावण-नै

बीं वीर बांकुडै पीथल-नै रजपूती गौरव भारी हो
बो क्षात्र-धर्म-रो नेमी हो, राणा-रो प्रेम-पुजारी हो
वैर्‌यां-रै मन-रो कांटो हो, बीकाणो[१८] पूत खरारो[१९] हो
राठोड़ रणां-में रातो हो, बस सागी[२०] तेज दुधारो हो

आ बात पातस्या जाणै हो, घावां पर लूण लगावण-नै
पीथल-नै तुरत बुलायो हो राणा-री हार बंचावण-नै

---

९ आडावला (अरावली) पहाड़ १० पीठ पर ११ छाया १२ पतिंगा १३ सिसकिया १४ संदेश १५ सारा १६ किरनोंवाला, किरणमयीका पति १७ पृथ्वीराज १८ बीकानेरका १९ खरा २० ठीक वही ।

(४)

म्हे बांध लिया है, पीथळ! सुण पिंजरे-में जंगळी सेर पकड़
यो सच हाथ-रो कागद है, तू देखां, फिरसी किंयां अकड़
मर डूब चळू भर पाणी-में बस झूठा गाल बजावै हो
पण[21] टूट गयो बीं राणा-रो तूं भाट बण्यो बिड़दावै[22] हो
मैं आज बादस्या धरती-रो मेवाड़ी पाघ[23] पगां-में है
अब बता मनै, किण रजवट रै रजपूती खून रगां-में है?

जद पीथळ कागद ले देखी राणा-री सागी सैनाणी
नीचै सूं धरती खिसक गयी, आंख्यां-में आयो भर पाणी
पण फेर कही ततकाळ संभळ,— आ बात सफा[24] ही झूठी है
राणा-री पाघ सदा ऊंची, राणा-री आण अटूटी है

ल्यो हुकम हुवै तो लिख पूछूं राणा-नै कागद-रै खातर
लै पूछ भलां ही पीथळ! तू, आ बात सही बोल्यो अकबर

(५)

म्हे आज सुणी है, नाहरियो स्याळां-रै सागै सोवैलो
म्हे आज सुणी है, सूरजड़ो बादळ-री ओटां खोवैलो[25]
म्हे आज सुणी है, चातगड़ो धरती-रो पाणी पीवैलो
म्हे आज सुणी है, हाथीड़ो कूकर-री जूणां[26] जीवैलो

म्हे आज सुणी है थकां खसम[27] अब रांड हुवैला रजपूती
म्हे आज सुणी है, म्यानां-में तरवार रवैला[28] अब सूती
तो म्हां-रो हिवड़ो कांपै है, मूंछ्यां-री मोड़-मरोड़ गयी
पीथळ-नै, राणा! लिख भेजो आ बात कठै तक गिणां सही?

---

२१ प्रण प्रतिज्ञा २२ बखाण्या कर २३ पगड़ी २४ बात ही २५ भी बादल छिप जायगा २६ योनि २७ पति के होते हुए २८ रहेगी।

(६)

पीथळ-रा आखर पढता-ही राणा-री आख्या लाल हुयी
धिक्कार मनै, हू कायर हू, नाहर-री अेक दकाळ[२९] हुयी
हू भूख मरू', हू प्यास मरू', मेवाड़ धरा आजाद रवै[३०]
हू घोर उजाड़ां-में भटकू, पण मन-में मा-री याद रवै

हू रजपूतण-रो जायो हू, रजपूती करज चुकाऊंला
ओ सीस पड़ै, पण पाघ नहीं, दिल्ली-रो मान झुकाऊंला

(७)

पीथळ ! के खमता[३१] बादळ-री, जो रोकै सूर-उगाळी-नै[३२]
सिंघां-री हाथळ[३३] सह लेवै, वा कूख[३४] मिली कद स्याळी नै
धरती-रो पाणी पियै, इसी चातक-री चूंच वणी कोनी
कूकर-री जूणां जियै, इसी हाथी-री वात सुणी कोनी

आं हाथां-में तरवार थकां कुण रांड कवै है रजपूती ?
म्यानां-रै बदळै वैरयां-री छात्यां-में रैवैली सूती

मेवाड़ धधकतो अंगारो आंच्यां-में चमचम चमकैला
कड़खा-री[३५] उठती तानां पर पग-पग पर खांडो खड़कैला
राखो थे मूछ्यां अैंठ्योड़ी[३६] लोही[३७]-री नदी वहा दूंला
हू तुरक कहूंला अकबर-नै, उजड्यो मेवाड़ बसा दूंला

जद राणा-रो संदेस गयो, पीथळ-री छाती दूणी ही
हिंदवाणो सूरज चमकै हो, अकबर-री दुनिया सूनी ही

---

२९ गर्जना ३० रहे ३१ क्या सामर्थ्य ३२ उदयको ३३ हाथकी चपेट ३४ कोख, सतान ३५
३६ अैंठी हुई, बल खायी हुई ३७ लोहूकी ।

खेतमें

[कवर मोतीसिंह]

[कवर मोतीसिंह राजस्थानी ग्राम-जीवणरा कवि है। कदेई प्रकृतिरो सादगी-पूर्ण चित्रण करै तो कदेई करुण कहाणी कैण लाग ज्यावै। अबै कींक दार्शनिक भी हो चाल्या है।]

(१)

आज मोरियां ! राग सोव्रणी
मनै घणी मन भाव्रै
पिऊ-पिऊ[1] सुण प्यासो हिव्रडो
जी-री प्यास बुझाव्रै

(२)

हरियो-भरियो खेत सोव्रणो
सरव्ररियो लहराव्रै
धीमी-धीमी परव्रा[2] चालै
मनडै मोद न मावै

(३)

आभैमें[3] वादळिया दौडै
झिरमिर मेव्रलो[4] आसी
वाजरै बूंटामें[5] प्यासी
वेळां पाणी पासी

(४)

आधी[6] ढळतां आय खुसीसूं
चास्यूं जद सो जास्यूं
दिन-ऊगांरी ठंडी हव्रामें
चास्यूं जद उठ जास्यूं

---

१ पीहू-पीहू बोली २ पुरवाई हवा ३ आकाशमें ४ मेह ५ पौधोंमें ६ आधी रात।

(५)

काळी-काळी रात अंधारी
चमचम चमकै तारा
पड़ी ओस मोतीड़ा बणसी
पूर मिळोसी म्हारा

(६)

सोवन म्हारो स्याणो भाई
माथै सागै आसी
सरवरियैरी पाळ सहारै[८]
बैठ्यो गाय चरासी

कसदे ८ पास

कणका

[बदरीप्रसाद आचार्य 'किंकर']

[किंकरजी राजस्थानरा आधुनिक संत-कवि है। आपरी कविताारा प्रधान विषय भक्ति और वैराग्य है। स्वाभाविक, सीधी और मुहावरैदार भाषामें मर्मनै स्पर्श करती बात कैवणी—आ आपरी विशेषता है।]

किंकर, गाळ्ह गभीर नदी-किनारै पर खड्यो
ले ज्यासी[1] वध[2] नीर चौमासो जद आवसी

आला-सूका सैन[3] स्वाहा हुवै जग-भट्टमें
किंकर, कदे बुझै न कई बळ्या[4], बळसी कई

सावण भादव मास वेसी[5] तो आसोज तक
तीजै मास विनास किंकर, विसवा वीस[6] है

होसी अेक दिन राख साख[7] सायवी[8] संपदा
वरस मास या पाख किंकर, कइ[9] निसचै नहीं

सरप मींडको खाय मींडक माछरनै भखै
किंकर, दीसै नांय मौत सीस पर ही खड़ी

वधै मिनखसूं प्रीत दुनिया करती ही फिरै
किंकर, देख अनीत राम नहीं चितमें चढै

गीता जिसड़ो ग्रंथ होस थकां वाच्यो नहीं
दुनिया ऊंधो पथ मिरत-काळ[10] गीता सुणै

कस्यो किसो वौपार किंकर, खोयो मूळ धन
विकग्यो घर अर वार पड्यो जेळमें जगतरी

आळस रोग महान और रोग, किंकर, किसो ?
साधन-धनरी[11] हाण पळ-पळमें किंकर, करै

मत मनसूवा, बांध आयैमें संतोस कर
खा लै दळिया रांध जीभ दिखावै अम-पुरी

ऊंची गादी बैठ किंकर, नीची नाड़[12] रख
हुकम हुडी पैठ चलै जित ही है चलै

देस-धणी कंगाल किंकर, सपनैमें वण्यो
जाग्यां फेर नृपाळ आ ही गत इण जगतरी

---

१ ले जायगा २ बढ़कर ३ सभी ४ जल गये ५ अधिक ६ निश्चय ही ७ प्रतिष्ठा ८ प्रभुत्व ९ कुछ १० मृत्युके समय ११ साधना रूपी धनकी १२ गर्दन

लाभू बाबो

(भवरलाल नाहटा)

लाभू बाबो ठेट् वासिंदो किसै गावरो हो आ तो मालम कोनी पण म्हारा बापोती-रा गांव डाडूसरमें परणियो हो जिणसूं म्हे तो उणनै उठारो ही समझता। धोला मूंढारो छोरो, जवान, हो जदसूं ही म्हारा घरमें रेंवतो आयो हो। हो तो बो दो रुपियांरो महीनैदार पण म्हारा घररा लोगा उणनै कदेई नौकर को समझियो नी। काई छोटा अर काई बडा—सगला उणरो आदर करता। बडा लोग लाभू, लुगाया लाभूजी, और म्हे टाबर लाभू बाबो कै'र बतलावता। बा'रला लोग लाभू बाबानै म्हारा ही घररो आदमी समझता। लाभू बाबो आप म्हारा घरनै ही आपरो घर समझतो। टाबरपणामें म्हे उणरै सागै जीमियोडा हां।

लाभू बाबो गोरा रगरो, तकड़ा सरीररो अर सपेत दाढ़ीरो पैंसो जवान हो। दोवटीरी जाडी धोती और बडी पेरतो। माथा माथै मुलमुलरी पाग बाधी राखतो। गळामें हरदारी कठी और हाथमें काठरा मिणियारी माळा हर दम रेंवती। सीयाळामें देसी ऊनरी कामळ ओढतो। ओ लाभू बाबारो पैरेस हो।

लाभू बाबो जातरो मडीवाळ धनावसी साध हो। बापरो नाव श्रीकिसनदास, काकारो बुद्धरदास अर भाईरो नाव आणदो हो। काको बुद्धरदासजी रामायण, महाभारत वगैरा शास्त्रारा मोटा पिंडत हा। लाभू बावै टाबरपणामें उणा कनै शास्त्रारो ग्यान सीखियो। टाबरपणामें सीखियोड़ा इण ग्यानसूं लाभू बाबो बिना पढिया हीज पिंडत हुग्यो हो। उणनै शास्त्रा और पुराणा तथा इतिहासरी कुण जाणै कित्ती बाता याद ही। लाभू बाबो भणि-योड़ो कोनी हो पण ग्यानमें बडा-बडा भणियोड़ानै छेड़ै बैसाणतो। लाभू बाबो कह्या करतो—नाणो अटरो, विद्या कठरी।

लाभू बाबो म्हारा घरमें चाळीस बरसासूं कम को रह्यो नी। बो अेकलो जको काम करतो बो आज च्यार आदमियासूं कोनी हुवै। झाझरकै च्यार बज्या उठतो। उठनै भजन करतो। पछै सगळा घरमें बुवारी देतो, पाणी छाणतो, बिलोवणो करतो, पोटा थापतो, ठाणारी सफाई करतो, गाया-भैंस्या नै पाणी पावतो अर नीरो नाखतो। पछै दूजा काम करतो।

म्हारै हुणी चिड़ीरो काम हुतो। कोर चाकिया कोनी हा, इणरो रुपिया रोकड़ चाइजै-छे ब्याजरो रो काम पड़तो। ओ सगळो काम अमू बाबो करतो। मुनियोंमें अेक आसर को हो नी पण बाबू रुपियारो काम सुगता देतो और करेई अेक पईसे री ही भूल को पड़ी नी।

गाव-गोठरी बीरगत हुवैसू म्हारै अठै वारको फेरो पड़ो हो। रोज दस-पाच आदमी आया-गया रेवता। उण दिनामें कलरी चक्की तो ही कोनी हाथसू आटो पीसणो पड़तो। पीसारजिया आटो पीसती। अमू बाबै थका मेन मौके आयरा फोड़ करेई को देखणा पड़ता नी। बिना कह्या आपी सवरा उठ-नै घमड़ घमड़ ढूवा नाखतो दिन ऊगतो जद आवमत आटो त्यार।

अमू बाबो काम करतै सदा आवे त्यार हीव रेवतो। हरेक आदमीरो काम निःस्वार्थ-भावसू करतो। भरतो तो कर्ज, गवारो भी कोई कणो काम बारी बताबतो तो ऊतर को देतो नी। देखो सुमता पाण मन बोलतो—आयो। बीमतो हुतो तो थाळी छोड किनारे हाथ धोयनै था हाजर हुतो। केई बामन रुचियोड़ो हुतो तो-ई आ करेई को केवतो नी के फलाणो काम करूं हूं। 'अेक आयो' शब्द हीव सदा मूंडासू नीकळतो। अमू बाबो कैवतो—'हूं फलाणो काम करूं हूं' इयान कैवो अेक वरासू ऊतर देवो है। कामरो ऊतर देवो अमू बाबो जाणतो ही कोनी हो।

टाबरानै, विशेषकर म्हा तीनानै—काकोजी मेघराजजी, काकोजी मगराजजी और म्हनै, बडी हीयाजीसू राखतो। अेकनै गोदीमें, दूजानै लाखा मावै अर तीजानै मगरा मावै राखिया काम करतो रेतो। म्हानै घणा मोकाला अर दूहा सुणावतो। छिनरा पड़ती जद म्हे अमू बाबानै बात केवण वास्तै पकड़नै बेठाय देता। बाबो म्हांरी फरमाव अर रोंच सुणव बातां सुणावतो—करेई रामायणरी करेई महाभारतरी, करेई इतिहासरी करेई पुराणरी करेई भरतरी करेई भरतोजीरा भाईरारी।

अमू बाबो रामरो भगत कर्तव्यशील और निर्लोभी हो। रामारी कथावांरा आदरा वाणे आपरा जीवनमें उतारिया हा। दिन-रात काम करता थकां भी, मूंडामें रामरो नाम हरदम रेवतो। काम करतो जावतो अर भजन गावतो जातो। म्हारा बडा अमू बाबानै दो रुपिया महीनो मिळतो। भला-भला ठाकुरा पनरे रुपिया महीनो नै

रोटी-कपड़ो धामियो पण लाभू बाबै दूजे घर नौकरी नहीं करी स नहीं करी। लाभू बाबो प्रेमरो भूखो हो, टकारो लोभी को हो नी।

मन्नानीमें लाभू बाबो घणो तागतवर हो। अेक वार वडा दादाजी दानमलजीरी हवेली चिणीजती ही जद पथररी रास चढावण वास्तै हमालानै बुलाया। दस-दस मण भारी अेकलिया देखनै हमाला जीभ काढ दी। जद सेठा लाभू बाबानै बकारियो। लाभू बाबै अकेलै वे दस-दस मणरा अेकलिया चढा दिया।

जतियारी हालत देखनै लाभू बाबो कह्या करतो—

केई जती सेवड़ा सिर मूंडा।
करमा-री गतसू हुया भूंडा॥

लाभू बाबै कई मेख, जीमण, जींवतखर्च आपरा नै आपरी सामणरा करिया। हिन्दू और जैन तीरथारी जात्रावां करी। और मरतो सईकड़ू रुपिया आपरी लुगाई मोलारै वासतै छोडग्यो। दो-च्यार रुपिया कमावणआळो आदमी किण भात सुखी जीवण विता सकै, लाभू बाबो इणरो प्रतख उदाहरण हो।

लाभू बाबै आपरा जीवणरा शेष दिन गांवमें गालिया। मांचा माथै बैठो-सूतो हरदम भजन करतो रैवतो। म्हां टाबरांनै देखण सिवाय कैई बात-री मनमें ही कोनी ही। पिताजी मिलण वासतै गांव गया जद उणांनै आया सुणतां पाण उभाणै पगां सौ पांवडां साम्हो आयो। लोगांनै घणो अचरज हुयो कै आज बाबारा बूढा पगांमें इती शक्ति कठा-सू आयगी।

लाभू बाबानै स्वर्गवासी हुयां आज बीस वरस हुग्या है पण म्हारा मनमें बाबारी अर बाबारा गुणांरी याद आज ताणी ताजी है।

पुस्तक-परिचय *

१ बादळी—लेखक-कंवर चंद्रसिंह। भूमिका-लेखक—सीतामऊ-महाराजकुमार श्रीरघुवीरसिंहजी। आकार—डबलक्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या १२+१०२। मोटा अेंटीक कागज। बीकानेर-महाराजकुमारका चित्र। कलापूर्ण रंगीन चित्रवाला आवरण पृष्ठ। प्रथमावृत्ति, सं० १९९८। मूल्य १)। प्रकाशक—प्राच्य-कला-निकेतन, बीकानेर (अब जयपुर)

ऋतुओंमें वर्षा ऋतुका अपना निराला महत्त्व है। वसंत ऋतुराज कहा गया है तो वर्षाको ऋतुओंकी रानी कहा जा सकता है। वसंत राजसी ऋतु है, वर्षा सर्वहारा वर्गका। वसंत जीवनको नाना रूपोंमे प्रकट करता है पर उसका मूल आधार तो वर्षा ही है। भारतके लिअे वर्षा बड़े महत्त्वकी ऋतु है पर राजस्थानका तो वह जीवन ही है—राजस्थानका जीवन ही उस पर निर्भर है। फलत. प्रत्येक राजस्थानी कवि वर्षासे अभूतपूर्व प्रेरणा पाता है और वर्षाका वर्णन करते समय उसका हृदय उसके साथ पूर्णरूपेण तदाकार हो जाता है।

वादळी (हिन्दी बदली) राजस्थानी भाषाका अेक सुन्दर प्रकृति-काव्य है। इसमे वर्षाकालके नाना-रंगी चित्र बड़ी ही स्वाभाविक और सरस भाषामें अंकित किये गये हैं। दूहा छंद लिखनेमें चंद्रसिंह अद्वितीय हैं।

ग्रन्थके आरम्भमे सीतामऊके महाराजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंहजीकी छोटी सी सारगर्भित प्रस्तावना है और अन्तमें पं० रावत सारस्वतका हिंदी अनुवाद। जैसा सुन्दर काव्य हुआ है वैसा ही सुन्दर यह अनुवाद है जो कहीं-कहीं तो मूलसे भी अधिक सुन्दर हुआ है। काव्यमें आये कठिन और अपरिचित राजस्थानी शब्दोंके हिन्दी अर्थ अन्तमें शब्दकोष देकर दिये गये हैं।

---

* इस स्तंभमें आलोचित सभी पुस्तकें नवयुग ग्रन्थ-कुटीर, पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता, बीकानेर (राजपूताना) के पतेसे मंगायी जा सकती है।

इस ग्रन्थको बीकानेरके युवराज (अब महाराजा) श्री सादूलसिंहजी बहादुर ने पुरस्कृत करके अपनी काव्य-मर्मज्ञता और मातृ-भाषा-प्रेमका परिचय दिया है जिसके लिये वे सब प्रकारसे बधाईके पात्र हैं।

पुस्तक प्रत्येक दृष्टिसे सुन्दर और संग्रहणीय है।

—नरोत्तमदास स्वामी

२ सती बाबा भगाजी पवार—लेखक—शिवसिंह महाजी चोयल। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या ६+३ । प्रथमावृत्ति, सं० २००२। मूल्य लिखा नहीं। प्रकाशक—सीरवी नवयुवक मंडल, बिलाड़ा (मारवाड़)

चौधरी शिवसिंहजी चोयल राजस्थानी लोक-साहित्यके अच्छे अनुशीलक हैं। ग्रामीण लोक-साहित्यका आपने अच्छा संग्रह कर रखा है। इस पुस्तिकामें सीरवी जातिके एक सन्त कवि भगाजी सतीका परिचय और उनकी कुछ लोक-प्रचलित कविताएं दी गयी हैं। अन्तमें आई माताका संक्षिप्त परिचय दिया गया है जो सीरवी जातिकी इष्टदेवी हैं।

३ सती कागणजी—लेखक आदि ऊपर लिखे अनुसार। पृष्ठ संख्या १९। प्रथम संस्करण, सं० १९९४।

इस पुस्तिकामें चौधरीजीने सीरवी जातिमें होनेवाली सती कागणजीका संक्षिप्त जीवन-परिचय देकर उपरोक्त सती भगाजीकी बनायी हुई निसाणी दी है जिसे भक्त लोग प्रत्येक मासकी शुक्लपक्षकी द्वितीयाको एकत्र होकर गाया करते हैं। निसाणीमें सतीजीका चरित्र विस्तारसे वर्णित है।

४ आई-आयण-विलास—लेखक—व्यास भवानीदास आलावत पुष्करणा। संपादक—चौधरी शिवसिंह महाजी चोयल। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या ४+१२ =१२४। प्रथमावृत्ति, सं० २००३। मूल्य १)। प्रकाशक—सीरवी नवयुवक मंडल बिलाड़ा (मारवाड़)।

इस ग्रन्थमें १०२ छन्दोंमें राजस्थानी भाषामें भगवती आई माताका चरित्र वर्णित है। इसके रचयिता व्यास भवानीदास आई माताके दीवान राजसिंहके समयमें बडेर बिलाड़ाके कामदार थे। आई माताके उपासक इसको वैसे ही प्रकार पूज्य मानते हैं जिस प्रकार सिक्ख गुरु-ग्रन्थसाहबको और आर्यसमाजी सत्यार्थ प्रकाशको। चौधरी शिवसिंहजीने इसका प्रकाशन करके इसे सर्वसाधारणके लिये

सुलभ कर दिया है। संपादन हस्तलिखित प्रतिके आधार पर योग्यताके साथ किया गया है। कठिन शब्दोंके अर्थ नीचे टिप्पणी देकर दिये गये हैं। ग्रन्थ पठनीय है।

—रकण शर्मा

५ राजस्थानके ग्रामगीत, भाग १—संग्रहकर्त्ता—पं० सूर्यकरण पारीक तथा गणपति स्वामी। संपादक—ठाकुर रामसिंह और प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या १४+११६। पारीकजीका चित्र। प्रथमावृत्ति, स० १९९७। मूल्य ।।।)। प्रकाशक—गयाप्रसाद अेंड सन्स, आगरा।

पं० सूर्यकरण पारीक राजस्थानके अेक उत्कृष्ट साहित्यकार थे। स० १९९५ में उनका अकस्मात देहावसान हो गया। उनकी स्मृतिमे बीकानेरके राजस्थानी साहित्य-पीठने सूर्यकरण पारीक राजस्थानी ग्रन्थमाळाकी स्थापना की जिसका प्रकाशन आगराके प्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक गयाप्रसाद अेंड सन्सने करना आरंभ किया। प्रस्तुत ग्रथ उसी पुस्तकमालाका प्रथम ग्रथ है। इसमे, राजस्थानके ठेठ देहाती जीवनक ६३ लोकगीतोंका संग्रह है। साथमें हिन्दी अनुवाद तथा आवश्यक टिप्पणिया भी दी हुई हैं जिससे राजस्थानी न जाननेवाळे भी सहज ही गीतोंका आनन्द ले सकते हैं। संगृहीत गीतोंमेंसे अधिकांश स्वयं स्वर्गीय पारीकजी क या उनके शिष्य पं० गणपति स्वामीके संग्रह किये हुअे हैं। ये गीत जिस प्रकार साहित्यकी अमर निधि हैं उसी प्रकार भारतीय ग्राम्य संस्कृतिका सजीव रूप भी। इनमें घरेलू जीवनकी मधुर झांकी पग-पग पर मिलती है। मनुष्यने कलाके नये-नये प्रयोगोंमें, और साहित्यकी नानाविध आलकारिक शैलियोंमे, बहुत कुछ सौंदर्य बटोरा है परन्तु इस प्रयासमें उसने क्या कुछ खोया है इसका अन्दाज इन ग्राम्य गीतोंकी सहज सरल माधुरीमे थोडी देर तक निमग्न हुअे बिना नहीं मिलता। इनके नाम-हीन रचयिताओंके ऊपर अनेक विद्यापति और जयदेव निछावर होते हैं।

६ राजस्थान-भारती (त्रैमासिक पत्रिका)—संपादक—डाक्टर दशरथ शर्मा, अगरचद नाहटा और प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी। आकार—रायल अठपेजी। मोटा अटीक कागज। पृष्ठसंख्या २+१०४+२६=१३२। वार्षिक मूल्य ८)। महिलाओं, विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा सार्वजनिक संस्थाओंके लिअे रियायती

वार्षिक मूल्य ६)। अेक अंकका मूल्य २॥)। प्रकाशक—प्रधानमंत्री श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर।

गत वर्ष बीकानेरके कतिपय प्रमुख विद्वानोंने बीकानेर-नरेश महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुरके संरक्षणमें श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट नामक संस्था स्थापित की थी। यह संस्था राजस्थानकी भाषा, साहित्य और इतिहास संबंधी खोजका काम करती है। यह त्रैमासिक पत्रिका इसी संस्थाकी मुखपत्रिका है। इसका प्रथम अंक हमारे सामने है। इसमें नीचे लिखे महत्त्वपूर्ण लेख हैं जो अपने विषयके अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखे गये हैं—पृथ्वीराज-रासो ओल-माताका गीत राजस्थानी साहित्य, कविवर जान और उसके ग्रंथ, चारणके शिलालेख बीकानेरका अेक आदर्श संग्रहालय राजस्थानकी वर्षा-संबंधी कहावत, राजस्थानी मुहावरे। इनके अतिरिक्त लोक-साहित्य, प्राचीन राजस्थानी साहित्य और नवीन राजस्थानी साहित्य इन तीन विभागोंके अन्तर्गत बहुत सुन्दर सामग्रीका संचय किया गया है। अंतमें अेक लेख अंग्रेजीमें पृथ्वीराजरासो पर दिया गया है। इन्स्टीट्यूटके प्रथम वर्षका कार्यविवरण भी साथमें दिया गया है जो केवल २६ पृष्ठोंमें छपा है। अैसी सर्वांग-सुंदर पत्रिकाके प्रकाशनके लिये विद्यानुरागी बीकानेर-नरेश बीकानेरके प्रधानमंत्री, इन्स्टीट्यूटके कार्यकर्ता और संपादक सभी हमारे हार्दिक अभिनंदनके पात्र हैं।

—रामचन्द्र सक्सेना

७ प्रतिमा (साहित्यमाला —संपादक—सीताराम चतुर्वेदी, हरिहरशरण मिश्र, भवानीप्रसाद तिवारी रामेश्वरप्रसाद लक्ष्मीनारायण शुक्ल। आकार—डिमाई अठपेजी। पृष्ठसंख्या २+८२। कलापूर्ण आवरण। अेक पुस्तकका मूल्य ॥।=)। वार्षिक मूल्य (१)। प्रकाशक —हिंद किताब्स, पोस्ट बाक्स १ ६३, बंबई।

पिछली विजयादशमीसे यह साहित्यिक निबंधमाला प्रकाशित होने लगी है। संपादकीय शब्दोंमें 'भावमय चित्र रसवती कहानियां विनोदपूर्ण व्यंग्य, चुभते चुटकुले, कलापूर्ण शब्दचित्र विश्वसाहित्यके परिचयात्मक सारांश भाषाशैलियों की मनोहरतावालीसे भरी हुई साहसपूर्ण यात्राओं युगधर्मको पुकारकर जगानेवाली सशक्त कविताओं—सभीका प्रतिमाके अंकमें इस प्रकार पोषण होगा कि उसके रोचक और स्वस्थ रूपोंसे परिचय पानेवाले पाठकके मन और हृदयके लिये

यथेष्ट और उपयुक्त सामग्री मिल सकेगी। प्रतिभाका यह भी उद्देश्य होगा कि वह रूप, भाषा और विषयचयन तीनों दृष्टियोंसे वाचकोंको संतुष्ट करे।'

संपादक अपने उद्देश्यमें बहुत अंश तक सफलता प्राप्त करनेमें समर्थ हुअे हैं। प्रथक अंकमें संपादकीय सहित १७ लेख हैं। सभी लेख सुंदर हैं। श्री सीताराम चतुर्वेदीका दानवोंके बीच शीर्षक साहसयात्राका आत्मचरितात्मक लेख हमें सबसे अच्छा लगा। सपादकीय टिप्पणियोंमें प्रगट किये गये विचार स्वस्थ भावनाके द्योतक हैं। पुस्तकमाला निस्संदेह हिंदीके लिअे गौरव बढानेवाली सिद्ध होगी।

नरोत्तमदास स्वामी

८ हिमालय (साहित्यिक निबंधमाला)—संपादक—शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी। आकार—डिमाई अठपेजी। पृष्ठसख्या १०० से ऊपर। कलापूर्ण आवरण। अेक पुस्तकका मूल्य १)। वार्षिक मूल्य १०)। प्रकाशक—पुस्तक-भण्डार, हिमालय प्रेस, पटना।

यह साहित्यिक पुस्तकमाला पिछले जून महीनेसे प्रकाशित होने लगी है और अभी तक सात अंक प्रकाशित हुअे हैं। सभी अक प्रत्येक दृष्टिसे उत्कृष्ट हैं। लेखोंका चुनाव बहुत सुंदर है। हिंदीके पत्र-पत्रिका सहित्यकी नियमित और स्वस्थ आलो-चना इस पुस्तकमालाकी अेक महत्त्वपूर्ण विशेषता है जो साधारण पाठक और विद्वान दोनोंके लिअे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

—शिवशर्मा

संपादकीय

राजस्थान अेक महान प्रांत है। वह अनेक महानताओंका आकर है। उसके उज्ज्वल इतिहास पर देशके बच्चे-बच्चेको गर्व है। आज भी उसका नाम सुनकर ही हृदय-तंत्री झनझना उठती है। उसके साहित्य पर बड़े-बडे महारथी मुग्ध हैं। पर आज उसके उस उज्ज्वल अतीत पर, उसके समस्त गौरव पर, अंधकारके स्तर-पर-स्तर जमे पडे हैं। उसकी भाषा, उसका साहित्य, उसका इतिहास, उसकी कला सब आज अज्ञानके गहरे गर्त्तमे दबे हैं। उनको प्रकाशमें लाना प्रत्येक देश-हितैषीका, विशेषतः राजस्थानके सपूतोंका, परम आवश्यक कर्त्तव्य हो जाता है।

राजस्थानी साहित्यके प्रकाशनके छुटपुट प्रयत्न हुअे हैं पर वे सभी सब प्रकारसे अपर्याप्त हैं। व्यवस्थित रूपमें प्रयत्न आरंभ करनेकी आवश्यकता अभी तक बनी हुई है। इस दिशामें बहुत विलब हो चुका है। अधिक विलंब घातक होगा। राजस्थानीका प्रकाशन इसी कर्त्तव्यका पालन करनेके लिअे किया जा रहा है।

आजसे कोई आठ वर्ष पूर्व राजस्थानी साहित्यके प्रकांड विद्वान पं० सूर्यकरण पारीकने इस विषयकी अेक व्यापक योजना बनायी थी और उसे कार्य-रूपमें परिणत करनेके लिअे स्वयं कटिबद्ध हुअे थे। उनने कलकत्तेकी राजस्थान रिसर्च सोसाइटीके उत्साही कार्यकर्त्ता श्रीयुत रघुनाथप्रसादजी सिंहाणियाके सहयोगसे अेक उच्चकोटिकी शोध-संबंधी त्रैमासिक पत्रिकाके प्रकाशनकी योजना की। वे स्वयं उसके प्रधान सपादक बने। प्रथम अंक प्रेसमें छप ही रहा था कि दुर्भाग्यसे उनका अकस्मात देहात हो गया। उनके सहयोगियोंने कार्यको चालू रखा और पत्रिका सजधजके साथ निकली। सर्वत्र उसका अपूर्व स्वागत हुआ। पर दुर्दैवको यह भी मंजूर न था। सिंहाणियाजीको अन्यत्र व्यावसायिक कामोंमें बहुत व्यस्त होना पडा जिससे पत्रिकाके ग्राहकादि नहीं बनाये जा सके। व्यवस्थाके अभावमें पत्रिकाको बंद करना पडा। तभीसे हम इस प्रयत्नमें थे कि प्रकाशन और व्यवस्थाका कोई अच्छा प्रबंध हो जाय तो पत्रिकाको शीघ्र-से-शीघ्र पुनर्जीवित किया जाय।

अब राजस्थानी-साहित्य-परिषद्की शोधसंबंधी निबंधमाळाके रूपमें इसका प्रकाशन किया जा रहा है। अत्यत हर्षका विषय है कि निबंधमाळाका प्रकाशन भारतके स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी मंगलमय तिथिसे आरंभ हो रहा है।

मातृभूमि और मातृभाषाकी सेवाके इस पवित्र यज्ञमें भाग लेनेके लिये हम समस्त राजस्थानी भेवं राजस्थान प्रेमी बन्धुओंको सम्मान और उत्साहके साथ आमंत्रित करते हैं। विद्वानोंसे हमारी विनीत प्रार्थना है कि आप अपना पूर्ण सहयोग हमें प्रदान कर। आपके सहयोग पर ही हमारी सफलता निर्भर है।

निबंधमाळाका आरंभ अभी छोटे रूपमें किया जा रहा है। कागज और प्रेस संबंधी कठिनाइयोंके कारण असे हम सजधजके साथ नहीं निकाल सके हैं। हमें इसके इस रूपसे संतोष नहीं है पर वर्तमान परिस्थितियोंमें हमें किसी-न किसी प्रकार निभना पड़ा है। नीचे लिखे परिवर्तन हम शीघ्र करना चाहते हैं—

(१) निबंधमाळाकी पृष्ठसंख्या बढ़ा दी जाय— प्रत्येक भाग कम-से कम २०० पृष्ठोंका निकले।

(२) राजस्थानी कलाके उत्तमोत्तम नमूने निबंधमाळाके प्रत्येक भागमें प्रकाशित हों।

(३) आधुनिक राजस्थानी साहित्यके लिये प्रत्येक भागमें लगभग ५० पृष्ठ रहें (आधुनिक राजस्थानी साहित्यकी अेक मासिक-पत्रिका मरु-भारतीके प्रकाशनकी योजना भी की जा रही है)।

(४) निबंधमाळाके समस्त लेखकोंको लेखोंके पारिश्रमिकके रूपमें पर्याप्त पुरस्कार प्रदान किया जाय।

हमारी इन इच्छाओंकी पूर्ति राजस्थानके उदार और साहित्यप्रेमी राजा रईसों सरदारों सेठ-साहूकारों आदि धनी-मानी सज्जनोंकी सद्भावना पर अवलंबित है पर हमें यह दृढ़ विश्वास है कि हम उनकी यह सद्भावना प्राप्त करनेमें समर्थ होंगे। पत्रिकाके आरंभमें दिया हुआ निम्नलिखित मूलमंत्र हमारे विश्वासको सदा अटल रखेगा—

> उत्तिष्ठत जागृतम् योक्तव्यं भूति-कर्मसु
> भविष्यतीत्येव मनः कृत्वा सततमव्ययैः
> उठो जागो और बिना घबराये कल्याणके कार्योंमें लग जाओ,
> मनमें यह दृढ़ धारणा बना लो कि यह काम तो होगा ही।

राजस्थानी साहित्य परिषद, कलकत्ता

उद्देश्य

(१) प्राचीन राजस्थानी साहित्यकी शोध और प्रकाशन

(२) राजस्थानी लोक-साहित्यका संग्रह और प्रकाशन

(३) राजस्थानी भाषाका अध्ययन और विकास

(४) नवीन राजस्थानी साहित्यका निर्माण और प्रकाशन

प्रवृत्तियां

(१) राजस्थानी— शोध-संबंधी निबंधमाला

(२) राजस्थान भारती ग्रंथमाला—
प्राचीन और नवीन राजस्थानी साहित्यकी उच्च कोटिकी ग्रंथमाला

(३) भरमीराम राकण पुस्तकमाला—
धार्मिक और लौकिक साहित्यकी सस्ती लघु ग्रंथमाला

(४) राजस्थानी पाठ्यपुस्तक-माला

(५) शंकरदान नाहटा राजस्थानी पुरस्कार

प्रस्तावित प्रवृत्तियां

(१) राजस्थानी भाषाकी परीक्षाएं

(२) भाषण-मालाएं

(३) मरुभारती— राजस्थानी भाषाकी मासिकपत्रिका